मान कवि कृत

अनूप प्रकास

सम्पादक

राजमल बोरा

संजय बुक सेन्टर, गोलघर, वाराणसी

मान कवि कृत

अनूप प्रकास

बुन्देलखण्ड के अठारहवीं शती के उत्तरार्द्ध
के ऐतिहासिक अभियानो का दस्तावेज

सम्पादक .

राजमल बोरा

अनुक्रम

महाराजकुमार डॉ० रघुबीरसिंह

तथा

डॉ० भालचन्द्रराव तेलंग

की पावन स्मृति में
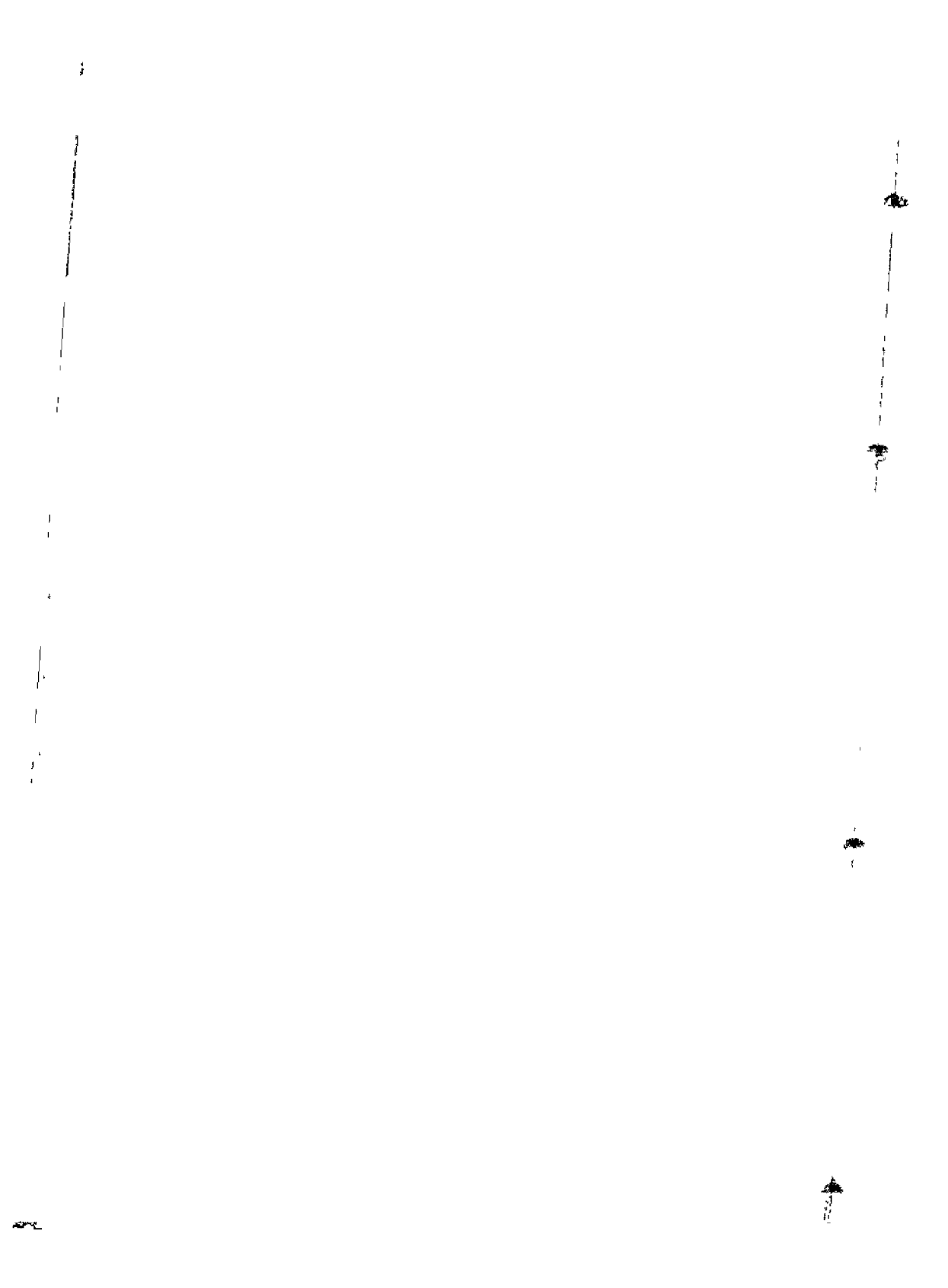
यह सम्पादन

(१)

पद्माकर कवि के वंशज डॉ० भालचन्द्रराव तेलग (१६०८ ई० से १६८४ ई०) औरंगाबाद मे रहते थे। १६४६ ई० मे वे औरगाबाद आए और तब से अन्त तक वे औरंगाबाद में रहे। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व वे यहाँ से चले गये। उनकी मृत्यु १ मार्च १६८४, गुरुवार को शाम मे ७ बजे हुई। पद्माकर कवि के वंश में पॉचवी पीढी मे उनका जन्म हुआ।

(२)

'अनूप प्रकास'--की मूल पाण्डुलिपि मुझे डॉ० तेलग ने दी। उन्होने सम्पादन करना चाहा किन्तु कर नहीं पाए। हस्तलिखित प्रति के आधार पर ही उन्होंने अनूप प्रकास की जानकारी 'पद्माकरश्री' (प्रथम संस्करण १६६६ ई0) पुस्तक में दी। 'हिम्मत बहादुर बिरुदावली' का ऐतिहासिक पर्यालोचन प्रस्तुत करते समय मैंने 'पद्माकरश्री' पुस्तक के आधार पर 'अनूप प्रकास' का परिचय दिया। उक्त ऐतिहासिक पर्यालोचन मेरी पुस्तक 'जुझौते बुन्देलो की शौर्य गाथाएँ' मे १६८२ ई० मे प्रकाशित हुआ है। उक्त पुस्तक की प्रस्तावना महाराजकुमार डॉ० रघुबीरसिह (सीतामऊ) ने लिखी है। उसमें उन्होंने लिखा-- "डॉ० राजमल बोरा ने इसी संदर्भ में हिम्मत बहादुर विषयक मान कवीन्द्र द्वारा रचित 'अनूप प्रकास' काव्य का भी उल्लेख किया है, जो अब तक अप्रकाशित है। साहित्यिको और संशोधकों के लिए यों लेखक ने यह नई जानकारी उपलब्ध की है जो सम्भवत बुन्देलखण्ड आदि क्षेत्रों के विद्वानों को ज्ञात नही है।" (पृ0 12 तथा 13)

(३)

'अनूप प्रकास' मे कुल ६५५ छन्द हैं। ग्यारह प्रकासों में यह लिखा गया है। डॉ० तेलंग साहब के पास जो प्रति थी, उसमें केवल ४५६ छन्द ही थे। उनकी प्रति अपूर्ण थी। बाद में उन्हे मालूम हुआ कि 'अनूप प्रकास' की सम्पूर्ण प्रति लन्दन मे 'इण्डिया ऑफिस' में है। उन्होंने पत्र--व्यवहार किया। इण्डिया ऑफिस, लदन मे प्रति का क्रमाक D.9.b बतलाया गया है। उक्त प्रति आने के बाद मे डॉक्टर साहब

ने सम्पादन का कार्य शुरू भी कर दिया था किन्तु अन्तिम दिनो मे आँखो की रोशनी ने धोखा दिया। उनके अन्तिम दिवस अधत्व में बीते। फिर भी वे औरो से पढवा कर सुन लेते थे और लिखवाते थे। उन्होने मुझसे कहा कि **'यह सम्पादन'** मुझ से नही होगा। इन प्रतियो को ले जाओ और सम्पादित कर छपवा देना।

(४)

जुलाई १९८३ में मैंने 'अनूप प्रकास' की हस्तलिखित प्रति के आधार पर एक लेख **'अनूप प्रकास— ऐतिहासिक पर्यालोचन'** लिखकर महाराज कुमार डॉ0 रघुबीर सिंह के पास भेजा। उन्होने लेख पढवा कर सुन लिया और बाद मे अपनी टिप्पणी के साथ डॉ0 देवीलाल पालीवाल (सम्पादक 'शोध पत्रिका' उदयपुर) को भेज दिया। वह लेख शोध पत्रिका के वर्ष ३५, अक २ मे उन्हीं दिनो मे छप गया। बाद में मैंने धीरे–धीरे मूल पाठ लिखना शुरू किया। दो बार पूरी तरह लिख लेने के बाद उसके प्रकाशन क, प्रश्न था। किसी प्रकाशक से सम्पर्क कर प्रकाशित करवाना कठिन था। अत मरुभारती के सम्पादक डॉ0 बसन्तलाल शर्मा को पत्र लिखकर पूछा कि क्या वे इस कृति को 'मरुभारती' में प्रकाशित करना चाहेगे ? उनकी ओर से अनुकूल उत्तर मिला। मैंने फिर से सारा पाठ दोहराकर लिखना शरू कर दिया और क्रमश 'मरुभारती' पिलानी को भेजने लगा। अनूप प्रकास का इस तरह प्रथम प्रकाशन मरुभारती (पिलानी) में धारावाहिक रूप मे जनवरी १९८६/जुलाई १९८६/अक्तूबर १९८६/जनवरी १९८७ तथा अप्रैल १९८७ के ८ को मे हुआ है। यह जब छपने लगा, उस समय डॉ0 तेलंग साहब नहीं थे। महाराजकुमार डॉ0 रघुबीर सिह को अनुमुद्रित प्रतियाँ भेजता रहा। इससे वे बहुत प्रसन्न हुए। उनके सम्मुख पूरा 'अनूप प्रकास छप गया था। उन्होंने अनूप प्रकास (हस्तलिखित प्रति की) की फोटो प्रति चाही। वह भी मैंने उन्हें भेज दी थी।

(५)

आज जब 'अनूप प्रकास' प्रकाशित हो रहा है तो दोनो ही विद्वान् दिवगत हो गये हैं। वे इसे पुस्तक रूप मे प्रकाशित देखकर बहुत प्रसन्न होते। मैं केवल अनुमान कर सकता हूँ। इसे प्रकाशित देखकर, मुझे इस बात का सन्तोष है कि गुरुजनो की प्रेरणा को साकार रूप दे सका हूँ।

(६)

अनूप प्रकास काव्य का ऐतिहासिक महत्त्व है। अठारहवीं शती के इतिहास को मुखरित करनेवाला यह काव्य है पानीपत की तीसरी लडाई के बाद में

(१७६१ ई0) मराठा–मुगल और इनसे सम्बन्धित जो राजनैतिक शक्तियाँ उन दिनो सघर्ष कर रही थी और जिनका केन्द्र बुन्देलखण्ड भी रहा है, उसी बुन्देलखण्ड के प्रतापी शासक अनूपसिह को केन्द्र मानकर–नायक मानकर–यह काव्य लिखा गया है। इस काव्य का उपयोग इतिहासकार भी कर सकते हैं। आगे इसका ऐतिहासिक पर्यालोचन अलग से प्रस्तुत है।

(७)

१४ नवम्बर १६६१ ई0 को प्रेस कापी तैयार हो गई थी। रीतिकालीन काव्य होने के कारण, इस ओर प्रकाशक आकृष्ट नही हुए। अभी मार्च १६६८ ई0 मे वाराणसी गया था। वहाँ पर डॉक्टर विजयपाल सिह (मेरे गुरुवर) से मैंने इस पुस्तक के सम्बन्ध मे बात की। उन्होने कहा कि रीतिकाल की कोई पुस्तक हो, मैं उसके प्रकाशन के लिए प्रयत्न करूँगा। उनके कारण ही यह पुस्तक प्रकाशित हो रही है। इति नमस्कार।

२५ मार्च १६६८ ई0 ***राजकमल बोरा***

५, मनीषा नगर, केसरसिहपुरा
औरंगाबाद (महाराष्ट्र) ४३६००५

ऐतिहासिक पर्यालोचन

(१)

[१७६१ ई0 से १७९२ ई0 तक लगभग ३१ वर्षो तक के हिम्मतबहादुर के प्रमुख अभियानो का ऐतिहासिक वर्णन इस काव्य मे है। हिम्मत बहादुर का दूसरा नाम अनूपगिरि है। अनूपगिरि के कारण काव्य का नाम **अनूपरासो है।**]

अनूपप्रकास पढने पर प्रतीत होना है कि यह रचना हिम्मतबहादुर (अनूपगिरि) के जीवनकाल मे ही लिखी गई है। प्रति मे कही पर भी रचनाकाल का उल्लेख नही है। इसी तरह कवि ने भी अपना विशेष परिचय नहीं दिया है। जगह–जगह मान कवि का उल्लेख रचियता के रूप मे हुआ है। जो प्रति उपलब्ध है, वह मूल प्रति नही है। मूल प्रति की नकल है। तेलग साहब के पास जो प्रति थी, उसका लिपिकार अलग है। लन्दन मे जो प्रति है, उसका लिपिकार अलग है। ये दोनों ही नकले अलग–अलग हैं। लन्दनवाली प्रति का अतिम अश उपलब्ध है और उसमे 'शकरलाल' नाम लिखा है। इससे यह कह सकते हैं कि शकरलाल ने यह प्रति लिखी है। तेलग साहब के पास की प्रति के लिपिकार का नाम ज्ञात नही है। हस्तलेख भिन्न होने के कारण यह मानना चाहिये कि ये दोनो प्रतियॉ अलग–अलग हैं।

(२)

हिम्मतबहादुर (अनूपगिरि) की मृत्यु १८०४ ई0 मे हुई है। हम यह मानते है कि रचना हिम्मतबहादुर के जीवन काल मे लिखी गई तो यह मानना होगा कि यह रचना १८०४ ई0 से पूर्व की है। रचना मे १७९२ ई0 मे लडे गए बनगाव युद्ध का वर्णन है। अत यह मानना होगा कि यह रचना १७९२ ई0 और १८०४ ई0 के बीच किसी समय लिखी गई है। रचना के अन्त मे लिखा है— प्रथम भाग समाप्त–दूसरा भाग है या नही। इसे प्रथम भाग लिखना स्वय इस बात का प्रमाण है कि रचना समकालीन है, लगता है द्वितीय भाग लिखा ही न गया हो। कारण यह है कि बनगाव के युद्ध के बाद का काल हिम्मतबहादुर के राज्य का काल ही है। और इस समय मे हिम्मतबहादुर का सम्बन्ध अग्रेजो से हो गया था। यह सम्बन्ध कवि को उचित लगा हो या न लगा हो, कहना कठिन है। अनूपप्रकास मे अग्रेजो के

सम्बन्ध मे कुछ भी नही लिखा गया है। यदि रचना हिम्मतबहादुर की मृत्यु के बाद की माने, तो उसमे अग्रेजो का उल्लेख होना आवश्यक हो जाता है। यह उल्लेख न होने के कारण यह मानना उचित जान पडता है कि रचना समकालीन है और बनगाव के युद्ध के तुरन्त बाद मे लिखी गई है।

(३)

अनूपप्रकास अपने समय का ऐतिहासिक दस्तावेज है। काव्य तो यह है ही किंतु इससे बढकर यह इतिहास है। इसमे समकालीन अनेक ऐतिहासिक पात्रो का उल्लेख है। हिम्मतबहादुर का सम्पर्क अपने समय की सभी प्रधान राजनीतिक शक्तियो से रहा है। इनमे मुगल, मराठे, जाट तथा अग्रेज प्रधान हैं। इनमे अग्रेजो को छोड दे तो बाकी सभी राजनीतिक शक्तियो से सम्बन्ध रखने वाले प्रधान ऐतिहासिक पात्रो का उल्लेख बुन्देलखड के सन्दर्भ मे 'अनूपप्रकास' मे हुआ है। पानीपत की तीसरी लडाई (१७६१ ई० से १७६२ ई०) तक लगभग ३१ वर्षो तक के हिम्मतबहादुर के प्रमुख अभियानो का ऐतिहासिक वर्णन काव्य मे है। अग्रेजो के साथ हिम्मतबहादुर का सम्बन्ध १७६२ ई० के बाद में ही हुआ है और इसका कोई उल्लेख रचना मे नही है। अग्रेजो ने जब हिम्मतबहादुर से सम्पक्र किया, उस समय बुन्देलखण्ड मे वह शासक हो गया था। काव्य का सम्बन्ध हिम्मतबहादुर को शासक बनाने तक ही है। इस नाते भी हम यह कह सकते हैं कि रचना समकालीन है।

(४)

अनूपप्रकास में कुल ग्यारह प्रकास हैं, वे क्रमशः इस प्रकार हैं—

१. श्रीनाथ जोगेन्द्र वर्णन
२. राजेन्द्रगिरि युद्ध वर्णन
३. राज्याभिषेक वर्णन
४. धर्मधुरधरत्व वर्णन
५. सूपाकछार युद्ध वर्णन
६. रेवारी का युद्ध वर्णन
७ गुलामकादर वध वर्णन
८ वागविलास वर्णन,
६. अर्जुनसिह समागम वर्णन
१०. सामान्य सग्राम वर्णन
११. अर्जुनसिह सुरलोक गमन वर्णन

इन ग्यारह प्रकासों क शीर्षक कवि ने प्रत्येक प्रकास के अन्त में दिये हैं

(५)

प्रथम प्रकास :— आरम्भ मे केसवदेव की वन्दना है। बाद मे वश वर्णन है। इसमे गिरि 'नामावली और उनकी बडाई का वर्णन है। नारायणनाथ के शिष्य ध्याननाथ थे और ध्याननाथ के शिष्य राजेन्द्र गिरि बतलाए गए हैं। राजेन्द्रगिरि अपने गुरु की सेवा मे लगे रहते थे। ध्याननाथ जब ध्यान करते, उस समय राजेन्द्रगिरि द्वारपाल के रूप मे उनकी सेवा करते। एक बार नारायणनाथ अपने शिष्य ध्याननाथ से मिलने आये। राजेन्द्रगिरि ने उन्हे द्वार पर रोक दिया। बाद में जब गुरु–शिष्य की भेट हुई तो उस समय नारायण ने राजेन्द्र गिरि की गुरु–भक्ति की प्रशसा की और यह भविष्यवाणी की कि यह राजा होगा। इसका शासन और लोग स्वीकार करेंगे। बाद मे गुरु की आज्ञा प्राप्त कर इन्होने अपनी सेना एकत्रित की। नाथजी के ये परम शिष्य रहे और उनकी आज्ञा का पालन करते हुए ही इन्होने अपने राजनैतिक जीवन का आरम्भ किया। कहते हैं गुरु का वरदान इन्हें प्राप्त हो गया था। गुरु की भविष्यवाणी सच निकली।

(६)

राजेन्द्रगिरि का सम्पर्क पेशवो से हुआ। पेशवो ने राजेन्द्रगिरि से प्रसन्न होकर उसे झॉसी के निकट **'मोठ'** के पास की जमीन जागीर मे दी। पक्तियॉ इस प्रकार हैं —

> **कुछ काल मैं बल पाइ। दल पेसवान पठाइ।**
> **तिन करी देषि सुरीत। राजेन्द्रगिरि सो प्रीत।।३६।।**
> **झॉसी लगाइ जिमीन। तिन प्रीत सौ लिष दीन।**
> **भुव 'मोठ' के जो तीर। दस सहस की जागीर।।३७।।**[१]

जागीर प्राप्त होने के बाद ये अपनी जागीर की व्यवस्था करते और गुरु की सेवा भी करते। अन्त तक इन्होने गुरु की सेवा की है।

प्रथम प्रकास मे ऐतिहासिक दृष्टि से पेशवो के द्वारा राजेन्द्रगिरि को 'मोठ' की दस हजार की जागीर देने का उल्लेख हुआ है।

दूसरा प्रकास :— इस प्रकास मे राजा राजेन्द्रगिरि के युद्ध का वर्णन है। मराठों के बुन्देलखण्ड के प्रतिनिधि सरदार नारोशकर से राजेन्द्रगिरि का युद्ध **'मोठ'** की जागीर को लेकर हुआ है। नारोशकर ने बुन्देलखड मे खोई हुई भूमि पर पुन अधिकार करना चाहा। उसने **'मोठ'** की जागीर माग ली। लिखा है—

---

१ द्रष्टव्य शुजाउद्दौला भाग १ आशीर्वादीलाल वाल्यूम—१ पृ० १३८ अंग्रेजी पुस्तक

भुव मागी नारुसकर ने। न दई भट भूप भयंकर ने।
करिकै बहुतै श्रम भूमि लई। अडपै अब क्यों वह जाइ दई।।४६।।
इन तेज भरौ जब ज्वाब दियौ। तब नारुवसंकर कोप कियो।
दल सौ गढ मोठ सु गेर लयौ। रन सोरव को रचि आनि छयौ।।५०।।

युद्ध के परिणाम मे लिखा है—

अरि कौ तप तेज घटाय दयौ। रन मैं मुंह मार हटाइ दयौ।
तब नारुवसंकर दीन भयौ। दुज लौ चलि आसिष आइ दयौ।।५०।।

वह भुम्मि सबै धर सकल्पी। पुनि दूसर बात नहीं जल्पी।
दुज कौ करि पुन्य सु मोठ दई। करि बाहिर जाहिर क्रत्य लई।।६०।।

दूसरे प्रकास मे रुहेलो के साथ राजेन्द्रगिरि के युद्धो का वर्णन भी है। जमुना और गगा के किनारे तीर्थयात्रा हेतु राजेन्द्र गिरि जाते रहते थे। गगा के किनारे उनका डेरा था। उसी समय कालेषा (बगश रुहेला सेनानायक) का आक्रमण हुआ। राजेन्द्रगिरि ने बडी वीरता से अभियान किया। अवध मे नवाब सफदरजग थे और उनका रुहेलों से युद्ध होता रहता था। सफदरजग की ओर से अनेक सरदार और सेनानायक थे। इनमे वजीर मनसूर अली, आगा कुलीषा तथा नवाब बकउल्लाषा के नामो का उल्लेख अनूपप्रकास मे है। इस युद्ध वर्णन मे जो पक्ति बार–बार दोहराई गई है, वह है—

रुप्यौ राजेन्द्र रन मडन। षलन सिर षोपड़ी षंडन।।

अन्त मे अरि का सिर काट ही लिया—

मत्ति–मत्ति मसु तेग तमंकि झिमिझिमियासु कालेषान सौं।
इम भिरेव नृप राजेन्द्रगिरि मघवान जिमि बलवान सौं।।
तमकाई तुरीय उमड अरि को मुड काटि क्रपान सौं।
अहमद्द को सु हरौल हनि बिच लाइ दल घमसान सौं।।७६।।

इस युद्ध के फलस्वरूप सफ़दरजंग बहुत प्रसन्न हुए। राजेन्द्रगिरि ने ऐसे अनेक अभियानो मे **अहमद बगस** के दल को परास्त किया है। लिखा है—

दलमलत बगस के प्रबल बल हार हारन के किये।
हनि–हनि कुमाऊँ के पहारउ मैडवै डसवै दियै।।
इत धरन मै धज सौ करायौ अमल येक उजीर को।
लषि साह–चाह भयो दिसी को गमन न्रप रनधीर को।।८१।।

परिणाम यह हुआ कि ——— राजेन्द्रगिरि से बहुत प्रसन्न हुए सात

हजारी का मनसब दिया, **सारगपुर, हरिद्वार** आदि ग्यारह परगने जागीर मे दिये **मनसूरअली** के साथ भाई का नाता हुआ। **सफदरजग** ने चॉदी की नौबत बजाने की अनुमति भी **राजेन्द्रगिरि** को दी। इस नौबत के नाद से शत्रुओ का दल डगमगा जाता था।

जदुनाथ सरकार ने 'मुगल साम्राज्य का पतन' (भाग–१) मे इमाद–उल–सआदत, पृ0 ६४ और सियार–उल–मुतखारीन, जिल्द ३, पृ0 ७४ के आधार पर लिखा है।

"सफदरजग राजेन्द्रगिरि की किसी भी बात को अस्वीकार नही करता था। इस हिन्दू साधु को शाही दीवान ने यह आज्ञा दे रखी थी कि उसके नगाडे घोडो पर बजा करे। (यह सम्मान मुगलो के सर्वोच्च मनसबदारों को ही प्राप्त था) और वह सफदरजग को नौकर की भॉति सलाम न करके एक महन्त की भॉति आशीर्वाद दे। लोगों मे प्रसिद्ध था कि वह जादूगर है और ऐसा माना जाता था कि तलवार व गोले का उस पर कोई असर नही हो सकता था। [२]

इस सदर्भ मे 'अनूप प्रकास' मे भी नौबत का उल्लेख मिलता है—

> **"तँह पातसाह उछाह भरि बगसीस कर तिहि तर्पियं।**
> **मनसिब हप्त हजारियात तरवारि या लष्षि अर्पिय।।**
> **मनि मडि माहि को निसान दिसान माही जगमगै।**
> **नवनाद नौवद रजित की धुनि सुनत षल दल डगमगै।। ८२।।**

(९)

तीसरा प्रकास :— तीसरे प्रकास में राजेन्द्रगिरि की मृत्यु का उल्लेख है और उसके बाद अनूपगिरि (हिम्मतबहादुर) के शासक बनने तथा राज्याभिषेक का वर्णन है। सफदरजग की वजारत जब खतरे मे आई, तो उसने दिल्ली के बादशाह का विरोध किया। दिल्ली के अभियान मे जाट और राजेन्द्रगिरि सफदरजग के सहायक थे। सरकार ने तारीखे अहमदशाही, पृ0 ५६ ऐ–के आधार पर लिखा है—

"दिल्ली पर गोलाबारी करने मे असफल होने के नौ दिन बाद सफदरजग पर एक भारी संकट आया। १४ जून १७५३ ई0 सूर्यास्त से लगभग ढाई घण्टे पहले उसने सारी शाही खाइयो पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध का सारा भार जाटो और पदच्युत वजीर किजिलबाश सवारो पर था। शाही दल के बदख्शियो और मराठो को भारी क्षति उठानी पडी किन्तु इमाद स्वय घोडे पर सवार होकर ईदगाह से खाइयो

---

२. मुगल साम्राज्य का पतन जदुनाथ सरकार भाग १ अनुवादक मथुरालाल शर्मा पृ २७५

पर गया और अपने उदाहरण से सेनिको को प्रोत्साहित किया, अन्त मे
को पीछे धकेल दिया और विजयी शाही सेना अर्धरात्रि मे अपने डेरो पर लौट आई।
इसी सायं को जब राजेन्द्रगिरि काली पहाडी पर आक्रमण कर रहा था, तो उसको
एक गोली लगी और दूसरे दिन प्रात उसकी मृत्यु हो गई। राजेन्द्रगिरि की मृत्यु से
सफदरजग का दिल टूट गया और इसके बाद उसने स्वयं किसी भी युद्ध मे भाग
नहीं लिया। इस निर्भीक साधु की मृत्यु के बाद अब सफदरजग के प्रदेश मे ऐसा
कोई व्यक्ति नही रहा, जिसमे युद्ध के लिए जोश हो।[३]

अनूप प्रकास— मे राजेन्द्रगिरि की मृत्यु का उल्लेख है, किन्तु जिस युद्ध मे उसकी मृत्यु हुई, उसका उल्लेख नही है। इतना अवश्य लिखा है--बादशाह ने सफदरजग की ओर से आखे मोड ली, (वजारत छीन ली, यह अर्थ लेना चाहिए) इससे सफदरजग दु खी हुए। उस समय राजेन्द्रगिरि ने स्वामी धर्म का पालन किया और सफदरजग की सहायता की। उस समय जो युद्ध हुआ उसमें शत्रुओ का सहार किया और अपने प्राण स्वामी के कार्य के लिये दिये, पक्तियाँ इस प्रकार हैं—

सुनि साहि लोचन भंग, सबदरजग उर अकुलाइकै।
दौरि सु दिल दुष पाइलै दल स्वामिधर्म धराइकै।। ८६।।
राजेन्द्रगिरि नृप सुभट मोट हरौल तहँ रन मैं भये।
औरै ताहा करिव सगर सत्रु मार मिटा दये।। ८७।।

★ ★ ★

मन दियब स्वामि—धर्म मै तन दियव रचि रनधार मै।
जस दियौ सबदरजंग कौ सिर दयौ हर के हार मै।। ६३।।
लषि स्वामि—धर्म उजीर सबदरजग त्यौं सुनि साह कै।
राजेन्द्रगिर के सुवन जुग राजेन्द्र किय चित चाह कै।। ६४।।
उमरावगिर अनूपगिर जुग भ्रात जाहिर जगत मैं।
जागीर दस गुन दई हफ्त हजारिया कहिं भक्त मैं।। ६५।।

राजेन्द्रगिरि की मृत्यु के बाद सफदरजग ने उसके दोनो शिष्यो को (दोनो भाई—भाई थे) राजेन्द्रगिरि के पुत्र मान कर उत्तराधिकारी बनाया और इनके साथ भी वही सम्बन्ध रखा, अनूप प्रकाश मे उमरावगिरि और अनूपगिरि दोनो को 'सुवन' (पुत्र) लिखा गया है किन्तु वस्तुत वे पुत्र न होकर शिष्य थे, जिन्हे वह अपने पुत्र के समान मानता था, सफदरजग ने स्वय इन दोनो का टीका किया, राजेन्द्रगिरि की मृत्यु ४ जून १७५३ ई0 को हुई, उसके तुरन्त बाद मे वह टीका सम्पन्न हुआ, स्वय सफदरजग की मृत्यु अगले ही वर्ष १७ अक्तूबर १७५४ ई0 को हुई।

---

३ मुगल का पतन भाग १ जदुनाथ अनुवादक शर्मा पृ २७४

तीसरे प्रकास का शीर्षक ही 'राज्याभिषेक' है, अत राज्याभिषेक का वर्णन विस्तार से किया गया है, छत्तीसो कुल की चतुरगी सेना का वर्णन है, प्रधान रूप से हाडा, सीसोदिया, राठौर, पढियार, जेतवार, पमार, चाहुवान, गहिरवार, सोमवसी, चदेल खीची, रावत, सूर्यवशी, रघुवशी, गुर्जर आदि नाम मिलते हैं। केवल वशो के नाम मिलते हैं किसी शासक का नाम नही मिलता, वह सब भुजगी एव द्रुतविलबित छन्दो मे है और पृथ्वीराज रासो की पद्धति से लिखे हुए हैं, उदाहरण के लिए—

सजै वीरता ठौर राठौर ऐसे।
दु चदं दपै चंद जैचंद जैसे।।
सजे वीर बानैत भूप सुलंषी।
महै शत्रु कौं ज्यौं मनौ बाज पषी।।१०२।।

छत्तीस कुलो के राजा लोग सब अपनी सेनाओ को सजाए डेरे पर पहुँचे। विधिवत् गौरी–गणेश की पूजा हुई। मंगल कार्य हुआ। द्विजो को दान दिया गया। कवियो को हाथी मिले और भी सब ठाट विधिवत् हुए। जब सारा समाज एकत्रित हुआ, उस समय सब के सामने सफदरजंग ने अनूपगिरि का टीका किया—

सकल भूप समाज सुहाइय दल दरेरन डेरन आइयं।
मुदित सप्दरजंग उजीरनै सहित साह तनै रनधीरनै।।११४।।
तिलक ता दिन किन्हिव राज को सकल साहन वाहन साज कौ।
पुनि हरौल थप्यौ निज फौज कौ नृप अनूपगिरि कहि मौज कौ।।११५।।

इसके बाद दान–वर्णन है, तीर्थों का वर्णन है, कवियो के सम्मान का वर्णन है और यह सब पृथ्वीराजरासो की पद्धति से मेल खाता है। इतना होने पर भी कल्पित नाम एक भी नहीं है। अनूप प्रकास में जो नाम आये हैं, वे ऐतिहासिक ही हैं, वशावलियो के नाम ही नाम हैं किन्तु राजा का नाम नही है। रासो की पद्धति से इस काव्य का सृजन हुआ है किन्तु तथ्य समकालीन है। अनूप प्रकास का रचयिता **मानकवि** धार्मिक वृत्ति का है और वह चाहता है कि हिन्दू धर्म की पद्धति के अनुसार राजकाज हो। अनूपगिरि ने हिन्दूधर्म की रक्षा के लिए कार्य किया है, ऐसा कवि का विश्वास है।

(१०)

चौथा प्रकास :— सफदरजग ने अनूपगिरि को अपने हरौल में रख लिया था। समय–समय पर वह सैनिक अभियानो मे जाता और स्वामी–धर्म का पालन किया करता था। कुछ दिन बाद सफदरजग की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र शुजाउद्दौला नवाब हुआ। शुजाउद्दौला के साथ वही सम्बन्ध रखा जो सफदरजग के साथ रहा था।

स्वर्ग को कुछ काल पीछे गयो तन तज वीर
तासु तास सुजाउद्दौला भौ नवाब वजीर।।
प्रथम ते दसगुनी तेऊ लगे मानन प्रीत।
वह हरौली मालकी वह वही भाइप रीत।।१३४।।

पानीपत १७६१ ई0 :— अनूप प्रकास मे पानीपत युद्ध का वर्णन है। यह वर्णन राजनीतिक रूप में नही, अपितु धार्मिक रूप मे है। चौथे प्रकास का शीर्षक धर्मधुरन्धरत्व वर्णन–' है। पानीपत के युद्ध मे मराठो का सहार हुआ और उनके प्रमुख सेनापति मारे गये। स्वय सदाशिव भाऊ और विश्वासराव भी मारे गये। युद्ध के लिए दक्षिण से आते हुए दल का वर्णन है और इसी तरह युद्ध के पश्चात् मराठो के सहार पर उनकी वीरगति का वर्णन किया गया है। युद्ध कैसे हुआ ? क्यों हुआ ? किन स्थानो पर हुआ, यह सब कुछ नहीं है।

पानीपत के युद्ध मे शुजाउद्दौला मराठो के विरोध मे थे। अनूपगिरि स्वय शजाउद्दौला के पक्ष में थे। इस नाते अनूपगिरि को शुजाउद्दौला के समर्थन में लड़ना पडा है।

मान कवि मराठो के प्रति सहानुभूति का भाव रखता है, पेशवो के प्रति कवि के मन में सम्मान है, सम्मान की यह भावना कवि ने अनूपगिरि में भी दिखलाई है पानीपत के युद्ध मे दक्षिण के दल के आगमन का वर्णन इस प्रकार है—

कछुक काल गये सु गगा तीर पै बरजोर।
लक्षि–लक्षिन दक्षि–दक्षिन के ढिले दल घोर ।।
जया आपा, आप दत्ताजी पटैल सुदेस।
जुरे जनकोजी तहाँ पुनि रामचंद गनेस।।१३५।।
इन्हीं आदि गजादि दल जुत सिमिटि सब सिरदार।
तेजी तपती जम कि जपती लगे कर्न उदार।
रुद्र रूप अनूपगिरि तहं भूप मन सिरगौर।
सुनत सहसा साहसी तिन पै करी उठ दौर।।१३६।।
तुबक तीरन मार वीरन सुभट मीरन झेल।
सेल्ह ठेलनि कहि उठेलनि वर्ग वेलनि पेल।।
ग्राम ग्रामनि मैं करै संग्राम कै इक बेर।
प्रजा रंजन गर्द गंजन कियौ सत्रुन केर।।१३७।।

मराठो का दल जब पहुँच गया और जपती की ओर बढा तो उसका विरोध हुआ और शुजाउद्दौला की ओर से अनूपगिरि और उसका दल लडता रहा है, अवध मे मराठो के प्रवेश को रोका गया।

पानीपत के लिये मराठो का दल लगातार दिल्ली की ओर बढता रहा है, उस दल मे सदाशिवराज भाऊ और विश्वासराव थे—

दल दष्षिनन के रन षिलाइहि लाइ फेर मिलाइय।
भाउ बली बिस्वासराइ जु ताहि पाछे आइयं।। १३८।।
दल दीह दष्षिन देखियै।
जनु उदधि उमडिउ देखियै।।
जह ग्राह गाइकबार लौ।
बनि बाघ वीर बिसार लौ।। १५१।।
पुट भेद पटल पटैल से।
निबालक रजह सैल से।
हुर मकर हलकर से रहै।
जलधर धार करौल है।। १५२।।

सेनाओ का वर्णन वहुत विस्तार से किया गया है, मुगलो के दल का भी (जो मराठो के विरोध मे रहा है) वर्णन इसी तरह का है, किन्तु भाऊ और विश्वासराव के प्रति जो भावनाये कवि ने व्यक्त की है, वे विशेष उल्लेखनीय हैं।

भाऊ बली विश्वासरा।
जूझे बली बलवतरा।।
समसेर वीर बहादुर।
कटि छत्र धर्मा की धुर।। १६१।।
जूझे सबै सिरदार है।
नामी जे वीर उदार है।।
विश्वासरा जब जूझिगे।
सुरलोक पंथ अरुझगे।। १६२।।

इस समय युद्ध मे जो मारे गये, इनका विधिवत् संस्कार होना चाहिये और जो बच गये हैं, उनकी रक्षा की आवश्यकता थी, इस कार्य मे शुजाउद्दौला ने सहायता की है, अनूपगिरि इसमे सब से आगे थे।

जदुनाथ सरकार ने लिखा है–

"रणक्षेत्र में जिन लोगों ने वीरगति प्राप्त की उनमे पेशवा का ज्येष्ठ पुत्र विश्वासराव भी था, तीन दिन तक दुर्रानी सिपाहियों ने उसका शव अपने पास रखा, वे हल्ला कर रहे थे कि वे उसमे भूसा भरकर उसे अपने देश ले जावेंगे, जो हिन्दुओं के बादशाह पर विजय प्राप्त करने का स्मारक रहेगा। परन्तु शुजाउद्दौला की प्रार्थना पर अन्त में उन्होंने इसे दाह के लिये उसके ब्राह्मणों को दे दिया भाऊ का

धड मुर्दों के ढेर मे से दो दिन बाद निकाला गया और उसका सिर तीसरे दिन एक दुर्रानी सवार के पास मिला, इनका अलग–अलग समय पर विधिपूर्वक सस्कार किया गया।[8]

अनूपप्रकास मे विश्वासराव के दाह–सस्कार का वर्णन है, पेशवो के प्रति गौरव के उद्गार भी कवि ने व्यक्त किये हैं—

विश्वासरा की देह कौ।
करी पालखी करि ने कौ।
नृप बैन सुभटन सोक है।
उर ओक सोक महा गहै।।१६९।।
ऐ पेसवा बलवत्त है।
जिन किये पुन्य अनंत है।।
भुव धर्म कर्म सु थापियं।
कलि को अधर्म उथापियं।।१७०।।

* * *

इम गुन कलप अलाप कै।
भरि नयन नीर विलाप कै।।
तहँ चिता चदन की रची।
सिगरे सुगंधन सौ सची।।१७५।।
अन्हवाइ पट पहिराइ कै।
तिल चंदनादि लगाइ कै।।
धरि चिता दक्खिन नाह की।
कीन्ही क्रिया सब दाह की।।१७६।।
जूझे जिते सरदार है।
नामी जे वीर उदार है।।
जिनकी सु दाह क्रिया करी।
जिह भाँत वेदन मैं धरी।।१७७।।

* * *

निज स्वामिधर्म सुधारि कै।
पुनि हिन्दु धर्म सम्हारि कै।।
करि छत्रपन की औधि कौ।
चलि सदल आये औधि कौ।।१७९।।

८ मुगल का पतन भाग २, जदुनाथ सरकार अनुवादक शर्मा पृ २३४ २३५

चौथे प्रकास का समापन इसी तरह हुआ है, स्वामी—धर्म की रक्षा करते हुए अनूपगिरि ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये कार्य किया है। इस प्रकास का नाम 'धर्मधुरधरत्व'' रखने के पीछे प्रयोजन यह है कि स्वामी धर्म का निर्वाह करते हुए ही अनूपगिरि ने क्षत्रिय धर्म का पालन किया और हिन्दूधर्म की रीत का निर्वाह किया।

(१२)

पाचवाँ प्रकास :— इस प्रकास मे ''सूपा कछार युद्ध'' का वर्णन है, यह युद्ध मराठो के विरोध मे लडा गया है।

अनूपगिरि ने जाट राजा जवाहरसिह के साथ संधि की। जाट राजा अनूपगिरि को लेकर अपने धाम भरतपुर गया, वहाँ पर उसने उसे बडे सम्मान और प्रेम से अपने पास रखा। एकसठ वैरागी ने कुछ दिन बाद जवाहरसिह के कान भर दिये, जवाहरसिह बिगड गया। यकायक उसने रात्रि में ही जब नागा गुसाई असावधान थे, आक्रमण कर दिया। सजग होकर नागाओं ने जवाहरसिह की सेना का सामना किया घमासान युद्ध हुआ, इस युद्ध में अनूपगिरि की ओर से कुँवर साहजादगिर वीरगति को प्राप्त हुआ, कहा है—

रन ठट्ट जट्टनि जुट्टिय।
तिल—तिल सु तन रन टुट्टियं।।२०३।।
रूपि कुँवर इमि रन साज मैं।
सिर दियव तिह गुर काज मैं।।२०४।।
संगर कर सहजादगिर दियव स्वामि हित सीस।
सीझ गिरीस असीस दै कर्‌यौ गगन को ईस।।२०५।।

अनूपगिरि का जाटो के साथ जो युद्ध हुआ, इस सम्बन्ध मे सरकार ने लिखा है—

''जब जवाहर को सन्देह हुआ। (दिसम्बर १७६६ ई0) के उसके गुसाई सेनापति चुपके से मराठों के पक्ष में हो गये हैं तब उसने २३ और २४ दिसम्बर के बीच की रात मे गुसाइयो के डेरे पर आक्रमण कर दिया। वास्तव में गुसाई लोग दादा से यह प्रार्थना कर रहे थे कि वह उन्हें वेतन देकर पास रख ले, इस हमले मे गुसाइयो के छ सौ आदमी मारे गये परन्तु उमरावगिरि, अनूपगिरि और मिरजागिरि तीनों तीन सौ सवारों के साथ बचकर चम्बल पार मराठों के डेरे मे पहुँच गये।' [५]

जाट राजा के साथ इस युद्ध के बाद **''सूपा कछार का युद्ध''** का वर्णन

५ मुगल का पतन, भाग—२, जदुनाथ सरकार अनुवादक शर्मा पृ ३१९

है। मराठो के साथ हुए युद्धो मे यह प्रबल युद्ध है और इसका वर्णन कवि ने विस्तार से किया है, इतिहास की पुस्तकों मे इस युद्ध का विशेष विवरण नहीं मिलता, मान कवि ने इस युद्ध मे भाग लेने वाले अनेक सेनानायकों के नाम दिये हैं और उनकी वीरता को सराहा है। विशेष रूप से सबसुखराय के सेनापतित्व की सराहना की गई है। सूपा कछार के युद्ध का कारण प्रस्तुत करते हुए कवि ने लिखा है—

इत नृपदेव देव सहाइ। जिल्ले ग्वालियर के जाइ।
तहँ रघुनाथराइ—प्रचंड। जाहिर पेसवा बलिबड।।२०८।।
तानै महंतजी इहि नाम। पठयौ सैंधिया बलधाम।
करिकै सूधवडौ सनेह। प्रभु बुलवाइयौ हित ऐह।।२०६।।
सूपा कछार पुनि भाडेर। ऐरछ गैरह गैर।
कैइक परगने तिह तीर। दीन्हे नेह कर जागीर।।२१०।।
तह सूपा कछार सुदेस। नृप के परे डेरा बेस।
सत्रुन सुमिर पहिलौ बैर। कीन्हो जग को तंह घेर।।२११।।
बालाजी गोविन्द कै, कृस्नाजी तहं ऐन।
जुर पडित गाजी गजे, साजी साजी सैन।।२१२।।

रघुनाथराय बालाजी गोविन्द का पुत्र था। पेशवों की ओर से बुन्देलखण्ड में बालाजी गोविन्द की नियुक्ति हुई थी। वह पेशवों के हितों की रक्षा बुन्देलखण्ड में करता था। बालाजी गोविन्द को पेशवो का बल प्राप्त था। उसकी सहायता के लिए मराठा सेना थी। सूपा कछार पर राजा अनूपगिरि का डेरा था। माडेर, ऐरछ आदि परगनों को लेकर विवाद हुआ और पुराना वैर था ही। दोनो दलो मे "सूपा कछार" मे घनघोर युद्ध हुआ। इस युद्ध मे राजा अनूपगिरि की ओर से लड़ने वालों मे सबसुखराइ, ठाकुर सरूपसिह, कानूनगोवडो, कंसराज सेंगर, भोपालसिह कछवाहा, दलपतिराय परिहार, हाजीषान, उमरावसिह परिहार, राजा नोनेराय, कीरतसिह चौहान, रामसिह गौर, मीर फाजिल बेग, बालसिह, वासतराय, उमरावसिह बुदेल, नडराय तिमगिरि, सरपटगिर, राघौगिरि, मौहरिगिर, दर्गागिर, सीतलगिर गनेसगिर, मिरचगिर कृष्नगिर, मेरलगिर—आदि अनेक हैं। इनमे कुछ तो वीरगति को प्राप्त हुए। उदाहरण के लिये—

चटक्यौं बालसिंह तुरंग। बहसा बहस कीन्हीं जंग।।२३६।।
अत्रन अरिन सिर को टोक। जस कर जूझिनी सुरलोक।।
को कहि सकहि गुन तजबीज। सब सुखराय जासु भानीज।।२४०।।

★ ★ ★

सबसुषराय को तहँ भाय। पिलि वासतराय सु आय।।
सत्रन मार अत्रन वीर तन तज गइय सुरपति तीर २४२

बालसिह .... ही नहीं, सोहरगिर, कृस्नगिर आदि और भी जूझ ग हैं। कहा है—

रन अनूपगिरि भूप की सहय को समसेर।
हेरि–हेरि अरि घेरि कै सेर किये जिहि जेर।।२५४।।

सबसुषराय सब मे आगे रहे हैं—

रघुपति अग्र जिमि हनुमंत। भंजत अरिन को बलवंत।।
लिपट फिरत नृप के अग्र। सबसुखराय वीर उदग्र।।२६१।।
नट से नटत झपटत मेल। दपटत दुवन बग्गन षेल।।
पटकत अरिन झटकत पाय। पटकत सबन सबसुखराय।।२६२।।

मराठों की ओर से लडने वालो के नाम इस तुलना मे कम मिलते हैं। जिनके नाम मिलते हैं, वे इस प्रकार हैं—

उत दल दक्खिनी सिरमौर। कृस्नाजी पिल्यो कटि हौर।
तमकौ तिमि बुलाकीराम। बढ़ि दिवान जुद्ध सनाम।।२३०।।
पंडत भोजराज झमंकि। आयो तुरीय तेज तमकि।
जालिम जनार्दन वीर। रन मे रचित भौ रनधीर।।२३१।।
कहँ लौ कहौं नाम अपार। उमडे सुभट पंच हजार।

ठीक भी तो है, मान कवि अनूपगिरि की सेना से जितना परिचित था उतना मराठो की सेना से नहीं, उसने गिनती के कुछ प्रमुख नाम ही लिये हैं। 'सूपा कछार' के यद्ध का निर्णय क्या हुआ। वह कुछ लिखा नहीं गया है, इतना ही कहा गया कि युद्ध मे शत्रु को परास्त किया।

(१३)

छठा प्रकास :— सूपा कछार का युद्ध किस समय लडा गया, इसका कोई उल्लेख अनूपप्रकास मे नही है, कवि ने तिथि का उल्लेख नही किया है। घटनाये क्रम से लिख दी हैं। सूपा–कछार–युद्ध के बाद राजा अनूपगिरि शुजाउद्दौला के पास गये। यह युद्ध शुजाउद्दौला की मृत्यु से पूर्व हुआ है। शुजाउद्दौला की मृत्यु २६ जनवरी १७७५ ई० को हुई है।[६] इसी तरह यह युद्ध २६ अप्रैल १७७१ के बाद मे ही लडा गया होगा। क्योंकि इस युद्ध मे कृष्णाजी का नाम आया है। रामचन्द्र गनेश के स्थान पर कृष्णाजी की नियुक्ति १७७१ ई० को हुई है। रामचन्द्र गनेश

---

६. शुजाउद्दौला आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव वाल्यूम–२ पृ २८६

ााद दक्षिण लौट गया था। पेशवो के हितो की रक्षा, इस समय कृष्णाजी क ।[७] छठे प्रकास मे 'सूपा-कछार-युद्ध' के तुरन्त बाद का वर्णन है। इस युद्ध अनूपगिरि अवध की ओर प्रस्थान कर गये। जब शुजाउद्दौला को यह समाचा कछार-युद्ध का) मिला तो, वह स्वय लखनऊ शहर से बाहर आया औ हिम्मतबहादुर का भव्य स्वागत किया--

यह सुन सुजातदौला नवाब। लघु सैन लीन बड सैन आव।
कर बहुत रीझ पुनियत लिषाव। निज भले दीन मानस पठाय।।२७३।।
कढि कोस लषनहु तै उमाह। चलि मुदित अग्र दै लिअव ताह।
उतर्‍यौ गऔंद तजि, प्रीत लीन। उर सौ समेटि उस में कीन।।२७५।।
ताती वियोग छाती जुड़ाइ। तहँ लिऐ सथ्थ हाथी चढाइ।
चढ नृप नवाब ऐकहि गयेंद। पुर चले हसत बिलसत अनंद।।२७६।।

इसके बाद नवाब ने अतर्वेद की (बुन्देलखण्ड) भूमि की रक्षा का भा रि को सौंप दिया। दक्षिन के दल उमड-उमड कर आ रहे थे। उनक को रोकना था—

भुव सकल अंतरवेद की सौपी सुनै षल डगमगे।
तिम देस दष्षिन के दिखै जे उमैड मैडे सौ लगे।।२७६।।

इसके बाद नवाब की सहायता से बुन्देलखण्ड पर अभियान लखा है—

झाँसी झपेट मकोर कै। बल सहित बाँह तोरे कै।
छिति छीन दषिन सौ लडी। लिष बगस वीरन को दई।।283।।
छत्री सु राना छत्रपति नृप जाट बसन छत्रपति।
बलबंड ताहि उडिकै जस मंड छंडिव डडि कै।।284।।

इसके पश्चात् राजा अनूपगिरि जब गगा-स्नान के लिये गये थे, तो वहं ना कि शुजाउद्दौला की मृत्यु हो गई है। इसके बाद आसफुद्दौला नवाब हुए ने राजा अनूपगिरि को लखनऊ बुलाया और सम्मान किया।

इसके बाद मे रेवाडी युद्ध का वर्णन इस युद्ध के सम्बन्ध मे जदुनाथ ने लिखा है —

४ जनवरी १७८८ को दिल्ली से रवाना होकर शाहआलम रेवाडी से छ क्षिन मे भरवास पहुँचा और यहाँ उस महीने की २८ तारीख को जयपुर के

का पत भाग २ सरकार अनुवादक मथुरालाल शर्मा पृ २२ से

दूत हिम्मतबहादुर और दौलतराम हल्दिया और मारवाड का बख्शी भीमसिह उसकी सेवा में उपस्थित हुए। जयपुर का राजा सर्वप्रथम ३ फरवरी को दरबार में आया। यहाँ दोनो दरबारो मे एक मास तक डेरे लगे रहे। सम्राट राजा से वह खिराज मागता रहा जिसका उसने वचन दिया था और राजा यह उत्तर देता रहा कि महादजी सिन्धिया ने उसके राज्य को नष्ट कर डाला है और उसके पास देने को कोई रुपया नहीं है, इस व्यर्थ बातचीत के बाद प्रतापसिंह ने सहर्ष विदा ले ली और उसको पच्चीस हजार रुपये की हुडी दे दी। अब शाह आलम ने प्रयत्न किया कि नजफकुली खां से हिसाब साफ हो जाय। स्वय उसकी स्थिति इस समय नाजुक थी ... इस समय नजफकुली खां (रेवाडी मे दो मील उत्तर की ओर) गोकुलगढ की प्राचीर के नीचे डेरा डाले हुए था। उसके पास भी उतनी ही सेना थी जितनी उसके स्वामी के पास। परन्तु उसने उस जिले को और उसके किलो को वापस देने से यहाँ तक कि बादशाह के पास उपस्थित होने से हठपूर्वक इनकार किया। उल्टा उसने यह दावा किया कि मुख्तियार के पद पर उसका अधिकार है, क्योकि वही मिर्जा नजफ खा का दत्तक पुत्र है। उसने सात लाख की वार्षिक आमदनी वाली जागीरों का भी दावा किया जो उस पद के साथ लगी हुई थी।[८]

ऐसी स्थिति में शाहआलम ने विद्रोह के साथ युद्ध करना आवश्यक समझा। इस समय जो युद्ध हुआ, वह रेवाडी का युद्ध है। सरकार आगे लिखते हैं—

"यद्यपि वह (नजफ कुलीखा) स्वयं बडा मनमौजी और शराबी था तथापि उसने सुस्त और निद्रालु मुगलियों पर १२ मार्च की रात मे आक्रमण कर दिया और बडा तहलका मचा दिया, शाह मीर खा, इतिकादुदौला और कुछ छोटे अफसर मारे गये, उसके सिक्ख साथियो ने सम्राट के निवास–शिविर तक जा हमला किया परन्तु हिम्मतबहादुर ने इनको खाइयो मे खदेड भगाया।"[९]

अनूपप्रकास में लिखा है—

प्रबल गुलाम निजब कल्लीखां उमढ़ साहि पै आयौ।।२६३।।
नौन हरामी अषत्यारी करि त्यारी कपू भारी।
गोकुल गहवाव हुमकान जुरिन हित रूप्यौ रिवारी।।२६४।।

* * *

तहं अनूपगिरि भूप सुनत ही भए उकठि चढ़ि ठाढे।
स्वामि धरम मैं कमर बाधि कै समर लेत मन बाढ़े।।२६५।।

---

८. मुगल साम्राज्य का पतन भाग–३, जदुनाथ सरकार, अनुवादक मथुरालाल शर्मा पृ २८७
९. मुगल का पतन भाग–३, जदुनाथ अनुवादक शर्मा पृ २८८

इस युद्ध का वर्णन बहुत विस्तार से मिलता है, इसमे सबसुखराय भी राजा अनूपगिरि के साथ थे।

भारी सबसुराय रजधारी दल अगवान।
रचिव रिवारी बीच रन झुकि झारी किरवान।। ३०३।।

अनूपगिरि की जीत हुई—

निजमकुलीखां की षुली डुली अनी डगमग्ग।
इन अनूपगिरि भूप के लई जीत जगमग्गि।। ३२३।।

रेवाडी के युद्ध मे अनूपगिरि बादशाह की ओर से लडे थे, इस समय के बादशाह के विशेष सहायको मे से थे और बादशाह के दूत के रूप में भी काम कर रहे थे। मराठो और राजपूत राजाओ के साथ सम्पर्क करने मे हिम्मतबहादुर बादशाह के साथ रहे हैं। जाटो के साथ भी सम्पक्र करने मे दूत का कार्य किया।

(१४)

रेवाडी के युद्ध के बाद **"गुलाम कादर वध"** का प्रसग है। गुलाम कादर ने बादशाह के साथ बगावत की और आखे निकाल लीं। भंडार पर अधिकार कर लिया और वे सब काम किये जिसे अनुचित ही कहा जा सकता है—

कछु काल पिछे गुलामकादर सु दगा की।
पातसाहि कोप कर करी बेअदबी ताकी।।
करि लोचन जुग भंग सकल भंडार सुल्लिटिव।
अनुचित बात विचार नृपति सुनि दिल में दुष जु दिव।। ३२८।।

महादजी सिधिया इस समय बादशाह की सहायता कर रहे थे। 'गुलाम कादिर का पीछा किया गया और बाद में उसका वध हुआ।

तब गुलामकादरहि पकर बांध्यौ कर पाछौ।
स्वामी द्रोह अति उग्र पाय भुगतायौ आछौ।।
अग–अंग तहँ छुरीन चीर तिल–तिल कटवाये।
निमिषहरामी अधम ताहि सरित पहुँचाये।।
करि साह प्रसन्न पटयल केहि मनसिब दिह दिवाइब।
भूप अनूपगिर भूप सम कवन भूप किहि गाइब।। ३३२।।

यहॉ पटेल का तात्पर्य महादजी सिंधिया है।

(१५)

सातवाँ प्रकास :— इस प्रकास मे महादजी सिधिया के साथ राजा अनूपगि[illegible] का जो सम्बन्ध रहा है, उसका विस्तार से वर्णन है। महादजी सिधिया के सा[illegible] अनूपगिरि की अनबन हो गई, महादजी सिधिया ने बादशाह के साथ अनूपगिरि [illegible] जो सम्बन्ध थे, उनको तुडवा दिया। महादजी ने अनूपगिरि के साथ मीठी–मीठी बा[illegible] की, अत अनूपगिरि ने महादजी के कहने पर विश्वास कर लिया और अपनी सार[illegible] सेना जमुना पार विदा कर दी। लिखा है—

ताते नृप नीत है बस कियो इनकौ चाहियै।
मत्र चित्त विचार के उर कपट प्रीत निबाहियै।।
बरसात को लषि समै साज सनेह नित ग्रह आइयं।
कर बहु षुसामत नीत काम तथा सलाह बताइयं।। ३३९।।
किजै विदा तब फऊज की जादात को सुख मानियं।
नृप सहज युद्ध सुभाव सो कछु भेद बुद्ध न आनियं।।
सिब रूप भूप अनूपगिरि सुन सकल बैन पटयल के।
.... ।। ३४०।।

महादजी की बातो मे आकर अनूपगिरि ने अपनी सेना जमुना पार विदा कर दी, मथुरा में जाकर रहवास किया। महादजी ने बाद मे अनूपगिरि को अपने दरबार मे उपस्थित होने के लिये कहा। अनूपगिरि के मन मे किसी भी प्रकार की कोई शका नही थी। वे इसी विश्वास से महादजी से मिलने के लिये निकले, उनके साथ उस राजा दिलावरजग, गगागिर बहादुर, कुँवर राजगिर, उत्तमगिर, सबसुखराय मानधाता, वीर अमानसिह, कसराज ठाकुर, पहाडसिह, जदुवशी ठाकुर सालिमसिह भोपालसिह कछवाहा, नरिंदसिह पमार और और नाम है। इन सबके साथ राजा अनूपगिरि आगे बढ रहे हैं। पचास द्विज भी साथ मे थे, राजा नवलसिह पमार भी थे, रास्ते मे जासूस ने भेद बता दिया कहा है—

चलिबो न हीई हजूर को उत गये हित पटेल।
हिमतबहादुर भूप जब चर के सुने यो बैन।। ३५७।।
तब श्री नवाब अलीबहादर की रहै ढिग वेस।
डिवढ़ी तहाँ उतरे सुनृप करियो विचार सुदेश।। ३५८।।

पटेल ने बेईमानी का सलूक किया। यह बात जाहिर हो गई। इसके बाद हिम्मतबहादुर अलीबहादुर के साथ हो गये। पटेल के प्रति भारी कोप प्रकट किया। महादजी की ओर से जसवतराइ नाइक, गोविन्दराव, सुद्धोजी भाउ हनुमतराव पमार

उमाजी वाध और अनेक थे। पटेल का दल बहुत बडा था। इस पर भी राजा अनूपगिरि डट गये। जालिम सालिमसिह राजा की ओर से आगे बढ गया, बलवान् मानधाता आगे बढा। कंसराज सेगर भी बढा। सबने मिलकर निर्णय किया। गगाजल को बीच मे लेकर प्रण किया गया। अनूपगिरि ने उस समय अपने साथियो के बीच भाषण दिया। वह कहता है— मैंने ऐसे कई युद्ध किये है। नजफ कुलीखॉ का सामना मैने किया है। तोपो के बीच पहुँचा हूँ। जाटो के अभियान मे साथ रहा हूँ। बादशाह की रक्षा मे हर जगह लड़ता रहा हूँ। आप सब जानते ही हैं। अब सारे सुभटो को एक होना चाहिये।

अब सब सूधे होह भट नृप उदमट इम बुल्ल।
गंगाजल सब को दयौ लयौ रन मति षुल्ल।। ३८६।।
तब तरवार निकार सब उठे वीर बलवंड।
तब पटेल के भट सिमिटि चले पछिल भुव छंड।। ३६०।।

अली बहादुर ने उस समय हिम्मतबहादुर को विश्वास दिलाते हुए कहा—

तहँ श्री नवाब अलीबहादुर कहीय छत्र अनगात है।
साव सैन समेत सब हम भूप तेरे साथ है।।
भट पेसवौ के नौन के हम पले बीस हजार हैं।
मर जाइगे बस अग्र तब फिर इसके अषत्यार है।। ३६१।।

अली बहादुर के कारण सघर्ष टल गया। महादजी सिधिया दक्षिण की ओर चला गया।

उर नवाब पर क्रोध कर दक्षिण चल्यौ पटैल।
उत ह्वै जोर जनाइ हौ यह भट विकटह टैल।। ३६४।।

इस तरह महादजी सिधिया के साथ होता सघर्ष टल गया। सातवॉ प्रकास यहीं समाप्त हो जाता है।

(१६)

आठवॉ प्रकास :— अली बहादुर के साथ राजा अनूपगिरि की बातचीत हुई। अली बहादुर ने जब देखा कि महादजी ने दक्षिण की ओर प्रयाण किया है, तो वह चिंतित हुआ। खर्च बहुत हो गया था। मन मे ग्लानि थी।" राजा अनूपगिरि ने नवाब को बुदेलखण्ड पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया। अली बहादुर का कहना था कि दो बार पटेल ने (महादजी सिधिया ने) प्रयास किया किन्तु बुन्देलखण्ड में नहीं मिली कहा है

भेजी पटैल फौजै सुधार।
उत दोई बैर आइ सुहार।।
लुटवाइ हैं मह पहीर चीर।
तोपै गवाई भज्जै अधीर।। ४००।।
बुंदैल वीर बांके लराक।
बन विषम भूमि गिर दुर्ग बांक।।
वे राज साज सग रसनद्ध।
मादगी इत्तझम फौ मद्ध।। ४०१।।

राजा अनूपगिरि ने विश्वास दिलाया—

सुनि कहत भूप अमनैक टैक।
करियै न आपु कछु संक नैक।।
बुंदेलखण्ड मह जस जगाई।
महि बेग जप्त दैहै कराइ।। ४०२।।
पामार बीर कह मार जंग।
पेसवौ नाम करिहै उतंग।।
कीन्हौ पटैल विग्र अचूक।
तहँ कियै आप हम सौ सलूक।। ४०३।।

इसके पश्चात् अभियान की तैयारी होती है। राजा अनूपगिरि और नवाब दोनो ने कूच किया। डेरे पर सब लोग जमने लगे। आठवे प्रकास मे सेना के अभियान का वर्णन ही प्रधान रूप से है। इस प्रकास का नाम **अर्जुनसिंह समागम** ही है।

अभियान के इस प्रसग मे बुदेलखण्ड की भूमि के प्रति कवि का जो विशेष अनुराग है, वह व्यक्त हुआ है।

दतिया का राजा दल बल के प्रताप से प्रभावित हो गया। राजा अनूपगिरि चाणक्य की चतुराई से चलते–चलते अभियान मे दतिया की भूमि पर अधिकार कर लिया।

हिमितबहादुर भूप है। अनुधरिव चानिक रूप है।।
नरनाह दतिया वारयै। तरवार धार जुझारयै।। ४०८।।
दरसाइ दल–बल आप कौ। राजाधिराज नवाब कौ।
मामलत दीह दिवाइयं। जस नीत प्रीत जगाइयं। ४०६

नृप को झिलाइ नवाब सौं। दतिया सु रष्षी आप सौं।
उनकी सु भुम्म बचा दई। ग्रह कराइ विदा दई।।४१०।।

वहाँ से आगे सिमथर के गुज्जरो से कुछ प्राप्त किया। वेत्रवती को पार कर दल आगे बढ गया। अब वे छत्रसाल के देश मे पहुँच गये। छत्रसाल के प्रदेश कुजकछार मे डेरा हुआ। यहाँ से रण की नीति का निर्धारण होने लगा।

छत्रसाल देसहि पैठ डेरा करे कुंज कछार मैं।
षाली कारी दिन एक मैं सातो गढ़ी रच रार मैं।।४१६।।

जगह–जगह पाती लिखकर भेजी गई, और अभियान मे सम्मिलित होने के लिए कहा गया।

सुमेरपुर मौधा गहोरा राठ दल बल मड्डियं।
सैहुडा वगैरह ग्राम–ग्राम सनाम आमिल छंड्डियं।।४२३।।

अर्जुनसिह ने जब यह देखा तो वह कुपित हुआ। वह बखतसिह को रक्षा कर रहा था। उसने भी तैयारी की। उसके जीते–जी बुदेलखण्ड पर कौन अधिकार कर सकता था—

महाराज मेरे जियत मह बुंदेलखण्ड अषंड की।
जपती करै अरि बात यह किम सुनी जाइ घमंड की।।४२५।।

उसके ललकारने से कई लोग उसके पक्ष मे खडे हो गये। धौकलसिह के साथ अर्जुनसिह ने परामर्श किया। यह चर्चा चल ही रही थी कि ज्ञात हुआ कि नवाब केन नदी पार कर गया है। अर्जुनसिह पामार ने अपनी तैयारी की। सज कर वह भी अजय–गढ की ओर बढने लगा।

आठवे प्रकास मे सेनाओ के आगे बढने और अभियान का वर्णन ही प्रधान रूप से है।

(१७)

नौवाँ प्रकास :— कर्नवती के (केन नदी के) तट पर सेनाए बढ रही थीं। इस बीच अर्जुनसिंह पामार के पास नवाब के दूत प्रपंच रचने पहुँचे। प्रस्ताव मे कहा गया—

तब कही नृप सिरमौर और सुगौर हम कर लेहिंगे।
तुमको प्रमान गुमानसिंह भुवाल की भुव देहिंगे ४३६

तजि कोप आवह सौंप देह समस्त सुख सिरकार मैं।
जनपद सु दून लिषाई लेह हरौल ह्वै दलि भार मैं।।४४०।।
नृप सीष लै इत आइ मंत्रीय कहत मत्र विचार मैं।
सुनि पत्र षुल्लिय मानि भय भुव छड देहु पमार मैं।।४४१।।

अर्जुनसिह ने विरोध किया। पचो के सम्मुख उसने स्वामी--धर्म मे आस्थ व्यक्त की। नवाब को समाचार मिले, राजा अनूपगिरि ने अली बहादुर क आश्वस्त किया।

(१८)

"अनूपप्रकास" मे एक ही जगह पर तिथि का उल्लेख हुआ है और वह 'बनगॉव' के युद्ध का है। उल्लेख इस रुप मे है—

सम्वत अठारह सै परे उनचास साइत द्वादसी।
चढ़ि जुद्ध को नृप सुद्ध माधव बुध दिन जुत द्वादसी।।४६०।।

अर्थात् वैसाख बदी द्वादशी बुधवार, सम्वत् १८४९, तदनुसार १४ अप्रैल १७७२ ई0 है। इस तिथि को यह घोर सग्राम हुआ।

अनूपगिरि की ओर से लडने वालो के बहुत से नाम है— विक्रमजीत बुदेले, राजा भवलसिंह, नरिंदसिह, गिरंदसिह, चदेल धौकलसिह, जगतसिह, सुधर्मसिह, सैंगर जवाहरसिंह, सालिमसिह, सिरनेतसिंह, सुबुद्धसिह, राजा दिलावरजग, गगागिर, कुँवर राजगिर, उमेमगिर, लछिमनसिह, निर्भयसिंह, दीपकसिह, खुमानसिंह, दुर्जनसिह, गौतम हुकुमसिह निवाजसिह, ठाकुरदास पामार, कूर्न गुलावसिह, बख्तसिह चन्देल, लाला अजबसिह, जगन बसी, दुज सवाईसिंह, कुँवर जलदगिर, बलरामगिर, गणेशगिर, षुसाल खां, आसीन खां, रनमस्त खा, लगरियषा, रहिमानषा, धौकलसिह पठहार, हिंदूपत पामार, लाला हीरालाल, हालगिर . आदि।

अलीबहादुर का दल राजा अनूपगिरि के निदेशन में आगे बढ रहा था। दूसरी ओर वख्तसिंह नरनाह ने भी कूच किया। अर्जुनसिह की ओर का दल भी बढा था। इस ओर से लडने वालो के अनेक नाम हैं— कलियानसिह बुन्देल, जगतेस नृप दरियाउसिह बुन्देल, दुर्जनसिह, षुमानसिह बेघल, करनजू, नृपतसिह, सुपध्मसिंह, भगवन्तसिह, रघुनाथसिह, उमेदसिह, जालिमसिह, पृथ्वीसिह, धौकलसिह, जुगराजसिह, गजसिह का पुत्र प्रानसिह घघेर, साहेबसिंह, दुर्जनसिह, भोपालसिह, पूरनमल्ल . और और अनेक सरदार थे।

दोनो दल आगे बढे कहा है

दुहु दल लषा लषी भई दुहु दल उमडे सज्ज।
दुहु दल गलगज्जे सुभट दुहु दल पज्जनि बज्ज।। ५०३।।
सैन पेसवाई लियौ नृप अनूप रनधीर।
मरन ठानी मन आहुसै धनि–धनि अर्जुन वीर।। ५१७।।
पंच सहस पैदर सकल चार हजार सवार।
अगृ बीस तोपै किये उमडि पद्म बल अपार।। ५१८।।

इन पक्तियो के साथ नौवॉ प्रकास समाप्त होता है। इस पकास मे सामान्य सग्राम का वर्णन है।

(१९)

दसवॉ प्रकास :— इस प्रकास मे सबसुखराय के पुत्र मानधाता ने जो वीरता दिखलाई उसका विस्तार से वर्णन किया गया है। अन्त मे वह युद्ध मे बलि हो गया। मान कवि ने राजा अनूपगिरि की सेना का जिस तरह से वर्णन किया है, उस तरह से अली बहादुर की सेना का वर्णन नही किया। किसी मराठा सेनानायक का नाम नही मिलता। अली बहादुर तथा पेशबा—ये दो ही नाम इस प्रसग मे विशेष रूप से दोहराए गये हैं। वस्तुत अली बहादुर के साथ पेशवो की सेना थी और वह भी लड रही थी। जब अर्जुनसिह पामार आगे बढता था तो मराठा सेना चिल्ला उठती थी—आला पमार, आला पमार (पमार आया, पमार आया)। कहा है

रन पिल्यौ सिह अर्जुन अमान।
जनु सकुल ब्रद झपटैं सचान।।
लषि मचीयैल इतवे सु वार।
आला पमार, आला पमार।। ५३५।।

मान कवि ने अर्जुनसिह पमार की ओर के सेनानायकों के नाम भी दिये हैं। अर्जुनसिह पमार की वीरता का कवि कायल है और एक वीर नायक के रूप मे ही उसका उल्लेख जगह–जगह हुआ है।

(२०)

ग्यारहवॉं प्रकास :— मानधाता ने अपने स्वामी के हित मे शीश दे दिया। इसके बाद युद्ध ने और भी विकराल रूप लिया। उसके बाद अजबसिह तथा धौकलसिह, आगे बढे। धौकलसिह पढहार तिल–तिल कट गया। और कई बढते गये। कटनेवालो की सख्या बहुत बडी है। मान कवि ने सब के नाम दिये हैं। यहॉं विस्तार भय से सब के नाम नहीं लिख रहा हूँ अन्तिम प्रकास में प्रधान रूप से

अर्जुनसिह पमार के साथ साथ राजा अनूपगिरि के युद्ध का वर्णन है और अर्जुनसिह पमार के सुरलोकगमन के बाद तो यह काव्य ही समाप्त हो जाता है।

काढ्यौ समर अर्जुन सीस। लीन्हौं संग में धरिनीस।। ६३०।।
अर्जुन सीस आगे राष। फत्तै मुबारक सु भाष।
बुल्लिव वचन भूप अनूप। औठर ठरन संभु सरूप।। ६३५।।
सुनि श्री पेसवा नरनाह। मथुरा मंडली महिमाह।
हम सब कियव आप सलूक। तह हम करिव पैब अचूक।। ६३६।।
करि बुंदेलखंड जप्त। दैहौ सौपि कै सब सप्त।
अर्जुनसिह बीर पमार। ता सिर झारहै रन सार।। ६३७।।
सो सब केसवदेव। कीन्ही जगत जस की जेब।
तिन्ह रनधीर को कटि सीस। सोहत रुद्ररस द्रग रीस।। ६३८।।

अर्जुनसिह पमार का सीस अलीबहादुर के सम्मुख रखा गया। राजा बख्तसिह को हाजिर किया गया। पेशवो की यह बुदेलखण्ड मे विजय थी। यह विजय राजा अनूपगिरि के कारण प्राप्त हुई। युद्ध के अन्त मे अर्जुनसिह पमार की वीरता की प्रशसा की गई। इसके जीवित रहते बुदेलखण्ड मे विजय प्राप्त करना कठिन था। बाद मे उसकी दाहक्रिया सम्मान के साथ की गई—

भोर भये भोपाल उठि पाल क्रपाल सुभाइ।
विधवत अर्जुनसिंह की दाह क्रिया कर।। ६५२।।

(२१)

अर्जुनसिह पमार के सुरलोकगमन के बाद अनूपप्रकास समाप्त हो जाता है। इस काव्य के अन्तिम चारों प्रकास (जो बहुत विस्तार से लिखे गये हैं) अर्जुनसिह पमार के साथ हुए युद्ध से सम्बन्धित है। इस युद्ध के समय की तिथि भी कवि ने ठीक--ठीक दी है। इस युद्ध का वर्णन जिस रूप मे विस्तार से दिया है, उसे देखकर लगता है कि कवि स्वय रणक्षेत्र मे उपस्थित रहा हो। दूसरी बात यह है कि काव्य भी सभवत इस युद्ध के तुरन्त बाद मे लिखा गया हो। बुन्देलखण्ड मे राजनीतिक परिवर्तन उपस्थित करनेवाला यह निर्णायक युद्ध माना गया है। पेशवो की सत्ता इस युद्ध के बाद बुन्देलखण्ड मे फिर स्थिर हो गई। राजा अनूपगिरि ने इससे पूर्व भी बुन्देलखण्ड को जीतना चाहा। अवध के नवाबो के पास रहते हुये उसने अनेक प्रयास किये थे।

अर्जुनसिह पमार ने वीरता से अब तक इस प्रदेश की रक्षा की थी। समस्त बुन्देलखण्ड में उसका प्रभाव रहा है। उसके जीवित रहते बुन्देलखण्ड मे किसी अन्य का प्रवेश सभव नहीं था मान कवि ने अर्जुनसिह पमार की वीरता की प्रशसा की है

(२२)

रचना के स्वरूप को देखते हुए लगता है कि कवि हिम्मत बहादुर के साथ–साथ रहा है। हिम्मत बहादुर ने दान–पुण्य काफी किया और समय–समय पर तीर्थ यात्राये की हैं। गगा–यमुना के किनाने हिम्मतबहादुर के डेरे रहे हैं। किसी युद्ध मे भाग लेने के बाद वे प्राय तीर्थ–यात्रा पर निकल जाते। मथुरा वृन्दावन में वे बहुत बाद गये। कवि उनकी धार्मिक वृत्ति का कायल है। अनूपप्रकास का युद्ध वर्णन रासो की पद्धति का होते हुए भी वह सामयिक है। रचना मे कहीं किसी नायिका का वर्णन नहीं है। या तो वीरता है या फिर तीर्थों का वर्णन किया गया है। युद्धवीर के साथ–साथ दानवीर, धर्मवीर, दयावीर, के प्रसग मिल जाते हैं। पानीपत के युद्ध के जिस प्रसग का उल्लेख कवि ने किया है, वह युद्धवीर से सम्बन्धित कम और धर्मवीर तथा दयावीर से सम्बन्धित अधिक है। स्वय सरदेसाई ने लिखा है—

"शुजाउद्दौला से आदेश से अगले दिन अनूपगिरि गोसई तथा काशीराज ने रणक्षेत्र का निरीक्षण किया। वहॉ पर इनको लाशो के बडे–बडे ३२ ढेर मिले, जिनके गिनने पर २८ हजार लाशे निकली । इनके अतिरिक्त अगणित लाशे उस विशाल मैदान में तथा उसके चारो ओर जगल मे बीखरी हुई मिली। लगभग ३५ हजार व्यक्तियो को दुर्रानियों ने बन्दी बना लिया तथा उनका बाद में निर्ममतापूर्वक सहार कर दिया। लगभग ८ हजार मराठा शरणार्थियो तथा ४०० अधिकारियों ने शुजाउद्दौला के शिविर मे शरण ली। उसने यथाशक्ति उदारतापूर्वक उनकी रक्षा की तथा अपने निजी कोष से धन देकर उनको एक रक्षक दल के साथ सूरजमल के राज्य को भेज दिया। अनेक घायल व्यक्ति उस रात्रि को ठण्ड मे मर गये पानीपत की दीर्घ खाई लाशो से पट गई . . । विश्वासराव तथा भाऊसाहब के क्षेत्र ठीक–ठीक पहचान लिये गये, तथा अनूपगिरि गोसाई, काशीराज तथा अन्य व्यक्तियो ने उनका उचित दाह सस्कार कर दिया। इस कृपा के लिये शुजा ने स्वय शाह से प्रार्थना की थी, तथा अब्दाली को उसने उसकी कृतज्ञता के रूप में ३ लाख रूपये दिये। नबाव के प्रयास से भाऊ साहब का सिर एक दुर्रानी सवार के पास मिल गया, तथा एक दिन बाद इसका अग्नि–सस्कार कर दिया गया। स्वय काशीराज ने इस आशय के पत्र पेशवा को लिखे। भाऊसाहब की पत्नी पार्वतीबाई सकुशल ग्वालियर वापस आ गई तथा भिलसे के समीप पेशवा के साथ हो गई।"[१०]

हिम्मतबहादुर की उदारता का एव सहायता का वर्णन इतिहासकारों ने किया है। कवि का वर्णन अतिरजित होने पर भी इतिहास–विरुद्ध नहीं है। हिम्मतबहादुर चाहे जिस राजनैतिक शक्ति के साथ सहयोग करते रहे हो उनकी जीत हुई है। वे

---

१० मराठों का नवीन इतिहास भाग २ म सरदेसाई हिन्दी अनुवाद पृ ४६८ शिव आगरा (द्वितीय सस्करण) १९६४ ई०

अवध के नवाबो के साथ मे रहे, तो उनकी जीत हुई, मुगल बादशाह के साथ रहे तो उनकी जीत हुई और मराठो के या जाटो के साथ रहे तो उनकी भी जीत होती रही है। भान कवि ने राजा अनूपगिरि का वर्णन राजा के रूप मे किया है। इतिहास मे उनका नाम राजा के रूप मे नही मिलता। एक सेनानायक के रूप मे ही स्मरण किया जाता है। अन्त मे वे राजा हो गये थे। हिम्मतबहादुर पहले अवध के नवाब के पास रहे। बाद मे मुगल बादशाह के पास, कुछ समय के लिए महादजी सिंधिया के साथ और अन्त में अली बहादुर के साथ तदनुसार पेशवो के साथ रहे हैं। अपने समय की सभी प्रधान राजनीतिक शक्तियो से वे सम्बद्ध रहे है। बुन्देलखण्ड उनका प्रधान कार्यक्षेत्र रहा है। उस समय की प्रधान राजनीतिक शक्तियाँ जानती थी कि हिम्मतबहादुर के सहयोग के अभाव मे बुन्देलखण्ड मे उन्हे सफलता नही मिल सकती। अन्त में अग्रेजो ने भी हिम्मतबहादुर के साथ समझौता किया। अनूपप्रकास मे अग्रेजो का कोई वर्णन नहीं है। हिम्मतबहादुर के शासक बन जाने के बाद बुन्देलखण्ड मे स्थिरता आ गई थी। मराठो के आक्रमण बन्द हो गये। अग्रेजो के साथ संधि हो जाने के कारण राजनैतिक स्थिरता आ गई। बुन्देलखण्ड के शासकों को सदैव आक्रामको से लडना पड़ा है। प्रधान आक्रामक शक्ति रुहेलो की थी। बगशो ने बुन्देलखण्ड को बहुत परेशान किया है। इसके बाद मराठो ने भी बुन्देलखण्ड को अपना क्षेत्र बनाया। छत्रसाल के समय मे बाजीराव पेशवा बगशो के विरोध मे सहायता करने के लिए आया था और उसके बाद तो इस क्षेत्र मे मराठा प्रबल हो गये। बुन्देलखण्ड को लेकर मराठो मे और रुहेलो मे बडी-बडी लडाइयाँ हुई हैं। पेशवो की महत्वाकाक्षा इलाहाबाद तथा वाराणसी तक आगे बढने की थी किन्तु बुन्देलखण्ड बीच मे पडने के कारण वे बढ़ नहीं पाए। अवध के नवाब बुन्देलखण्ड पर अपना अधिकार नहीं कर सके। रुहेलों को हमेशा लडकर भगाया गया। मराठो को अल्पकालीन सफलता मिलती। बाद मे बुन्देले स्वतत्र हो जाते। यह तो हिम्मतबहादुर था जो बुन्देलखण्ड की भूमि से और वहाँ की रणनीति आदि से परिचित था। बुन्देलखण्ड मे नाम मात्र के शासक ही रहे हो किन्तु वहाँ के स्वामिभक्त पमार ने अपने जीवन काल मे बाहर वाले आक्रामको को हमेशा खदेड दिया था। मराठे रुहेलो आदि सब का वह सामना करता रहा है। यह तो हिम्मतबहादुर था जिसके कारण अली बहादुर को सफलता प्राप्त हुई।

(२३)

अनूपप्रकास-विरुदावली नहीं है। इसमे विरुदावली की एक पक्ति बार-बार दोहराई गई है और वह है—

"बर बरनिये विरदावली हिम्मतबहादुर भूप की"

यह पक्ति पद्माकर की   में भी दोहराई गई है

पद्माकर को मान कवि की तुलना मे अधिक ख्याति प्राप्त है। वह रीतिकाल के प्रतिनिधि कवियो मे से एक हैं। पद्माकर ने सभवत विरुदावली अनूपप्रकास से पहले लिख दी हो और सभवत वह हिम्मतबहादुर के दरबार मे सुनाई भी हो। मान कवि ने विरुदावली सुनी हो। मान कवि का प्रयोजन विरुदावली मात्र लिखना नही था। उसका प्रयोजन ऐतिहासिक आख्यान लिखना था तथा अपने नायक का स्वरूप प्रतिष्ठित करना था। मान कवि ने पद्माकर का उल्लेख कही नहीं किया है। यह तो निश्चित है कि राजा अनूपगिरि बुन्देलखण्ड के क्षेत्र में प्रबल माने गये। इसका प्रमाण पद्माकर कवि की विरुदावली है। अनूपप्रकास पर विचार करते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक हो जाता है कि रचना को हम 'ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य' मे देखे या राजनीतिक परिप्रेक्ष्य मे देखे तो वह रचना हमारे लिए ऐतिहासिक है किन्तु समसामयिक रूप मे वह राजनीतिक रचना रही है। हिम्मतबहादुर की राजनीतिक गतिविधियो को हिम्मतबहादुर के समय से प्रस्तुत करने वाला यह उत्तम काव्य है। हिम्मतबहादुर के कूटनीतिक वार्तालाप काव्य में है, इस वार्तालाप को विस्तार रूप से नहीं लिखा गया है। लगता है कि कवि केवल प्रशस्ति–गायक नहीं है। वह सामयिक राजनीति से परिचित है और राजनीतिक शक्तियो के सन्तुलन को पहचानता है। हिम्मतबहादुर ने राजनीतिक शक्तियो मे सन्तुलन स्थापित करने का प्रयत्न किया और निजी सफलताये प्राप्त की। काव्य में जगह–जगह स्वामिभक्ति की दुहाई दी गई है और उसकी सराहना भी की गई है। इस स्वामिभक्ति को कवि आदर्श मानता रहा है। हिम्मतबहादुर अवध के स्वामी–भक्त सेवक रहे। सेवक रह कर भी नरेशो–सा सम्मान प्राप्त किया। गोसाइयो का सम्मान अवध के सभी नवाबों ने किया है। नवाब जब मुगलों में वजारत चाहते रहे, तो गोसाइयो ने मुगलो की भी सेवा की है। मुगलो पर जब मराठे प्रबल हो गये, तो मराठो की सेवा मुगलों की सेवा हो गई। इस नाते महादजी सिंधिया की सेवा मे भी राजा अनूपगिरि को रहना पडा। इस तरह से सेवा करते समय जब राजा ने अनुभव किया कि पेशवा की सेवा ठीक रहेगी, तो अन्त मे पेशवो के लिये, लड़े। कवि यह मानकर चलता है कि राजा अनूपगिरि सदैव स्वामी भक्त रहे।

(२४)

'अनूप्रप्रकास'–पृथ्वीराजरासो की लोकप्रियता का प्रमाण भी है, अनूपप्रकास के ऐतिहासिक तथ्य समकालीन हैं किन्तु काव्य–पद्धति, इतिहास–दर्शन तथा वर्णन–विवेचन सब में रासो की परम्परा का अनुसरण है, ऐसा प्रतीत होता है, पृथ्वीराजरासो का अनुसरण करते हुए भी यह अपने आप में ऐतिहासिक दृष्टि से अधिक प्रामाणिक (तथ्यों की दृष्टि से) है। इतिहास के लिये इस काव्य–सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिये।

★★★

मानव कवि

कृत

अनूप प्रकास

मान कवि कृत

अनूप प्रकास

।। प्रथम प्रकास।।

।। श्री नाथ जोगेन्द्र वर्न्नलं ।।

श्रीगणेशाय नमः।।
श्रीमते रामानुजाय नमः।।
अथ अनूप प्रकास लिष्यते।।

।। दोहा ।।

गनपति पसुपति लोकपति, करत अमरपति सेव।
देव अदेवनि को धनी, बदहु केसव देव।।१।।

।। चौपाल ।।

बदह केसवदेव कृपाकर। कमलापति कल्यान गुनाकर।।
केसवदेव जगत के स्वामी। प्रकट पुरुष उर अंतरयामी।।२।।
केसवदेव चराचर व्यापक। वासदेव धर्म के थापक।।
केसवदेव अधर्म के उथापक। केसवदेव असुर संतापक।।३।।
केसवदेव भक्तभयभजन। केसवदेव नीतीह निरजन।।
केसवदेव अषिल फलदाता। विधि हरिहर के आधि विधाता।।४।।
केसवदेव बुद्ध वर पाऊ। हिमित बहादुर त्रप जस गाऊँ।।५।।

।। दोहा ।।

गाऊँ केसवदेव की आदि सक्त जगदब।
मूल प्रक्रत परमेस्वरी विद्या ६

॥ चौपाई ॥

सकल विस्व अ [....] नमाया। जानै अषिल प्रपंच जनाया।
अमित कोटि ब्रह्माड बनाए। अगिनित चौदह लोक बनाये॥
तिनमह विविध जीव जे गाये। ते सब जगत मात उपजाये।
जगत मात जग कारन करनी। जगत मात जग काम वितरनी॥
चौदह लोक सात आवरनै। जगत मात को छिन में करनै।
जगत मात को सब जग भरनै। जगत मात के ही सहरनै॥
जगत मात जग बंधन कारन। जगत मात जग बध उबारन।
जगत मात सज्जन हित विद्या। जगत मात षल हेत अविद्या।
जगत मात को सुर मुनि गावहि। जगत मात को सुर मुनि पावहि।
जगत मातु को बदहु चरनै। बगसौ ब्रह्म मान कवि बरनै।

॥ दोहा ॥

श्री प्रभु केसवदेव को, समरु सिरोमनिदास।
श्री अनूपगिर भूप को, बरनौ सुजस प्रकास॥१२॥

॥ छन्द हरगीतका ॥

बल बुद्ध निद्ध सम्हद्ध रिद्ध प्रसिद्ध सिद्ध सरूप की॥
बर बरनियै बिरदावली हिमत बहदुर भूंप की॥१३

॥ कवित्त–बंस बरनन ॥

सदानंगिरजी प्रगटे वो अंकारगिर,
तिन तै व्र [...] सिंहदेवगिर गनियै लहौ।
तिनके अनत पुरुसोतम महंत भिंमगिर,
संतोषगिर सोभा सुनिय लहौ॥
नरहरनाथ मनोहरजी चंदनजी,
नारायननाथ तैसनाथ बनियतु है।
ध्याननाथ राजा राजेन्द्रगिर नामावडी,
गिरनामा बंस की बडाई भनियतु है॥१४॥

॥ छन्द हरगीतका ॥

बरनौ सुजस रन धीर वीर अनूपगिर को
कर कथन पूरब कथन को गुन गथन बस को

गिरनार गिरनाथ को तह सिघ चदन माथ भो।
धरि ध्यान संकरनाथ को नवनाथ तुल्य सनाथ भो।।१५।।
ता धर्म सुत जप तप पराइन श्री नारायननाथजी।
सब योग विद्या विदित सो रिष मनौ गोरषनाथजी।।
श्री ध्याननाथ प्रसिद्ध तिनके सिष्य गुर से ग्यान कौ।
करि सिवपुरी कैलास बिच बैठे गुफा मै ध्यान कौ।।१६।।
तिनके सिरोमनि सिष्य परम प्रवीन सत समाज मैं।
राजेन्द्रगिर राजेद्र सौ राजै रजोगुन साज मैं।।
अस्थान की सिगिरी विवस्था जे प्रमस्त कियै रहै।
आनन्द जुत गुर बदगी मै नित्त चित्त दियै रहै।।१७।।
साधे समाधि न ध्यान मै श्री ध्याननाथ सनै रहै।
राजेद्रगिर तिहि गिर गुफा मै द्वारपाल बनै रहै।।
इक समै सिष्यहि देषनै आयै नारायननाथ है।
लषि गुफा अंदर तिन्है पैठत रोक बोले गाथ है।।१८।।
चीन्है बिना जब उजुर किय गुर पास जाहिर करन की।
तब मुदित बोले परम गुरु भक्त चरन की।।
राजेंद्रगिर राजेद्र लौ अपने रजो गुन वासना।
राजाधिराजा होहु यातै गज मानै सासना।।१९।।
दरि पुस्त प्रापत राजहू हौ हेम हय गय साज सौ।
चलिहै चमू चतुरग नैरे सग राज समाज सौ।।२०।।

।। दोहा ।।

गाती वाधि सु प्रेम मति, माती दै वरदान।
छाती लयौ लगाइ लषि, नाती सिष्य सु जान।। २१ ।।

।। छन्द : मौक्तिक दाम ।।

दियै वरदान रजोगुन दिष्य।
गुफामह बिलोकिय सिष्य।।
मिले सिष्य सौ सिष दै गुननाथ।
गये गिरनार नरायननाथ।।२२।।
इहाँ उनके लहि आसिरवाद।
बढ्यौ उर इद्रगिरै

भई वरदान प्रभाव प्रतीत।
रजोगुन रीत रची अति प्रीत।।२३।।
गुरु कब आइसु लै सुष पाइ।
सिरोजहि जाइ विभूत बढाइ।।
जुरे गज बाज जुरी बहु रिद्ध।
करि चतुरगिनि सैन समृद्धि।।२४।।
इहाँ अब नाथ गुरु सिरताज।
चले उठ सेवन तीरथराज।।
गए जब कुल्ल पहार समीप।
तहाँ चहि कै जगतैस महीप।।२५।।
करी न्रप भेट धरी उर प्रीत।
नरिंद्र मुनिद्रन की जिम रीत।।
सु दानदया सनमान प्रमान।
कहा जगतेस नरेस समान।।२६।।
बुदलनि की जग जाहिर रीत।
धरे उर सतन की परतीत।।
प्रदक्षिन दै कर दड प्रनाम।
करि मुनि अस्तुत मगल धाम।।२७।।
करी बिनती न्रप यौं जगतेस।
पवित्र करौ मुनिजू मम देस।।
कछू दिन सेवक पै सजि नेहु।
दया कर दर्सन पर्सन देहु।।२८।।
लषिय न्रप की अतिसै जब भक्त।
भई मुनि के मन मे अनुरक्त।।
चल्यौ न्रप ले रिष कोस विलास।
दयौ निज मंदिर पास निवास।।२९।।
बसै बहु काल लषै न्रप प्रेम।
कियौ सनकादिक ज्यों प्रभु छेम।।
बढ्यै न्रप के मुनि के मन हैम।
वसिष्ठ दिलीप करौ जिम नेम ३०

।। छन्द : तोमर ।।

राजेन्द्रगिर तह आइ।
गज बाज साज बढाइ।।
बरदान मुनि को पाइ।
गुरु के गहे जुग पाइ।। ३१ ।।
जब लषी सिष्य मुनीस।
जगमगहि जिम अवनीस।।
चतुरग सग दिषाइ।
बरनी विभूत न जाइ।। ३२ ।।
किय नाथजी उपदेस।
किह हेत होत नरेस।।
आनद न्रप कौ तुक्ष।
जोगीस को सुख स्वक्ष।। ३३ ।।
इमि सुनीय वीर विराग।
दिय सकल वैभव त्याग।।
न्रप इद्रगिर परवीन।
फिर भये उतय लवलीन।। ३४ ।।
मुनि दिय जो वरदान।
बह होत कबहु म्रषा न।।
फिर लगव ऐसौ जोग।
नहि मिटै तप को भोग।। ३५ ।।
कछु काल मे बल पाइ।
दल पेसवान पठाइ।।
तिन करी देषि सुरीत।
राजेद्रगिर सो प्रीत।। ३६ ।।
झासी लगाइ जिमीन।
तिन प्रीत सौ लिष दीन।।
भुव मौठ के जु तीर।
दस सहास की जागीर ३७

अति प्रेम सौ उन दीन्ह।
गुरु भक्त हित चित चीन्ह।।
सिर नाइ कर जुग जोर।
यह बिनय कीन्ह बहोर।।३८।।
तुम हौह हमारे देव।
यह उचित हम कौ सेव।।
गुर जगत को दुज आसु।
है तासु गुर संन्यासु।।३९।।
तुय भंगुर रग निसान।
बलजीत ले। निसान।।
प्रभु को प्रभाव दराज।
राजे हमारा राज।।४०।।
गुरू भक्त सौ भगवत।
लहि भुव समुद्र प्रजत।।
इम अमित अस्तुत गाइ।
पर नाथजी के पाइ।।४१।।
मुनि कौ दुजैस रिझाइ।
राजेद्रगिरहि मगाइ।।
सिबिका चढाइ चढाइ।
लै गये सग लिवाइ।।४२।।
राजेन्द्रगिर तह जाइ।
उत बसत भे सुष पाइ।।
मुनि बचन सत्य प्रभाइ।
फिर बढ्यै राज सुभाइ।।४३।।
इत नाथजी निरवान।
जगवीतराग निदान।।
तजि सकल लोक निवाम।
तजि कुल पहार निवास ४४

चलि प्रागजी कह जाइ।
जह देव माधवराइ॥
सीत असित नीर सुहाइ।
संगम त्रिवेनी पाइ॥४५॥
जल गंग अंग भिलाइ।
तहँ धर्‌यौ ध्यान बनाइ॥
तन त्याग फूट ब्रह्मंड।
मिल गयौ ब्रह्म अषड॥४६॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्म अषंड मिल्यौ सु मुनि, ध्याननाथ धरि ध्यान।
इत राजत राजेंद्रगिर राज जोग करि ज्ञान॥४७॥

इति श्रीमत प्रचंडः महाराज
प्रतापोल्लासे अनूपप्रकासे
श्रीनाथ जोगेंद्र वर्ननं प्रथमः प्रकासः॥१॥

।। द्वितीय प्रकास ।।

।। श्री राजेंद्रगिर जुद्ध वर्ननं ।।

।। छन्द : तोटक ।।

इत राजत राज महेद्र गिर।
व दष्यिन को दल देस फिरं।।
हय णारुयसकर देसपती।
करि देसन—देसन की जपती।। ४८ ।।
भुव मागी नारुसकर ने।
न दई भूप भयकर ने।।
करिकै बहुतै श्रम भूमि लई।
अडपै अब क्यौं वह जाई दई।। ४९ ।।
इन तेज भरौ जब ज्वाब दियौ।
तब नारुवसकर कोप कियौ।।
दल सौ गढ मौठ सु गेर लयौ।
रन सौ रव को रच आनि छयौ।। ५० ।।
तहँ जुद्ध महा विकराल भयो।
कढि कोप भिरे भट तेज तऐ।।
बरसा तह बानन की बरसी।
फरि गोलिनि गोलन की सरसी।। ५१ ।।
तडपै तुव कावलि तोप छटा।
घुमडै घन की जिम घोर घटा।।
चमकै—चमकै सुर चापन की।
झमकै जनु सेल्ह कलापन की।। ५२ ।।
तमकै तह तैगन की तमकै।
घन भेद र दामिन ज्यौ दमकै।।
धमकै धर तोप तरा भरकी।
घमकै जनु सिष की ५३

समकै दल बादल से उमडे।
जमकै—जमकै रनबीर मडे।।
बसकै बलबड चढे अरि पै।
कम कै नहि सार सरा सर पै।।५४।।
न्रप इंद्रगिरंद पुरदर से।
रन यावस पावस लौ दरसे।।
सरिता बह श्रोनित पुज सची।
बहु मासन मासन कीच मची।।५५।।
कटि मुंडनि रुंड अषड बहे।
तरि तुंड समान भसुड रहे।।
अस मच्छप कच्छप गाल भये।
गय ग्राह तुरंगम नक्र नये।।५६।।
अरि कौ तप तेज घटाय दयौ।
रन मै मुह मार हटाइ दयौ।।
तब नारुवसंकर दीन भयौ।
दुज लौ चलि आसिष आइ दयौ।।५७।।
करि जोरि करी न्रप सै विनती।
दरसाइ सबै अपनीहि नती।।
प्रभु तौ जग मै जस भम्हन है।
हम तौ अब भिछुक बभन है।।५८।।
श्रुति सिक्षित सौ हम दिक्षित है।
भुव भिक्षित ही कह इक्षित है।।
लघुता लषि नारुयसकर की।
उमगी इत औढरता खरकी।।५९।।
वह भुम्मि सबै धर सकल्पी।
पुनि दूसर बात नही जल्पी।।
दुज कौ करि पुन्य सु मौठ दई।
करि बाहिर जाहिर क्रत्य लई।।६०।।
तन लौ धन धाम सु ग्राम तज्यौ।
रघु ज्यौ प्रदान सज्यौ

गुर नाथ गऐ जु रहै जित कौ।
चित चाह चूम चले तित कौ।।६१।।
मग मोलि कै कालपी उषल मैं।
असनान करै जमुना जल मैं।।
तह सकर की अरचा सरसी।
जह गग तरग अमंगल सो।।६२।।
जिह मध्य सरस्वतिवार बसै।
जमुना पर सेज मना परसै।।
जह बैनिय माधव के दरसै।
... . ।।६३।।

।। दोहा ।।

माधव केरा दरस करि डेरा सरस बिलद।
परे गंग की रेनुका मनो रैनुकानद।।६४।।

।। छन्द : भुजंगी ।।

मनौ रैनुकानन्द लीन्है समाजै।
महाराज राजेन्द्रगिर यौं विराजै।।
अवेरानु सौ तासु डेरानु ह्वै कै।
गऐ आमिल सामिल ते त्वैक।।६५।।
कही जात या पार कीबी कहा छै।
लियौ आपकौ आजु आछौ सु पाछै।।
करी दौर त्यौ कालषा जोर जागे।
चले पाइ फपाइ भै पाइ भागे।।६६।।

।। कवित्त ।।

बंगस नवाब अहमदषा अनी के,
समसमिया हरौल कालेषां की लरन मै।
अहमदसाह पातसाह के ऊजीर,
मनसूर अलीषा कै भजे आभिल श्वरन मै।
आगा कुलीषान त्यौ नवाब बकउल्लषान,
त्यौ दि न वि डरन मै

मानि भै अपार गंगापार जात कही हम,

राजा राजेंद्रगिर रावरी सरन मै।। ६७।।

।। छन्द : टेषता ।।

सरन मै हम तिहारे है।

क्रपा करि न्रप तिहारे है।।

चल्यौ राजेंद्र रन मंडन।

षलन सिर षोपडी षंडन।। ६८।।

विनौ म्रद वानि कौ अरपति।

गऐ तरि गग ने डरपति।।

त लगि अरि आइगो सरपति।

सुनत उठि कोप भरि नरपति।।

रुप्यौ राजेंद्र रन मडन।

षलन सिर षोपड़ी षडन।। ६९।।

सुनै अरि बज्जनै बज्जत।

प्रलै परजैन्य से गज्जत।।

धरी छत्र धर्म की लज्जत।

सुभ हसत पच सो सज्जत।।

रुप्यौ राजेद्र रन मडन।

षलन सिर षोपडी षडन।। ७०।।

जुरे दुहु वीर भट उदभट्ट।

अपट पटकै लिपट सटपट।।

भिरे रन बाकुरे अटपट।

गिरे गिरवान करि कटपट।।

रुप्यौ राजेद्र रन मंडन।

षलन सिर षोपडी षडन।। ७१।।

उमड उत तेज तमतमिया।

सु कालेषान समसमिया।।

चपल रन तेग चमचमिया।

कि दामिन व्योम दमदमिया।।

रुप्यौ राजेंद्र रन मडन।

षलन सिर षोपडी षडन ७२

षडग घाले भुजन भरि—भरि।
परत कट षेत भट सरसरि।।
लगी रट मार धरधरि।
धरि पसर करि षोल हर हर हर।।
रुप्यौ राजेद्र रन मडन।
षलन सिर षोपडी षडन।।७३।।

घुमड सम झूम उपर झूमकै।
धरे सिर सेल्ह के धमकै।।
धने घाउन घमड घमकै।
उमड अवधूत रन तमकै।।
रुप्यौ राजेंद्र रन मडन।
षलन सिर षोपडी षडन।।७४।।

कि झमझमिया सिरौ झमझम।
परि रन धूम की धमधम।।
चमकै तेग की चमचम।
मनौ घन दामिनी दमदम।।
रुप्यौ राजेंद्र रन मडन।
षलन सिर षोपडी षडन।।७५।।

हुमड हहकार को रट रट।
सुभट लर लर गिरे कटि कटि।।
कि तिल तिल तन रुधौ फटि फटि।
मही मुंडन रही पटि पटि।।
रुप्यौ राजेद्र रन मडन।
षलन सिर षोपडी षडन।।७६।।

रुधिर की धार अललल।
मची रन बीचि कटि कललल।।
कि घाइनल धाइ तह तललल।
भभक वो लौ ववकि वललल।।
रुप्यौ राजेंद्र रन मडन।
षलन सिर षोपडी खडन।।७७।।

नचहि जोगिनी जमक।
हसे बेताल करि कह कह ।

डमक डमरु बजै डहडह।
गहक गावत गौर गहगह।।
रुप्यौ राजेद्र रन मडन।
षल्न सिर षोपडी षडन।।७८।।

।। छन्द : हरिगीतिका ।।

मत्ति मत्ति मसु तेग तमंकि झिमि झिमियासु कालेषान सौ।
इम भिरेव न्रप राजेद्रगिर मघवान जिमि बलवान सौ।।
तमकाइ तुरीय उमड अरि को मुड काटि क्रपान सौं।
अहमद्द को सुहरौल हनि बिच लाइ दल घमसान सौं।।७९
करि षूब षातरि तार पार व तार पार बुलाइय।
मिलि प्रथम सामिल ह्वै गऐ ते सकल आमिल आइय।।
सुनि पातसाह उजीर जीरन भीर वीरन थाइय।
चित चाह चाह उछाह सौ अब आहि साह बुलाइय।।
राजेद्र गिरि नर नाह के मनमाह मगल छाइय।।८०
दलमलत बंगस के प्रबल दल हार हारन के किये।
हनि हनि कुमाऊ के पाहरउ मैडवैड सबै दिये।।
इत धरन मै धज सो करायौ अमल येक उजीर को।
लषि साह चाह भयो दिली को गमन न्रप रनधीर कौ।।८१
तह पातसाह उछाह भरि बगसीस कर तिहि तार्पिय।
मनसिब हप्त हजारियान तरवारि या लषि अर्पियं।।
मनि मडि माही को निसान दिसान माही जगमगै।
नवनाद नौवद रजित की धुनि सुनत षल दल डगमगै।।८२।
पुनि माल मोतिन की षिलत हिलमिलत मन बगसत भये।
सारगुपर हरद्वार वा परगनै वगैरह दये।।
मनसुर अली उजीर सौ सब भात भाइप मानिकै।
राजेंद्रगिर राजेद्र तह रहते भये सुख्र सानिके।।८३।

इति श्रीमत्प्रचंडः महाराज
प्रतापोल्लासे श्री राजेंद्रगिर जुद्ध
वर्ननं दुतियः प्रकासः।।२।।

।। तृतीय प्रकास।।

।। राजाभिषेक वर्ननं ।।

कुछ काल पीछै वीर की उज्जीर सग विदा भई।
प्रगनैन की जपती करी वह जुद्ध जित्त फते लई।। ८४
इह बीचगा जुरि दिये षानि प्रगट्टि नौन हरामियं।
द्रग षैचि डारे साहि के सठ किया काम निकामिय।। ८५
सुनि साहि लोचन भग सबदरजग उर अकु लाइकै।
दौरि सु दिल दुष पाइलै दल सवाम धर्म धराइकै।। ८६
राजेद्रगिर न्रप सुभट मोट हरौल तह रन मै भये।
औरि ताहा करिव संगर सत्रु मार मिटा दये।। ८७
तह सेल घमकन तेग तमकन तीर तुवकन मेल—ही।
अथ दड दमकन चक्र चमकन गुरज बमकन झेलही।। ८८
फरसान कौ षरसान धर घमसान तिनसौ खेलही।
रुपि सुभट झपटहि लपक लपटहि पटक पटकहि पेलही।। ८९
सुष रुधिर की उदगरन सौ मुदगरन सौ फिर फुट्टही।
कटि रुड फरकहि मुड ढरकहि हाड करकहि टुट्टही।। ९०।
बरछीन सौ अरछीन किय करवार कहु करवार के।
हुर सार से हुरि करै सिर अरिन के हर हार के।। ९१।
असरार सारन सार झार अघाइ घाइन षाइकै।
तन तजिव न्रप राजेन्द्रगिर रन पाइ षलिन षपाइकै।। ९२।
मन दिअव स्वामि धर्म मै तन दियव रचि रन धार मै।
जस दियौ सबदरजग कौ सिर दयौ हर के हार मै।। ९३।
लषि स्वामि धर्म उजीर सबदरजग त्यौ सुनि साह कै।
राजेन्द्रगिर के सुवन जुग राजेद्र किय चित चाह कै।। ९४।
उमरावगिर सु अनूपगिर जुग भ्रात जाहिर जगत मै।
जागीर दस गुन दई हफ्त हजारिया कहि भक्त मै।। ९५
न्रप रीत की मित नीतहि मित निरष मन रन धीर कौ।
परताप आप बढ्यौ चहु ओर युग बर बीर कौ।। ९६।

।। दोहा ।।

मनसिब हफ्त हजारिया, अरि उजारिया वीर।
भए जुगल तरवारिया धरन धारिया धीर।।९७।।

।। छन्द : भुजंगी ।।

भऐ धरनि के धारिया धीर दौनौ।
लिष्यौई हतौ भाग मै राज हौनौ।।
कियौ साह राजाभिषेक बली कौ।
अनी कौ पटी कौ दियौ ताहि टीकौ।।९८।।
भऐ भूप टीकैत विरदैत भारी।
चल्यौ संभु कौ पूजनै छत्रधारी।।
छतीसौ कुरी संग चतुरग सैना।
बढै वीर बानेत बर्नै बनैना।।९९।।
सज्यौ भूप हाडा अनी जोर साजी।
धलै सत्रु के सीस जाकी न राजी।।
धुजा कच्छ धारी सजे कच्छवाहे।
समर्थ्थं अरिं मथ्थपै हथ्थवाहे।।१००।।
सजे वीर सीसौदिया सानवारे।
महामान जे दान किरवान वारे।।
सजे वीर भद्दौरिया वीर हद्द।
उमद घटा भद्द बजे भिनद्द।।१०१।।
सजे वीरता ठौर राठौर ऐसे।
दु चंद दपै चद जैचद जैसे।।
सजै वीर बानैत भूप सूलषी।
गहै सत्रु कौ ज्यौ मनौ बाज पंषी।।१०२।।
सजे वीर त्यौ बढ्ढिकै पढिहार।
जसी जग जे सार झारत झारं।।
सजे जौम सौ जादव वीर बाँके।
सदा सत्रु कौ जीत जे जुद्ध हाके।।१०३।।
सजे रैकवार न्रप जैतवार।
करै जे कुमारी अनी ब्याह वारं।।

सजे वीर गहिलौत गाइक्कावार।
भिरे भिम्म से कर्न से जे उदार।।१०४।।
सजे जैत से जैतवार पमार।
करे सुद्ध जे जुद्ध मै जोर मार।।
चले वीर चावंड से चाहुवान।
जुरै जुद्ध मै सुद्ध जे सावधान।।१०५।।
सजे सैगर वीर भूपत्त भारी।
महारथ्य पारथ्थ से अस्त्रधारी।।
सजै बाघ सेवी रवा के बघेले।
जिन्हौ जग मै षर्ग के ष्याल षेले।।१०६।।
सजे गौर भूपत्ति चंदेल साजे।
गहिरवार त्यों षोर गौतंम गाजे।।
सजे भूप भालेसु लत्तान मट्टी।
रनं अत्र सौ सुत्र की सैन कट्टी।।१०७।।
सजे भूप षीची सजे सोमवसी।
जिन क्रात्ति राजत ज्यौ राजहंसी।।
सजे रावत सूजेवसी भवाल।
जसी कर्न से वीर बानै विसाल।।१०८।।

।। छन्द : द्रुतविलंबित ।।

करचुली विलकैत त्रप सजे। दिषत राजकुमार कु लोग जे।।
विसयने त्रप तौ मइ सज्जिया। सकरवार वलीकन बज्जिया।।१०९।।
दल बडे रघुवंसिन के चले। जिनहि देषि गली महिपै हले।।
सजि नरेस चलेवड गुज्जरं। दुवनये जिनके दिल हुज्जर।।११०।।
त्रप छत्तीस कुरी सजि कै चले। उमड़त दल बद्दल से भले।।
कियव संकर पूजन जाइ कै। छह दसौ उपचार चढाइ कै।।१११।।
गवर पूज गणेस मनाइ कै। निगम मगल घोष बनाइ कै।।
धरिन ध्यान हियै अनुरागि कै। सुमन सिक्षत इक्षित मार्ग कै।।११२।।
दुजन दीरघ दान सबै दये। लहि गयद कविद षुसी भये।।
विविध सज्जन बज्जही धन लल्जहि ११३

सकल भूप समाज सुहाइय। दल दरेरन डेरन आइयं।।
मुदित सप्दरजग उजीरनै। सहित साह तने रन धीरनै।।११४।।
तिलक ता दिन किन्हिव राज को। सकल साहन वाहन साज को।।
पुनि हरौल थप्यौ निज फौज कौ। नृप अनूप—गिर महि मौज कौ।।११५।।
सुनत व्रंद कविंदन के फिले। गुनन मडित पडित त्यौ मिले।।
सबैहि दान दिये सनमान से जगम्मगे जस जोर जहान में।।११६।।

।। कवित्त ।।

भारे मतवारे बोज उज्जिल दतारे।
झूल झपकन वारे कारे कज्जल के नग से।।
पटकै न झटकि झमाकि भू झपटिया तै।
कट काट भट कवि मान कहै ठग से।।
मान बलबड सुडा दडन उदडनि।
चिरावत इरावत को जोर जोम सग से।।
इंद्र से किविंद को दराज राज इद्रगिर।
नंदन निरंद नै करिंद कै यौ बगसे।।११७।।
झलमलै मोतिन की झालरै झलकदार।
झलकत झूल झूपि झूमत झुकत है।।
जिनके धरत पग धरनी दगत धिग।
धक्कन सौ धसक धराधर धुकत है।।
जिन्है गल गज्जत ही लज्जत दिगंतगज।
भज्जत दिगीस तजि लज्जत लुकत है।।
तेरे दान वारन वर्धतै दानवारन।
हजारन कविदन के द्वारन दुकत है।।११८।।
हिमत बहादुर नरिंद वीर बगसे।
गिरिंदनि से गधर गइदनि के गोत है।।
जिनकी गराज गलबलनि दराज।
दिगदंती षलभल हल कपत उदोत है।।
झूल झलमल पग गिर टलमल।
स्वास चलत हलत घन लहत नवोत है

सजे वीर गहिलौत गाइक्कावार।
भिरे भिम्म से कर्न से जे उदार।।१०४।।
सजे जैत से जैतवार पमारं।
करे सुद्ध जे जुद्ध मै जोर मार।।
चले वीर चावड से चाहुवानं।
जुरै जुद्ध मै सुद्ध जे सावधान।।१०५।।
सजे सैगर वीर भूपत्त भारी।
महारथ्य पारथ्थ से अस्त्रधारी।।
सजै बाघ सेवी रवा के बघेले।
जिन्हौ जग मै षर्ग के ष्याल षेले।।१०६।।
सजे गौर भूपत्ति चंदेल साजे।
गहिरवार त्यों षोर गौतम गाजे।।
सजे भूप भालेसु लत्तान मट्टी।
रन अत्र सौ सुत्र की सैन कट्टी।।१०७।।
सजे भूप षीची सजे सोमवंसी।
जिनं क्रात्ति राजत ज्यौ राजहंसी।।
सजे रावत सूजेवसी भवाल।
जसी कर्न से वीर बानै विसाल।।१०८।।

।। छन्द : द्रुतविलंबित ।।

करचुली विलकैत त्रपं सजे। दिषत राजकुमार कु लोग जे।।
विसयने त्रप तौ मइ सज्जिया। सकरवार वलीकन बज्जिया।।१०९।।
दल बडे रघुवसिन के चले। जिनहि देषि गली महिपै हले।।
सजि नरेस चलेवउ गुज्जरं। दुवनये जिनके दिल हुज्जर।।११०।।
त्रप छतीस कुरी सजि कै चले। उमड़त दल बद्दल से भले।।
कियव सकर पूजन जाइ कै। छह दसौ उपचार चढाइ कै।।१११।।
गवर पूज गणेस मनाइ कै। निगम मंगल घोष बनाइ कै।।
धरिन ध्यान हियै अनुरागि कै। सुमन सिक्षत इक्षित मार्ग कै।।११२।।
दुजन दीरघ दान सबै दये। लहि गयंद कविंद षुसी भये।।
विविध बज्जही षन लल्जहि ११३

सकल भूप समाज सुहाइय। दल दरेरन डेरन आइय।।
मुदित सप्दरजग उजीरनै। सहित साह तने रन धीरनै।।११४।।
तिलक ता दिन किन्हिव राज को। सकल साहन वाहन साज को।।
पुनि हरौल थप्यौ निज फौज कौ। नृप अनूप—गिर महि मौज कौ।।११५।।
सुनत व्रद कविंदन के फिले। गुनन मडित पडित त्यौ मिले।।
सबैहि दान दिये सनमान से जगमगे जस जोर जहान मे।।११६।।

।। कवित्त ।।

भारे मतवारे बोज उज्जिल दतारे।
झूल झपकन वारे कारे कज्जल के नग से।।
पटकै न झटकि झमाकि भू झपटिया तै।
कट काट भट कवि मान कहै ठग से।।
मान बलबंड सुडा दडन उदडनि।
चिरावत इरावत को जोर जोम सग से।।
इंद्र से किंविद को दराज राज इद्रगिर।
नंदन निरंद नै करिंद कै यौ बगसे।।११७।।
झलमलै मोतिन की झालरै झलकदार।
झलकत झूल झूपि झूमत झुकत है।।
जिनके धरत पग धरनी दगत धिग।
धक्कन सौ धसक धराधर धुकत है।।
जिन्है गल गज्जत ही लज्जत दिगतगज।
भज्जत दिगीस तजि लज्जत लुकत है।।
तेरे दान वारन वर्धतै दानवारन।
हजारन कविदन के द्वारन दुकत है।।११८।।
हिमत बहादुर नरिंद वीर बगसे।
गिरिंदनि से गधर गइदनि के गोत है।।
जिनकी गराज गलबलनि दराज।
दिगदंती षलभल हल कंपत उदोत है।।
झूल झलमल पग गिर दलमल।
स्वास चलत हलत धन लहत नवोत है

सजे वीर गहिलौत गाइक्कावार।
भिरे भिम्म से कर्न से जे उदार।।१०४।।
सजे जैत से जैतवार पमारं।
करे सुद्ध जे जुद्ध मै जोर मार।।
चले वीर चावड से चाहुवानं।
जुरै जुद्ध मै सुद्ध जे सावधान।।१०५।।
सजे सैगर वीर भूपत्त भारी।
महारथ्य पारथ्थ से अस्त्रधारी।।
सजै बाघ सेवी रवा के बघेले।
जिन्हौ जग मै षर्ग के ष्याल षेले।।१०६।।
सजे गौर भूपत्ति चंदेल साजे।
गहिरवार त्यों षोर गौतम गाजे।।
सजे भूप भालेसु लत्तान मट्टी।
रन अत्र सौ सुत्र की सैन कट्टी।।१०७।।
सजे भूप षीची सजे सोमवंसी।
जिनं क्रात्ति राजत ज्यौ राजहसी।।
सजे रावत सूजेवंसी भवालं।
जसी कर्न से वीर बानै विसाल।।१०८।।

।। छन्द : द्रुतविलंबित ।।

करचुली विलकैत त्रपं सजे। दिषत राजकुमार कु लोग जे।।
विसयने त्रप तौ मइ सज्जिया। सकरवार वलीकन बज्जिया।।१०९।।
दल बडे रघुवंसिन के चले। जिनहि देषि गली महिपै हले।।
सजि नरेस चलेवउ गुज्जरं। दुवनये जिनके दिल हुज्जर।।११०।।
त्रप छतीस कुरी सजि कै चले। उमडत दल बद्दल से भले।।
कियव सकर पूजन जाइ कै। छह दसौ उपचार चढाइ कै।।१११।।
गवर पूज गणेस मनाइ कै। निगम मगल घोष बनाइ कै।।
धरिन ध्यान हियै अनुरागि कै। सुमन सिक्षत इक्षित मार्ग कै।।११२।।
दुजन दीरघ दान सबै दये। लहि गयंद कविद षुसी भये।।
विविध बज्जही षन लल्जहिं ११३

सकल भूप समाज सुहाइय। दल दरेरन डेरन आइय।।
मुदित सफ्दरजंग उजीरनै। सहित साह तने रन धीरनै।।११४।।
तिलक ता दिन किन्हिव राज को। सकल साहन वाहन साज को।।
पुनि हरौल थप्यौ निज फौज कौ। नृप अनूप—गिर महि मौज कौ।।११५।।
सुनत व्रद कविदन के फिले। गुनन मडित पडित त्यौ मिले।।
सबैहि दान दिये सनमान से जगमगे जस जोर जहान में।।११६।।

।। कवित्त ।।

भारे मतवारे बोज उज्जिल दतारे।
झूल झपकन वारे कारे कज्जल के नग से।।
पटकै न झटकि झमाकि भू झपटिया तै।
कट काट भट कवि मान कहै ठग से।।
मान बलबड सुंडा दडन उदडनि।
चिरावत इरावत को जोर जोम सग से।।
इंद्र से किविंद को दराज राज इंद्रगिर।
नंदन निरद नै करिंद कै यौ बगसे।।११७।।
झलमलै मोतिन की झालरै झलकदार।
झलकत झूल झूपि झूमत झुकत है।।
जिनके धरत पग धरनी दगत धिग।
धक्कन सौ धसक धराधर धुकत है।।
जिन्है गल गज्जत ही लज्जत दिगतगज।
भज्जत दिगीस तजि लज्जत लुकत है।।
तेरे दान वारन वर्धतै दानवारन।
हजारन कविदन के द्वारन दुकत है।।११८।।
हिमत बहादुर नरिंद वीर बगसे।
गिरिदनि से गधर गइदनि के गोत है।।
जिनकी गराज गलबलनि दराज।
दिगदती थलभल हल कंपत उदोत है।।
झूल झलमल पग गिर दलमल।
स्वास चलत हलत घन लहत नवोत है

अडि थल थल उमडत पलपल जिन।
छल छल मद महिदल दल होत है।।११९।।
हिमत बहादुर नरेस दान दै दै या जहान।
जाचकनि कौ दरिद्र झूरि राष्यौ है।।
भनै कवि मान वे दरेर दीह दाता देष।
क्रपन विधाता चिता चिंता चूर राष्यौ है।।
सक्त तनु सक्त धेनु सक्त सो रषाइ गेर।
सपत कौ ढेर सिधु बीच पूर राष्यौ है।।
ध्यान धरि बेर वित्त के उबेर को।
कुबेर दूर राष्यो है सुमेर पूर राष्यौ है।।१२०।।

॥ दोहा ॥

हिमत बहादुर वीर कहि तीरथ तो इन षेक।
सब राजनि मिलि राज को कियो राज अभिषेक।।१२१।।

इति श्री मत्प्रचंडः दोदंड कोदंड षंडि–तारामंडल सकल भूमंडलाषंडल श्री महाराजाधिराज हिमत बहादुर वीर प्रतापोल्लासे अनूप प्रकासे राजाभिषेक वर्ननं नाम तृतीयः प्रकासः ।।३।।

।। धर्मधुरंधरत्ववर्ननं ।।

।। दोहा ।।

निज भुजदड उमंड सौ, दवन प्रचड दवाइ।
मडि धरन मंडल सकल, डड लिये वह राइ।।१२२ ।।

।। छदं : हरगीतका ।।

राजेद्रगिर राजेंद्र को लषि सून सूर सिरोमनी।
मनसूर अली उजीर नै निज सैन को विरच्यो धनी।।
लहरै प्रताप छटान की छहरै छ चौक दिसान मैं।
झहरै झपेटिन को झिलै फहरै फतूह निसान मै।।१२३।।
भहरै भजै भय मानि अरि ढहरै न घन घमसान मै।
घहरै घमडन की सुनै ठहरै हियै अवसान मै।।
बजरग रग उमंग जंग अभग मगल रूप की।
वर बरनियै विरदावली हिमत बहादुर भूप की।।१२४।।

।। छदं : संजुता ।।

हिमित बहादुर भूप है। वह जग जड़क जूप है।।
बलबड निज भुजदड सौ। त्रप दड लीन्हे दंड सौ।।१२५।।
भुवषड मडल मंडनं। उद्दड पल दल दडन।।
रन ऊर्ज सूर्य सरूप है। धनि धाकलौ धुव धूप है।।१२६।।
छहरै छटा तप तेज की। फहरै प्रताप मजेज की।।
अगिवै कु अंग अँगिरेज की। लहरै सु लपट अवेज की।।१२७।।
तमत्तोम लौ कुफरान के। मदत्तोर जोर प्रभान के।।
अरि लोह लगर लूक से। अवलोकि लुकत उलूक से।।१२८।।
अरिबिद ब्रद कबिद्र से। षुलि इदिराल पइंद्र से।।
फूले सु पाइ गयद से जस पुज गुज मलिंद से १२९

सब सुह्रद लोग बिलोकियौ। आलोक कोक बिलोकि ज्यौ।।
उमराउगन रन बंकुरे। जन कुमुद कर लगि ककुरे।।१३०।।
न्रप चपे चोप चबाइ कै। कुवलै सु जिमि सकु चाइ कै।।
इम भयौ भूप अनूप कौ। तप तेज जिम रव धूप कौ।।१३१।।

।। छन्द : रामलीला ।।

भुव भये भूप अनूपगिर प्रगट्ये प्रताप अतंक।
सब भूप भरके भूप रहिं भय मान ससक ससक।।
कछु करी मन मै ठसक जिन जितिन हिते गनमार।
डंड डंडि उमडितै न्रप छन्द दीन सुधार।।१३२।।
जस करे जाहिर जगत मै बस करे सत्रु अभग।
अवध आए न्रप समेत नवाब सफ्दरजग।।
भए मान तपहू ते अति अधिक सुद्ध सनेह।
स्वामि धर्म प्रमान लखि सब सौप दीन्है गेह।।१३३।।
स्वर्ग को कछु काल पीछे गयो तन तज वीर।
तासु तात सुजातदौला भो नवाब उजीर।।
प्रथम ते दसगुनी तेऊ लगे मानन प्रीत।
वह हरौली मालकी वह वही भाइप रीत।।१३४।।
कछुक काल गये सु गंगा तीर पै बरजोर।
लषि लक्षिन दक्षि के ढिले दलघोर।।
जया आपा आप दत्ताजी पटेल सुदेस।
जुरे जनकोजी तहाँ पुनि रामचन्द गनेस।।१३५।।
इन्हीं आदि गजादि दल जुत सिमिटि सब सिरदार।
तेज तपती जम कि जपती लगे कर्न उदार।।
रुद्र रूप अनूपगिर तह भूप मन सिरमौर।
सुनत सहसा साहसी तिन पै करीं उठ दौर।।१३६।।
तुबक तीरन मार वीरन सुभट भीरन झेल।
सेल्ह ठेलनि कहि उठेलनि वर्ग षेल निषेल।।
ध्रम ध्रामनि गर्व गजन कियौ सत्रुन केर १३७

॥ छन्द : हरगीतका ॥

जो रावरी रज राषि इन तोर। सु राषि उजीर कौ।
बस राषि अरु जस राषि भुव रस राषि निज रनवीर कौ॥
दल दाषिनन के खग षिलाइहि लाइ फेर मिलाइय।
भाउ बली विस्वासराइ जु ताहि पाछे आइय॥१३८॥
सब सैन दष्षिन की झिलीउ ढिली दिली पर चालियं।
भुव करी जप्त उजीर तब पति पातसाही पालिय॥
बल व्रद्ध निद्ध समृद्धि विद्ध प्रसिद्ध सिद्ध सनूप की।
बर बरनियै बिरदावली हिमतबहादुर भूप की॥१३९॥

हिमित बहादुर भूप है।
रन मुद्द रूप सनूप है॥
दल दीह दषिन के गजे।
दिल्लीस तजि दिल्ली भजे॥१४०॥
तह स्वामि धर्म सम्हारिय।
जिह जोग जस जस धारियं॥
विवसाइ वीर सुभाइय।
हिन सौ उपाइ उपाइय॥१४१॥
दल वतन तै बुलवाइय।
मुगलानि दल सिमिटाइयं॥
सज अटक कटकहि पार तै।
रन चटक षटक षोधार तै॥१४२॥
सिमटे सुभट सिरमौल है।
तहँ भए भूप हरौल है॥
दल दीह दिल्ली के पिले।
जुरि साहि सौ सिगरे मिले॥१४३॥
तह जुरे मनसिबदार है।
जे साहि के सिरदार है॥
रन ए उदार उदार है।
जे जोम जस दिलदार है १४४

वह सेष सैयद षान है।
मुगलान ज्वान पठान है।।
सक अग्र भूप अनूप है।
जिन रचे रन अब कूप है।।१४५।।
लषि पातसाही सैन की।
प्रगटे सु मनह प्रलैन की।।
दह दष्षिनी क्रम कॉधि कै।
रन रचिव सैगर बॉधिकै।।१४६।।
जिम दीह दष्षिन की अनी।
कवि कौन बर्नि सकै मनी।।
जनु घोर घुंड घटा घनी।
घहरात घन पथ मै बनी।।१४७।।
बहु रंग अंग तुरंग है।
जह जनु उमंग कुरग है।।
जह गजत मत्त मतंग है।
गिरराज अग उतग है।।१४८।।
फहरै अनेक धुजान की।
ठहरै विमान समान की।।
लहरै लगै पवमान की।
घहरै सु वीर भुजान की।।१४९।।
धमकै सु धौसन की मढी।
झमकै सु जोधन की बडी।।
दमकै क्रपान प्रभान की।
चमकै मनो चपलान की।।१५०।।
दल दीह दष्षिन देषियै।
जनु उदधि उमंडिउ देषियैं।।
जह ग्राह गाइकवार लौ।
बनि बाघ वीर बिसार लौ।।१५१।।
पुट भेद पटल पटैल से।
रजह सैल से

हुर मकर हलकर से रहै।
जलधार धार करौल है।।१५२।।
हुम से तिमिगल होसले।
जनु घुमड घूमत भ्वोसले।।
कल्लोल कदम प्रवर्त्त है।
जह ओटकर आवर्त्त है।।१५३।।
हिंदवान पुनि तुरकान के।
जुग कटक जुग तट सान के।।
दल दष्षिनी दरयाउ मै।
जुरि जोध भरि भरियाउ मै।।१५४।।
तह न्रप अगस्त मुनिंद लौ।
चहि समुद सोषन बिंद लौ।।
वठि प्रथम पैठे सान लौ।
कर न्रप अनूप निसान लौ।।
पुनि कोप भट तुरकान के।
जे करन घन घमसान के।।१५५।।
तह भएेउ सगर घोर है।
जग जासु जाहिर सोर है।।
रूपास्त्र सस्त्र सबै चले।
असि सेलह घाउ घनै घले।।१५६।।
गज बाजि भट कटि पटि मही।
जनु श्रोनि की सरिता बही।।
रन तमकि तुरकनि जै कर्यौ।
दल दष्षिनी बहु संघर्यौ।।१५७।।
हिंमित बहादुर वीर नै।
तह रचिव जस रनधीर नै।।
जिन अस्त्र इन दल डारियं।
तब तिनहि इनहिनि मारियं।।१५८।।
जिन करी न्रप सौ दीनता।
जिन छत्र की लषि छीनता

मल्लार वा वह दष्षिनी।
लाचार वचन परिष्षिनी।।१५९।।
ते सहित सैन बचाइ कै।
न्रप दिऐ ग्रह पहुँचाइ कै।।
जिन लयो न्रप को बीच है।
तिन की बची रन मीच है।।१६०।।
भाऊ बली विस्वासरा।
जूझे बली बलवंतरा।।
समसेर बीर बहादुर।
कटि छत्र धर्मा की धुर।।१६१।।
जूझे सबै सिरदार है।
नामी जे वीर उदार है।।
विस्वासरा जब जूझिगे।
सुरलोक पंथ अरुझगे।।१६२।।
दल भज्जि जे रन को डरे।
सब पकर तुरकन तै धरे।।
मुगलानि के परिबंद मे।
नर नार जे दुष दंद में।।१६३।।
हिंदू हजारन आदमी।
षल चहत धर्म करयै कमी।।
लाषन रुपैयन दे महा।
दष्षिनीउ बोलि लिये तहा।।१६४।।
मुगलान बंध छडाग कै।
निज पास तिनहि बुलाइ कै।।
तिन संसकार कराइ कै।
नव वसन वर पहिराइ कै।।१६५।।
दरसाइ नष सिष वर्च कौ।
मग बहुत दै दै षर्च कौ।।
दए जीवनदान बिदा किये।
पहुँचाइ दष्षिन कौ दिऐ १६६

हिन्दू सुधर्म निबाहिय।
जग सुजस साषि सराहियं॥
न्रप तेज लषि तुरकानि कौ।
पाल्यौ सु धर्म हिंदुवान कौ॥१६७॥
सिवरूप भूप अनूप है।
जगमगत जनु जस जूप है॥
भुव उत्तर न्रप गजराज तै।
रन दूढ लोथ समाज तै॥१६८॥
विस्वासरा की देह कौ।
करी पालखी करि नेह कौ॥
न्रप बैन सुभटन सोक है।
उर ओक सोक महा गहै॥१६९॥
ऐ पेसवा बलबत है।
जिन किऐ पुन्य अनंत है॥
भुव धर्म कर्म सु थापिय।
कलि को अधर्म उथापिय॥१७०॥
जिन पाला हद हिंदवान की।
तोरी चूम तुरकान की॥
तप तेज भुव परजंत है।
तिन हने अरि अगिनत है॥१७१॥
डडे सु दुवन तुरत है।
मंडे मही दुज सत है॥
जनु परसरामहि अवतर्‌यौ।
भुव भार षल दल सवर्‌यौ॥१७२॥
कासी प्रयाग गया थली।
जिन विदित वृत्ति भली तली॥
भुव तीर्थ छेत्र जहाँ जहाँ।
किय सदावर्त तहाँ तहाँ॥१७३॥
मम सिष्य ऐ [illegible] है।
भट [illegible] समान है

जिन अषिल षल व्रप षलभले।
दुजदेव भूतल झलमले।।१७४।।
इम गुन कलप अलाप कै।
भरि नयन नीर विलाप कै।।
वह चिता चदन की रची।
सिगरे सुगधनि सौ सची।।१७५।।
अन्हवाइ पट पहिराइ कै।
तिल चदनादि लगाइ कै।।
धरि चिता दष्षिन नाह की।
कीन्ही क्रिया सब दाह की।।१७६।।
जूझे जिते सिरदार है।
नामी जे वीर उदार है।।
तिनकी सु दाह क्रिया करी।
जिह भात वेदन मै धरी।।१७७।।
धर धर्म धार्यौ रूप सौ।
को होत भूप अनूप सौ।।
इम धर्म को प्रतिपालक।
जग निगम धर्म अतालकं।।१७८।।
निज स्वामि धर्म सुधारि कै।
पुनि हिदू धर्म सम्हारि कै।।
करि छत्रपन की औधि कौ।
चलि सदल आए औधि कौ।।१७९।।

।। दोहा ।।

सूबे कौ आऐ व्रपति, ऊवे उर आनद।
हूवे कौ अबहर दरस, ऊवे प्रेम परद।।१८०।।

इति श्री मत्प्रचंडः दोर्दंड षंडितारातिं मंडल सकल भूमंडलाषंडल श्री महाराज हिमितबहादुर वीर प्रतापोल्लासे अनूप प्रकासे धर्मधुरंधरत्व वर्ननं नामं चतुरीयः प्रकासः।।४।।

।। पंचम प्रकास ।।

।। सूपा कछार जुद्ध वर्ननं ।।

।। छन्द : हरगीतका ।।

कछु काल पीछै गऐ बिंद्रावन विहार निहारनै।
मदार से मदिर जहाँ बदारु ब्रदारक घनै।।
जिहि भूम दरसत जरहि परसत सकल सरसत सिद्ध है।
जह बसत नर के नसत पातक लसत मगल रिद्ध है।।१८१।।
जह वट विरागनि ज्ञान जागनि भक्त जागन जाग ही।
बन बन तडागन बाग बागनि रागरागनि राज ही।।
वट व्रक्ष वेलिन नित नवेलनि चलि चमेलिनि मेल ही।
जह मुक्त मुजनि गुंज पुंजनि कुंज कुजनि केल ही।।१८२।।
परिपल निछोरनि झुकि झकोरनि जल हिलारनि षेल ही।
ब्रज दोर दोरन चहू ओरन षोर षोरन षेल ही।।
फिर जमुन जीरन जमनि वीरन तीर तीरन त्रास ही।
जह सर समीरन स्याम नीरन पाप भीरन नास ही।।१८३।।
बलबीर जहँ गंभीर धीर समीर तीर सदा बसै।
बिहरै लियै व्रषभानजा लषि भानजा लहरै लसै।।
जह मंद मद सुगंध सीतल गंध बंधु सदा बहै।
म्रदु मजु वंजुल कुज कलि अलि पुज गुजत ही रहै।।१८४।।
जहँ कुसुम कलिकनि झूम झलकनि काम वलकनि जोर है।
छवि छूट छलकनि पलक पलकनि लषत ललकनि कोर है।।
इमि अमित व्रंदावन महा महिमा कहा कुरु गाव ही।
निज सहस मुख सौ सहस मुष नित कहत पार न पाव ही।।१८५।।
तहँ रचिव भूप अनूपगिर हर रूप के रस रग मै।
प्रज्ञान मै संज्ञान वर विज्ञान ध्यान उमग मै।।
अनुरक्त सक्त प्रसक्त जक्त विरक्त भक्त सनूप की।
बर बरनियै ——— हिमत बहादुर भूप की ।१८६''

॥ छन्द ॥

हिमित बहादुर भूप है।
जनु धरिव उद्धव रूप है॥
रस रहस रगनि मै रच्यौ।
श्री कृस्न के सुष मै सच्यो॥१८७॥
तिह बास व्रदावन कियौ।
धन मन मुकुदहि मै दियौ॥
तहॅ रची मजुल कुज है।
गुजत जहॉ अलि पुज है॥१८८॥
गुंजत जहॉ जमुनोद की।
छहरै छटा मन मोद की॥
फहरै फुहारै फरस मै।
नहरै कहा दुष दरस मै॥१८९॥
झिमि झिमि सु जलकन वर्ष ही।
तिमि तिमि सु लषि हिय हर्ष ही॥
क्यारी सुन्यारी फबन की।
त्यारी सुप्यारी छबिन की॥१९०॥
फुलवाद फूलन फूल कै।
मन हर ही झूलन झूलि कै॥
छवि छलक छलकत राज सी।
जहॅ छहौ रितु रितुराज सी॥१९१॥
तहॅ जाट जाहिर रिघ है।
मिलियो जवाहरसिह है॥
सनमान बहुत बढाइ कै।
निज प्रीत अति दरसाइ कै॥१९२॥
वह भरतपुर यह नाम कौ।
लै गयौ अपन धाम कौ॥
जहॅ बहुत दिन बसते भये।
आनंदपुर लसते भये॥१९३॥
उत एक सठ वैरागिय।
उर ईरषा मति पागिय

मन मूढता धरि आ करी।
तिन सुहृद भेद कथा करी।।१९४।।
मन मै जबाहरसिह कै।
अन रोच बठे कुरिध कै।।
छल छुद्र नीत बनाइ कै।
दउ ओर बेर कराइ कै।।१९५।।
तिन आसुरी सठता करी।
निसि दौर दसह दगा करी।।
तब व्रपति हय असवार ह्वै।
सत पंच सुभट तयार ह्वै।।१९६।।
लै वीर निकसे भूप है।
व्रप नीति यह अनुरूप है।।
सहिजादगिर सिरनेत भो।
तहँ रूपिल राइ लेत भो।।१९७।।
घमसान हित असमान कै।
सिव पूज भेद विधान कै।।
तन मै विभूत चढाइ कै।
. . . . ।।१९८।।
जिम कन्ह भिर कनज्ज मै।
प्रथिराज हित रन रज्ज मै।।
व्रप पंग दल बल रुक्किय।
छत्र धर्म धरित मुक्किय।।१९९।।
इम समर दूलह सज्जिय।
बाजे जुझाउ बज्जियं।।
पैठ्यौ सु दल मह जाट के।
जनु षुले जमपुर फाटकै।।२००।।
किरवान रन झुकि झार कै।
सेल्हन सुभट बहु मारि कै।।
हय गय सु हनि महि डारियं।
व्रप जाट सैन सहारिय २०१

रन षाइ घाइ अघाइ कै।
षल दलन षूप षवाइ कै।।
फुलिव पलास वसंत मै।
इमि लसत जुद्ध जुरंत मै।। २०२।।
घमसान नयन गजत है।
हंकरत जनु हनुमंत है।।
रन ठट्ट जट्टनि जुट्टियं।
तिल तिल सु तन रन टुट्टिय।। २०३।।
रूपि कुँवर इमि रन साज मै।
सिर दियव तिह गुर काज मै।। २०४।।

।। दोहा ।।

सगर कर सहजादगिर दियव स्वामि हित सीस।
रीझ गिरीस असीस दै करयै गगन को ईस।। २०५।।

।। कवित्त ।।

लोह लहरान लगे सुभट सुहान लगे।
पान लगे घलन दिषान लगे काल मै।।
षान लगे अत्रन अघान लगे घाउन सो।
जन लगे टूटन समान लगे षाल मै।।
लैन लागे आगे चल इंद्र साहिजादै।
साहिजादगिर दैन लागे देह करवाल मै।।
ईस लागे दीसन असीसन मुनीस लागे।
सीस लागे गुहिन गिरीस मुड माल मै।। २०६।।

।। दोहा ।।

कनवज्जहि जिम कंन्ह भिर, पहुचायो प्रथिराज।
कुप्प कुँवर साहजादगिर इम कीन्हेउ गुरकाज।। २०७।।

।। छन्द : श्रवन सुषद ।।

इत त्रपदेव देव सहाइ। जिल्ले ग्वालियर के जाइ।।
तह प्रचड जाहिर पेसवा बलिन्बड २०८

तानै महतजी इहि नाम पठ्यै सैंधिया बल धाम।
करिकै सुधवडौ सनेह। प्रभु बुलवाइयौ हित ऐह।। २०९।।
सूपा कछार पुनि भॉडेर। ऐरछ अवर गैरह गैर।
कैइक परगने तिह तीर। दीन्हे नेह कर जागीर।। २१०।।
तह सूपा कछार सुदेस। त्रप के परे छेरा बेस।
सत्रुन सुमिर पहिलौ वैर। कीन्हो जग को तहँ घैर।। २११।।

।। दोहा ।।

बालाजी गोविंद के कृस्नाजी तहँ ऐन।
जुर पंडित गाजी गजे, साजी साजी सैन।। २१२।।

।। छन्द : श्रवन सुषद ।।

ताजी बड़ी साज कै सैन। आऐउ कटक चढ रन लैन।
त्रप की निरष्योरी फौज। रनकी चढिय मन की मौज।। २१३।
पहिलौ सुमिर सुद्ध विरुद्ध। कीन्हौ चहत जुद्ध निरुद्ध।
त्रप कछु पर्‍यै आपत काल। बिगर्‍यै हैम हय गय जाल।। २१४।
भूत सौ भरतपुर ही माल। जुरत हि देइगो त्रप चाल।
इहि विधि बाध मन मै बाध। लीन्हो गेर तिन दलकाधि।। २१५
त्रप को निरष दुचतो नेक। सबसुषरइ तहॉ अवनेक।
बोल्यौ वीर रस के बैन। केतिक सत्रु की यह सैन।। २१६
छन मै छलिन करिहौ छार। मारहु सुभट व्रद पछार।
प्रभु परताप सो महाराज। लैहौ जित्त सत्रु समाज।। २१७

हिमित बहादुर सो वीर।
हिमित धरन को रनधीर।।
जाके धर्म धुज फहरात।
रन तज भज्जि अर भहरात।। २१८।।
राषे क्रपा केसव देव।
जाको दबत देव अदेव।।
कीन्हे आप ऐसे धर्म।
जाहिर जगत जे सतकर्म।। २१९।।
प्रगटे पद्दुम पुन्य उदोत।
जुरतह जरत अरि के गोत

बल बिसराइ धीरज ऐन।
सबसुषराइ कै सुन बैन।।२२०।।
गरजे सकल वीर बनाइ।
भल भल कही सबसुषराइ।।
नौने साह त्रपत ललाम।
तहँ उमराउसिंह सलाम।।२२१।।
बोले विनय बैन वरिष्ठ।
हौ गुरु आप मेरे इष्ठ।।
हम हित आप साह रिझाइ।
मनसब दीह दिय बगसाइ।।२२२।।
प्रभुपन आप के परताप।
बॉधी वीरता की थाप।।
तै रे चरननि फतूह।
नामहि लेत होत फतूह।।२२३।।
केतिक दष्षिनी दल दीह।
जै है हुमस हय की टीह।।
इम सब सूर जे सतपच।
बोले मुद्ध जुद्ध प्रपच।।२२४।।
सुन त्रप हरषि तेज प्रचंड।
जनु रन रुद्र रोष उर मंड।।
फरके होर दड प्रचड।
तरके सुक्ष मुक्षक दंड।।२२५।।
सज्जे सुभट सग सतपंच।
जे जन नमहि लेषत रच।।
तब त्रप वीरभद्रह ध्याइ।
सुन मुष फिर्‌यो रन मुष जाय।।२२६।।
सबसुषराय भेट सिरमौर।
हुमसा हुमस होय हरौल।।
सनमुष भयौ वढि अगवान।
फहरत लिये सुभ्र निसान २२७

झलमल कनक करतल आन।
हर वरदान को जनु पान।।
माही को निसान महान।
झलमल पट जराऊ सान।। २२८।।
जहँ सुभ सुक्ष लक्षित मक्ष।
जनुजन पक्ष को परतक्ष।।
इत दल सज्ज चढिव अनूप।
धरनी धुकत जातप धूप।। २२९।।
उत दल दष्षिनी सिरमौर।
कृस्नाजी पिल्यौ कटि हौर।।
तमकौ तिमि बुंलाकी राम।
बढि दिवान जुद्ध सनाम।। २३०।।
पडत भोजराज झमकि।
आयो तुरीय तेज तमंकि।।
जालिम जनार्दन वीर।
रन मे रचित भौ रन धीर।। २३१।।
कहँ लौ कहौ नाम अपार।
उमडे सुभट पच्च हजार।।
लषि उत दीह दल को ठेल।
झपटे सुभट इत बग मेल।। २३२।।
तहँ बढ प्रथम सबसुषराइ।
झलक्यो झपट हय झमकाइ।।
दल पै झुमड झूखि सार।
मुह मुह षाइ षाय अधार।। २३३।।
ठाकुर सरुपसिंह सपूत।
रन मे रच्यौ रुद्र अकूत।।
कानू गोवड़ौ बलबड।
षडित करे सत्र प्रचड।। २३४।।
सेगर कसराज प्रमान।
तहँ कडि कप्प कस्यौ किरवान

तिन भोपालसिह कछवाह।

दलमल कर्‌यौ अर दल दाह।। २३५ ।।

बड परिहार दलपति राय।

षल दल षलाल की नय पाय।।

होडत उमड हाजी षान।

अरि कुल को कियौ कतलान।। २३६ ।।

बडि उमराउसिह परिहार।

रन असरार झार्‌यै सार।।

नोनेराय राजा बीर।

डारे चीर लौ अरि चीर।। २३७ ।।

कीरतसिंह चढि चौहान।

अरि दल दलिव करि किरवान।।

कीन्हौ रामसिंह जु गौर।

अरि सिर तमक तेगन तौर।। २३८ ।।

झपट्‌यौ मीर फाजिल बेग।

दीन्ही सत्रु के सिर तेज।।

चटक्यौ बालसिंह तुरंग।

बहसा बहस कीन्ही जग।। २३९ ।।

अत्रन अरिन सिर को टोक।

जस कर जूझिगो सुरलोक।।

को कहि सकहि गुन तजवीज।

सबसुषराय जासु भानीज।। २४० ।।

छत्रिय धर्म धरिजे सूर।

तेग न तजत तन रन चूर।।

पालत स्वामि धर्म गरूर।

तिनको स्वर्ग सुष भरपूर।। २४१ ।।

सबसुखराय को तहँ भाय।

पिलि बासंतराय सु आय।।

सत्रन मारि अत्रन वीर।

तन तज गइय सुरपति तीर २४२

पैठ्यौ प्रेमसिंह चंदेल।
अरि को हनिव ठेलाठेल।।
पिलि उमरावसिंह बुंदेल।
षडिव षलन षग्गन षेल।। २४३ ।।
यह बुंदेल बंस सुभाय।
हरि लौ हनत अरि को जाय।।
रन मुष कालहू कि न आय।
झपटहि बाज सो नडराय।। २४४ ।।
तिमगिर नाम वीर अडोल।
झपटे सुभट हर हर बोल।।
सरपटो रूपगिर बलवान।
किन्हिव घोर घन घमासान।। २४५ ।।
राघौगिर गुसाईं वीर।
सोष्यौ सत्रु को मुष नीर।।
मौहरिगिर भिर्‍यौ रनधीर।
पहुच्यौ जूझ सिब के तीर।। २४६ ।।
दर्गागिर सु जालिम जंग।
कीन्हो अरिन को मुष भग।।
सीतल गिर असीतल बुद्ध।
उद्धत क्रुद्ध कीन्हो जुद्ध।। २४७ ।।
बठि गनेसगिर गलगज्ज।
घाले सेल्ह अरि पै सज्ज।।
करि घन नाद लौ घनघात।
घाइल घूमि भूमि पपात।। २४८ ।।
तीक्षन मिरचगिर अरि गेर।
रन झुकि झरियौ समसेर।।
लरजे कृस्नगि तन उझि।
जननिव जिष्न के पुर जुझि।। २४९ ।।
रन में रत्नगिर भट रत्न।
अरि कोप करिव जम पु जत्न

जब चढि परिव अरि दल भार।
तब नृप कोप कीन्ह अपार।। २५० ।।
हय झमकाय काढि क्रपान।
जनु जमदड जननी जान।।
वाहन वाह भूप दु बाह।
जिमि प्रथिराज राजति माह।। २५१ ।।
कट भट रहत केवल रुड।
महि पटि जात मुडहि मुड।।
कुजर ब्रद कटि तन तुड।
लोटहि कटतु भुम भसुड।। २५२ ।।
हय कटि होत साफहु टुक।
हुडकै कोन हनुमत हुंक।।
नृप उस चपल चपला कौध।
निरषत रहत सुर चकचौंध।। २५३ ।।

।। दोहा ।।

रन अनूपगिर भूप की, सह्य कौ समसेर।
हेरि हेरि अरि घेरि कै, सेर किये जिहि जेर।। २५४।।

।। कवित्त ।।

भूत भरुहान हंस मीसत मसान।
जुरि जोगिनी अघान गान रचना रचत है।।
थाके मसहारी भरौ भीर कलकारी।
प्रेत देत फिरै तारी सभु तारीउ मचत है।।
भूपति अनूप की कढत करवाली तब।
लाली पर जात प्रलै काली सी मचत है।।
दै दै करताल काक पालका बजाइ।
मुडमालिका पहर महाकालिका नचत है।। २५५।।

।। दोहा ।।

नची क्रपानी नृपति की मची रार असरार।
रची सक लषि तची सार की झार २५६

।। छन्द : श्रवण सुषद ।।

तडपै तोप तुवकै जोर।
माची तहा तरभर घोर।।
गोली गजब गोला गोल।
बरसै वज्र से झकझोल।। २५७ ।।
सक सक चलत ससकत बान।
धसकत सकत तनह आन।।
कसकत नाह लग किरवान।
मसकत मुंड क्षरि गिरबान।। २५८ ।।
करकत हाड टरकत मुंड।
सरकत प्रान फरकत रूड।।
अललल चलत श्रोन प्रवाह।
वललल भभकि बोलत घाउ।। २५९ ।।
धमकत सेल्ह औ तरवार।
झमकत सार सारन झार।।
बहसा बहस बाहै वार।
षमसा षमसा माची मार।। २६० ।।
रघुपति अग्र जिम हनुमंत।
भजत अरिन को बलवंत।।
लिपट फिरन नृप के अग्र।
सबसुषराय वीर उदग्र।। २६१ ।।
नट से नटन झपटत मेल।
दपटत दुवन षग्गन षेल।।
पटकत अरिन झटकत पाय।
षटकत सबन सबसुषराय।। २६२ ।।
करवर छीन सो अरि छीन।
तलफत मीन ज्यौ सर छीन।।
चटकत चटक सो जिह ओर।
लटकत भजत रिपु तिहु ओर।। २६३ ।।
अटपटसिंघ को लषि सान।

मचत गज

हर बलबीर इमि हुमसाय।
अरि को दिअव दल बिचलाय।। २६४।।
लीन्हे लूट हय गय जान।
छीने नौवद निसान।।
लीन्हे पकर बहु सिरदार।
बहुतक वीर डारे मार।। २६५।।
इन सग पच सै भट ऐन।
लीन्ही जीत नृप सब सैन।।
घाइल भये सबसुषराय।
सुनि नृप तुरत डेरु आय।। २६६।।
मुष मे सेल्ह को सुभ छाय।
छुटकत छतिज छिति छवि छाय।।
भरि भरिव भरि जनु वह राय।
छलक्यौ छत्र धर्म प्रभाय।। २६७।।
लषि अति सो प्रसन्न सरूप।
मानत भये भाइप भूप।।
राई दई रन की ताह।
उद्धत जुद्ध सुद्ध सराह।। २६८।।
लिय लघु सैन जंगदराज।
जिमि मगधेस सो जदुराज।।
अर्जुन ज्यौ विराट चमूप।
जीते सकल कुरु दल भूप।। २६९।।

।। दोहा ।।

सुभट पचसत सोहने, पच सहस रनधीर।
जुद्ध सपत की नृपत की, पति राषी जदुवीर।। २७०।।

।। कवित्त ।।

बिधुकैसै बंधु गंधमादन से बधुर।
धुरधर मदध साजि सिधुर सिधारे है।

घोरनि घुमडि झुमडि झझा पौन लौ।
घमड सो उमडि तन दष्यिनी हकारे है।।
हिंमित सौ हिंमित बहादुर नरेस लै कै।
पंच सै सुभट पच सहस बिडारे है।।
तेज उल छारि करि सेना छार छार करि।
सूपा के कछार में पछार अति मारे है।। २७१ ।।

।। दोहा ।।

बगडिव गोडहि भूल सठ, कौनहि छोडहि छौन।
गोडहि नृपति अनूपगिर, वोडहि संगर कौन।। २७२ ।।

इति श्रीमत्प्रचंडः सकल भूमंडलाषंडल
श्री महाराज हिंमित बहादुर वीर प्रतापोल्लासे
मान कविंद्र वाग्विलासे अनूप प्रकासे सूपा
कछार जुद्ध वर्ननं नाम पंचमो प्रकासः।। ५।।

षष्ठ प्रकास

।।गुलाम कादर वध वर्ननं।।

।। छन्द : परी ।।

यह सुन सुजातदौला नवाब।
लघु सैन लीन बड सैन आव।।
कर बहुत रीझ पुनियत सिषाव।
निज भले दीन मानस पठाय।।२७३।।
बुलवाइ लीन हित सौ नवाब।
न्रप गयौ तासु रुचि लष सिताव।।
सुन वीर न्रपहि आवत उजीर।
उमग्योउ उछाह को धरहि धीर।।२७४।।
कढि कोस लषनहु तै उमाह।
चलि मुदित अग्र दै लिअव ताह।।
उतरयै गएद तजि प्रीत लीन।
उर सौ समेटि उर मै कीन।।२७५।।
तानी वियोग छाती जुडाइ।
तहँ लिए सथ्थ हाथी चढाइ।।
चढ न्रप नवाब ऐकहि गयेद।
पुर चले हसत विलसत अनद।।२७६।।
लषनऊ मद्धि कीन्हो प्रवेस।
वरनी न जाइ सोभा सुदेस।।
तहँ रीझ रीझ बगसे उजीर।
हाथी सु हेम हय हीर चीर।।२७७।।
मुकतान माल सिर पैच दीन।
कलगी जराउ बगसी नवीन।।
मनसूर अली जिम करिय प्रीत।
इम इनह कीन्ह मालिक प्रतीत २७८

।। छन्द : हरगीतका ।।

भुव सकल अतरवेद की सौपी सुनै पल डगमगे।
तिम देस दष्षिन के दिऐ जे उमैड मैडे सौ लगे।।
मालिक उजीरी को कर्‌यौ षालिक अतालिक ठानि कै।
पालिन मनी को मानि पालिक अरि अनी को जानि कै।। २७९ ।।
इमि कही वीर उजीर नै यह भूम सर्व रखाइऐ।
तुम बिन धरा प्रतिपाल लाइक को सहाइक पाइऐ।।
सुनि बैन त्रपति नवाब केर नवाब के अति आव के।
महताब सुजस किताव के समताब के महताब के।। २८० ।।
उमड्यौ उमड घमड सौ बलि बड त्रपदल दीह लै।
अरभराइ भजे सवै सुनि रथ राइ मही हलै।।
तप सुद्ध बुद्ध त्रिसुद्ध दुद्ध जुद्ध रूद्धत रूप की।
बर बरनियै बिरदावली हिमति बहादुर भूप की।। २८१ ।।

।। छन्द ।।

हिमित बहादुर भूप है।
छिति छत्र धर्म सरूप है।।
जहँ उतर उत्तर दिनेस जा।
. आदेस कीन्हे पेस जा।। २८२।।
झासी झपेट मकोर कै।
बल सहित बाह तोर कै।।
छिति छीन दषिन सो लड़ी।
लिष बगस वीरन को दई।। २८३।।
छत्री सु राना छत्रपति।
त्रप जाट वसन छत्रपति।।
बलबड ताहि उडिकै।
जस मड छडिव डडि कै।। २८४।।

।। दोहा ।।

राजा रानै राइ सब, डडि लिऐ बलबड।
सेवा मै राषे सदा जो रन मडल चड। २८

।। छप्पै ।।

महाराज इह भात गयव गगा नहान कह।
किय नवाब सुरलोक गमन यह षबर आइ तह।।
सुनि उर दुषव पुन्य तिन हित त्रप कीन्हे।
हीर चीर हैम रथ्थ हथ्थिपतह दीन्हे।।
तब फिर नवाब उज्जीर पदं इत आसवदौला भऐ।
लीन्हे बुलाइ चित लाइ त्रप लष्षनपुर लष्षन गऐ।।
तह डडिन किय डंड छरे रानाजी आऐ।
इनके घर महमिलन हेत ऐ पकरन ल्याये।।
लगि चुगलन के कहे कछुक रुषरुषत किन्हव।
इन यह जानी तबहि दिलहि दुष दुषित किन्हव।।
तब उर सम्हार निज धर्म कह्यो या सम धर्म सजा न कह।
याते नरेस उठि आइय बरस ही रस रसधान कह।।

।। छन्द ।।

तहां जवाहरसिंह भूम पै सैन सहित उठि धाऐ।
उर आनी विईमानी की वह षबर रोष रुष छाऐ।।
साथ नवाब नजबषा को लै बैर भली विधि लीन्हे।
सैन ढहलै जट्ट देस दपट सकल कर दीन्हे।।
श्री केसवहि हरिदेवहि नीच बीच मै दै कै।
करीह तीजो दगा जाट सौ वही बातचितै कै कै।।
समुझ देवनै भूप सुद्ध ताकि लोदी को दीन्हो।
तहाँ आ पुनि मिले आइ त्रप बडो मोद मन कीन्हो।।
अति प्रसन्नता दृढ अनन्यता भई इष्ठ को पायौ।
अक्षनि सो लक्षत जन रक्षक प्रेम तक्षन .. ।।
फेर नवाब नजबषां तौ इहि बीच बिनसाये।
सज सैंधिया महत्तजी दल चढि पासहि यै आऐ।।
लगे करन जपती जागा की त्रप अनूपगिर कोप्यौ।
कछवाहै राठौरै भूप बुलवाइ जग पर रौप्यौ।।
फौज पातसाही तमाम कर जमा जोर जमकाऐ।
दषिननि सौ दल के रन मार हटाये

करी पातसाही रोसन रन रोसन रिपु बीच लाये।
भरि उछाको बादसाह को त्रप सब त्रपति मिटाऐ।।
एक एक तै अति आला मनि मालादि दुसाला।
जेवर जेव जेवाहिर हेवर हाथी हेम रिसाला।। २९२।।
षिलकत षूब जगमगी कलगी सिर पेच दिवाऐ।
पातसाही सौ राजा सब बिदा कराऐ।।
कछु काल बीतै अनरीतै कलिनी तै सजि धाऐ।
प्रबल गुलाम नजब कल्लीषा उमढ साहि पै आये।। २९३।।
नौन हरामी अबत्यारी करि त्यारी कपू भारी।
गोकुल गठवाव हुमकान जुरिन रूप्यौ रिवारी।।
द्वै गढ बीच भऐ अरि ठाढे निपट निभ्म भुव माहीं।
जित ह्वै कै गोली गोला की नेकहु चोट न षाहीं।। २९४।।
ता पै वान दिऐ पलटन मुह जे भट पलटन जानो।
या विध सौ दल व्यूहि बांधि गोलन की बरसा ढानै।।
तहँ अनूपगिर भूप सुनत ही भरे उकठि चढि ठाढे।
स्वामि धरम मै कमर बाधि कै समर लेत मन बाढे।। २९५।।
... . ।
लिपट जराई लैन लगे जस दैन लगे प्रभु काजै।।
रच समक्ष उक्षलत दीह निसान सान फहराऐ।
पातसाहि के ह्वै हरौल वे कसर पसर कर धाऐ।। २९६।।
हर हर बोल बाह तहँ झर झर रन झुक झारे।
कर कर वार सुभट लर लर सिर ढर ढर परत निनारे।।
तर तर तुवक तोप दर दर तहँ सर सर सेल्हनि घालै।
मर मर गिरत वीर महि तिनको वर वर अक्षर चालै।। २९७।।
छर छर छतज छताजन तै छूटत पर पर तेग तमंकै।
झर झर लगी मनौ घन झरतह चपला चपल चमकै।।
डर डर विडर रहै टर टर लषि थर थर काइर कंपै।
तरतरात तोपनि की सुनि घरघरात घन झपै।। २९८।।
झरझरात त्रप सार सार मै भर भरात अरि भाजै।
घरघरात धौसा धुकार नभ गरगरात गुनि गाजै।।
धरात मग चलत बान तह दरदरात गति दरसी।
पसरन रुकी अडोलन की गोलन की बरसा बरसी २९९

।। दोहा ।।

बरसा बरसी बानन की, सरसी तोप अषड।
परसी न्रपति अनूप नै, दरसी परस प्रचड।। ३००।।

।। छन्द : हरगीतका ।।

इम पस सर भूप करी प्रचड रुक्यौ न तरेर मै।
. . .. ।।
तिह जुद्ध उद्धत सुद्ध बहु भट बान गोलन सो गिरे।
पुनि घने घाइल भऐ घूमत आइ अरि दल सौ भिरै।। ३०१ ।।
गोला सु गाढी परस मै न्रप के सु डाढी मै लग्यौ।
पुनि भयौ घाइल हय उताइल पै न पाइ लता डग्यौ।।
गोलनि सह रिपु गोल मै तहँ वीर सबसुष पैठि कै।
भिर सिंह लौ अरि संहरै रन रिंध मुक्षउ मै ढिकै।। ३०२ ।।

।। दोहा ।।

भारी सबसुषराइ रजधारी दल अगवान।
रचिव रिवारी बीच रन झुकि झारी किरवान।। ३०३ ।।

।। कवित्त ।।

जैसे दुरजोधन के भीषम भिरौलल जैसे।
अर्जुन हरौल रन पडू कुल चदकौ।।
. . . . ।
. . . . ।।
जैसे वीर भद्र काली पति पास जुजुधान।
को निवास जदु सज जग बद कै।।
जोधन को राख राव सबसुषराइ।
ऐसे महाराज हिमिंत बहादुर बिलंद कै।। ३०४।।

।। दोहा ।।

दल सिरमौल हरौल ह्वै, सबसुषराइ रपेटि।
सिपट लपेटि चपेट रन दीने दवन दपेटि ३०

॥ छन्द : हरगीतका ॥

रजपूत रन मजबूत और अनेक कुल रन दौरिय।
लीन्हे चपेटा झपटि झपटि अरि तहँ तेग चलि सिरमौरिय॥
सब प्रस्ट ह्वै कर दुवन कौ दल दुतिय दौरि व हीर पै।
आइव उमंडित साहि के डेरान की लघु भीर पै॥ ३०६॥
तहँ कुँवर कचनगिरहि भूप अनूपगिर फुरमाइय।
हम पातसाही विदित मनसि बदार रावत राइयं॥
अब स्वामि धर्म सम्हार मडहु रार तुम जस इंद की।
करि दूर दुर्मत राषनौ हरि भात हुर्मत हिदु की॥ ३०७॥
जे जुद्ध मद्ध त्रसुद्ध होइ भट सुद्ध उद्धत लर्त है।
छत्र धर्म धर्तन उर्त मर्त न सार झारन झर्त्त है॥
जीवहि न जीवहि जग मै दुहु भात जग जस जु गावही।
जित्तहि सु भूतल भुगावै जुझ हित सुरपुरउ गावहि॥ ३०८॥
रनधीर तीरथ धार तै निरधार उत्तम गाइयै।
उत बहुत काल कलेस करि तन त्यागही छवि छाइयै॥
इत षग्ग मग्ग उमंग तन तज संघ सुर्गहि पाइयै।
कै जित्त अरि महि क्रित्त करि ततकाल भोगहि भाइयै॥ ३०९॥
यह स्वर्ग द्वार किवार बिन छत्री सुनत चित चाहही।
गुन ग्राम सुनि संग्राम को सब सुभट ग्राम सराहही॥
सुन हुकुम भूप अनूप को तब दौर कचन गिर गऐ।
. . . . ॥ ३१०॥

॥ दोहा ॥

घनी लराई तोप की षाई घाई ऐन।
रूपे लराई मद्ध रिपु, तब धाई त्रप सैन॥ ३११॥

॥ कवित्त ॥

हिमित बहादुर की तोपै तेज ताती।
तर्तराती घर्घराती अरषाती झहराती है॥
लफै लहराती लषि छाती हहराती।
जग कै सै हराती मानी अनी भहराती है

गोला मडराती नभ निरषै डराती।
बिडराती है अराती पाती जाती सरराती है।।
फलै फहराती छनछरा छहराती।
घन घटा घहराती रनराती अनराती है।। ३१२।।

।। दोहा ।।

हुकुम असर करि पसर करि, कचनगिरि रनधीर।
सेल्हउ ठेलन ठेल अरि मार भगाये वीर।। ३१३।।

।। छन्द : हालिक ।।

इतै भूप अनूप धाइव।
बोलि हरिहर हर सु आइव।। ३१४।।
अरिन डारत सेल्ह ठेलन।
करत नट सम षग्ग षेलन।। ३१५।।
लरत लिपटत दौर पुनि।
धर तह हकर मुष धुनि।। ३१६।।
मार मारउ चार आनन।
हनत सत्रुन सिर क्रपानन।। ३१७।।
पटिय महि कटि रुंड मुडन।
कतहु सुंडन के भसुंडन।। ३१८।।
भभक बोलत घाइ वललल।
चलत श्रोन प्रवाह अललल।। ३१९।।
फिरत प्रेत सु देत तालनि।
रचत भूत मिले वितालनि।। ३२०।।
माल गुहि गुहि सत्रु सीसनि।
सभु देत फिरे असीसनि।। ३२१।।
होहु भूपति लोह लंगर।
हनहु सत्रुन जित्त सगर।। ३२२।।

।। दोहा ।।

निजम कुलीषा की षुली डुली अनी डगमग्ग।
इन अनूपगिरि भूप के लई जीत ३२३

।। गीतका ।।

इह भात दोऊ तरफ तै लै फतै फतै मबारषा।
उत साह दीन्ही साहि का त्रप स्वामि प्रन को पारषी।।
भुव बात राषी माम की सुनरिंदहि तमाम की।
लिय साह छाती सो लगाइसु रीझ कर बलधाम की।। ३२४।।

।। कवित्त ।।

उमडि घुमडि आयौ निजमकुलीषा दौर।
सैन सिरमौर धायौ धाक धूप है।।
तोप की तरञ्च रग देलि वग दोलि घूम।
धार मै धकेलि केलि रच्यौ रन रूप है।।
अरिन को झेलि षेलि षग्गनि के षेलि सेल्ह।
ठेलनि उठेलि हेलि जित्यौ जग जूप है।।
जाहिर जहान की पनाइ पातसाहि को।
पनाह भयौ भूप भूपति अनूप है।।३२५।।

।। छप्पै ।।

षास सवारीवाल पील पर त्रपति चढाऐ।
पातसाह उत साह सहित दिल्ली आऐ।।
तिह गुलाम कादर कि पुन्य फल पूर जागे।
साह ताह सिर सरफरान जब करनै लागे।।
बरजी अनूपगिर भूपत हमर जी जो मन यह जवन।
सुनि सकल लीन मानि वन भविष्य बत्त मिटह कवन।। ३२६।।

।। दोहा ।।

तह गुलाम कादरहि जब पठयौ साहि बुलाइ।
हित हटकी मानी नही तब गऐ रिसाइ।। ३२७।।

।। छन्द रोला ।।

कछु काल पीछै गुलाम कादर सु दगा की।
पातसाहि कोप कर करि बे अदबी ताकी।।
करि लोचन जुग भग सकल भडार सुल्लि टिव'
अनुचित बात बिचार त्रपति सुनि दिल मै दुषजु दिव ३२८

॥ सोरठा ॥

पेसवा की फौज वीर महतजी सिंधिया।
कर उपाइ मन मौज ताहि साहि के हित मिले॥३२९॥

॥ छन्द अरिल ॥

तहँ अनूपगिर बैन कहे न्रप नीत के।
ये हरि असजु पातसाही जस रीत के॥
इन को करै प्रसन्न लाभ भुव भोग को।
दुहूं थोक सुष थोक वोक जस जोग को॥३३०॥
आप लियै हम साह पास मिलवाये है।
देसनि देस नरेसनि जस कराइ है॥
यह कहि लियाऐ भूप अनूप सधीर कौ।
प्रबल महतजी महत सिंधिया वीर कौ॥३३१॥

॥ छप्पै ॥

तब गुलामकादरहि पकर बाँधयौ कर पाछौ।
स्वामि द्रोह अति उग्र पाप भुगतायौ आछौ॥
अग अग तहँ छुरिन चीर तिल तिल कढवाऐ।
निमिष हरामी अधम ताहि सरित पहुँचाऐ॥
करि साह प्रसन्न पटयल कैहि मनसिब दिह दिवाइब।
भूप अनूपगिर भूप सम कवन भूप किहि गाइब॥३३२॥

॥ दोहा ॥

भू पर भूप अनूपगिर सम सर को सरदार।
जिन पटयल को प्रीति सौ जग जस करेव तयार॥३३३॥
ल्याय चढ़ाइ बढ़ाइ बल को न्रप समज सधाम।
जिन पटयल को दल पल जग में कियौ सनाम॥३३४॥

इति श्रीमत्सकल भूमंडलाषंडल श्री महाराजाधिराज हिमत बहादुर वीर प्रतापोल्लासे मनिकविंद्र वागविरनासे श्री अनूप प्रकासे खारी को जुद्ध वा गुलाम कादर वध-वर्ननं नाम षष्ठ प्रकासः॥६॥

।। सप्तम प्रकास ।।

।। वागविलास वर्नन ।।

।। छन्द : हरिगीतिका ।।

हिमित बहादुर वीर सो बड़ भाग को नृप होत है।
जिह परसि पारस लौ सि पारस जगत भाग उदोत है।।
जिन सग कर सफजंग कर रसरग मान पटैल के।
जस करे जाहिर जगत मे बस करे अरि फुर फैल कै।। ३३५ ।।
मुषत्यारगीरी पातसाही काम की सुधवाइय।
तिमि अमल तासु तमाम हिदुस्थान मद्ध कराइय।।
भूमडली जसमडली आषडली प्रभुता मई।
मथुरा वगैरह देस देसन देस पुन्य घटा छई।। ३३६ ।।
दुजदेव सतन को कियो प्रतिपाल धर्म सुजानसौ।
पाल्यौ प्रजान भुजान सौ सुष दयौ औ जनजान सौ।।
कछु दिनन पाछे बंदौबस्त समस्त हिंदुस्थान में।
कर लयौ वेस पटयल जब त्रप कि सहाय विधान मे।। ३३७ ।।
तब या बिचारी पातसाह देहु तोरा मेट मै।
पुनि करौ सब भूव भोग जग जस जोग ऐक समेटियै।।
नहि पातसाही मै रहै अब और भट सिरदार है।
रन अरि के मुष मारिबे को ऐक ऐ तरवार है।। ३३८ ।।
ताते त्रप नीत है बस कियौ इनकौ चाहियै।
मत्र चित्त विचार कै उर कफ्ट प्रीत निबाहियै।।
बरसात को लषि समै साज सनेह नित ग्रह आइयँ।
कर बहु षुसामत नीत काम तथा सलाह बताइयँ।। ३३९ ।।
किजै बिदा सब फऊज की जादात को सुष मानियें।
त्रप सहज सुद्ध सुभाव सो कछु भेद बुद्ध न आनियें।।
सिव रूप भूप अनूपगिर सुन सकल बैन पटय्ल के।

हित जानि जमुना पार को न्रप सर्ब सैन बिदा करी।
तोपै रिसालौ दियव सब पठवाइ लषि रुचि आकरी।।
अघमथन श्री मथुरा तियै न्रप रहै वास करै छरै।
जब जमुन जोर बढी तहाँ दुहु पार जात धरै धरै।। ३४१ ।।
कल्लोल फहरहि फैन मडि घुमडि घीर उमंडि ही।
भारी भयंकर भूर भौर भ्रमत बेग प्रचड ही।।
जमुनाजु लहि लजतु जम सेज मरु जल विकराल से।
जम की सहोदरी साचहू लषि परै प्राविट काल में।। ३४२ ।।
अति बढ़िव जलवतरन तट लौ लगै लाइक नर ही।
तब ही पटैलल गाद गा को उर बिचार करै सही।।
डेरनि डरेरनि भूप कै कदराइ आइ सकै नही।
कहु दावि सकै ऽगाल जगर नरिंद सिंघनि की मही।। ३४३ ।।
तब न्रपहि तिह दरबार को निजु भात बुलाइयं।
अषत्यार लषि हय त्यार भूपत सहज सुद्ध सुभाइय।।
जिनके सचे दिल साच मै ईमान मै अनकूल है।
ते लोक मै परलोक मै सब वोक मै मुद मूल है।। ३४४ ।।
आभीर हीर सरीर वीर गभीर धीर सरूप की।
बर बरनियै बिरदावली हिमित बहादुर भूप की।। ३४५ ।।

।। दोहा ।।

छरी भीर रनधीर वर चल्यौ वीरदरबार।
तिन पर अरकी कास कै जिन पै हरि रषवार।। ३४६ ।।
उ करवार दरबार को भए न्रपत असवार।
उ भरवार तरवार के सग सुभट बडिवार।। ३४७ ।।

।। छन्द हरिलीला ।।

तह संग भूप अनूपगिर कै सजे सावथ धीर।
राजा दिलावरजंग गगागिर बहादुर वीर।। ३४८ ।।
तहँ कुँवर राजत राजगिर किरवा दान बिलंद।
तिम कुँवर उत्तम गिर दुवौ जिम विंध्यौ अनुविद।। ३४९ ।।
पुन सुवन सबसुषराइ कै भट मानधाता मान।
जिहि जगजीत उमग सौ किय सिद्धि स्वामि कामा।। ३५० ।।

तह चलिव वीर अमानसिघ सु गौर ठाकुर धीर।
तिन करिव नृप के सग मै बजरग ज्यो रनबीर।। ३५१।।
सग चलिव ठाकुर कसराज सु बुद्ध सुद्ध सचेत।
छत्री चरित्र विचित्र पुरु पहारसिघ समेत।। ३५२।।
जदवस ठाकुर सु जंगजालिम वीर सालिमसिघ।
तिम अमरसिघ अमान अर्जुन सो जसीर नरिंध।। ३५३।
कछवाह कुल भोपालसिंघ नरिंदसिंघ पमार।
बलवानसिंघ स कूर्म धौकलसिघ त्यौ परहार।। ३५४।
न्रप नवलसिघ पमार गुरजी बेगषान पठान।
दुज समाधान पचास इमि सावथ साथ अमान।। ३५५।
तहँ षबर मारग मै दई जासूस नै यह आन।
कीन्हे पल कृतघ्नता उत आज बेईमान।। ३५६।
चलिबो न होइ हजूर को उत गए प्रीत पटैल।
हिमित बहादुर भूप यौ चर के सुने जब बैन।। ३५७।
तब श्री नवाब अली बहादुर की रहै ढिग वेस।
डिवढी तहाँ उतरे सु न्रप करियौ बिचार सुदेश।। ३५८।
इतमाम भूम तमाम मै यह भई जाहिर बात।
लै गए भूप पटैल को षल दलनि को कर मात।। ३५९।
किय बदोबस्त समस्त हिदुस्थान जप्त कराइ।
लिय डडि डडि उमंडि सर्व गलीम गर्व गिराइ।। ३६०।
यातै उमडि घुमंडि हम बलबड वीर व गोउ।
जस करे मथुरा मडली मह मडली कहिवोउ।। ३६१।
जा मैयत्री जम विदित हो पटैल नै यौ चूक।
बिइमानी करी अरु न्रप कर्यै येमि सलूक।। ३६२।
जग अत्र घर छत्रीन की द्विति रीत इम विष्यात।
रज बात मै कटि गात जात परंत बात न जात।। ३६३।
छत्री याचा ऊचारियौ उपचार चित्त विचार।
ईन नीसान सौ न्रप लेत भे रज धार।। ३६४।
जा मै जरी को फरहरा फहरै बध्यौ फलधाम।
जाके प्रभावन पेसवौ भुव पेस कीन तमाम।। ३६५।।
पुन जा प्रभावन श्री नवाब अलीबहादुर वीर।
हिंदुस्थान मै बहु लसे जस रनषीर ३६६

।। दोहा ।।

या कहि भूप अनूपगिर लीन्हो रुद्र निसान।
रहे रोप पग मान मन घनै घोर घमसान।। ३६७।।

।। कवित्त ।।

भूपत अनूपगिर बोल्यौ बल रूप बैन।
संग रह टैल को पटैल को लवावेगे।।
जाहिर दिसान मेरे गुरौ को निसान।
याकै तरै घमसान करि सान को सचावेगे।।
हार दैहौ हरि कौ अहार दैहौ ग्रद्धनि।
बहार दै हौ जोधनि कौ जोगिनी नचावेगे।।
हार कद्दै कैसै रचि रार असरार।
झार सारन पै सर आजु मार कौ मचावेंगे।। ३६८।।

।। दोहा ।।

जो पटैल दल पटल सो, उमडे बड जुझार।
तौ सेल्हन धमकै मचौ समसेरन झमकार।। ३६९।।

।। छप्पै ।।

ऐ वचन कहि भूप सु मिटउ रउर देवि गंग कह।
तह पटयल टन सैन लषन सवार सज।।
उडिय धूर धुंधरन मुदि रवि झंपि तेज तजि।
मजबूत राइपूतन सहित लियव घेर इम दल चढिव।।
जिमि जिमि जुमकि समुहात उत।
तिमि तिमि त्रप कोपहि चढिव।। ३७०।।

।। दोहा ।।

चढि पटयल के दल पटल रहे त्रपहि इमि झपि।
जिमि सरद्द बदल उमड रव मडल कइ ढंपि।। ३७१।।

।। छप्पै ।।

नवाब के जुरे सूर सिरदार सुद्ध मति।
तहँ नाइक अपनेक जुद्ध रति

बोलाकर गोविंदराव पामार पुनि वाघ उमाजी रिस भऐ,
इमि सकल सुभट सघंट सुमिटि त्रपति निकट आवत भऐ।। ३७२ ।।

।। दोहा ।।

सवा लष उदभट लिऐ उत पटैल मह भूप।
भट पचास सौ रुपि रह्यौं धनि धनि त्रपति अनूप।। ३७३ ।।

।। छन्द पद्धरि ।।

उमडे पटैल दल बल अमित्त।
त्रप छत्रधर्म हठ धरिव हित्त।।
गज्जहि गयद चहु वोर सज्ज।
लागे गरज्जि बज्जन सु बज्ज।। ३७४ ।।
हयहिं सहमउ उमडे तरज्जि।
सुनि सोर जात घनघोर लज्ज।।
तब जे नवाब भट जुरे इत्त।
लषि भऐ चित्त सब के चकित्त।। ३७५ ।।

।। दोहा ।।

लगी दवारौ करन जब बढि पटैल की सैन।
जदकुल सालिमसिंघ तब बुल्लिव त्र (प) सह बैन।। ३७६ ।।

।। छप्पय ।।

जदकुल सालिमसिंघ जंग जालिम इम बुल्लिव।
मरन मोद मन मन्न तत्त अतर मत मत बुल्लिव।।
हम छत्रिय रजपुत्त ताहि रजपुत्तन भषहि।
जे न धरहि ईमान जे न रावत रज रष्षहि।।
दष्षिन के धूत रजपूत मम परहि न पेसादार कहि।
धारहि सुधर्म मारहि अरि नरन झारहि तरवार कहि।। ३७७ ।।

।। दोहा ।।

क्यो हम पै चढि आवते जो भट ऐ रज माहि।
करिहै अपनी बाह बल साची इनकी वाह ३७८

॥ कवित्त ॥

जेठी गादी जाहिर जजात की नजात कही।
आपु हर औतर्‌यौ जहाँ महानुभाव है॥
ताको क्रपा ता कुल भयौ न है न हूहै कोऊ।
अजसी अदाता यौ विधाता को विभाव है॥
मान कवि साधै सबै दान सनमान सबै।
सज्जन सुजान ऐसौ पुन्य को प्रभाव है॥
सबै मरदान सबै बाहै किरवान।
बलवान जदुवसन के बस को सुभाव है॥ ३७९॥

॥ दोहा ॥

श्री भागौत पुरान मै सुषमन बरनी बत्त।
हर भक्तन के बोल बर कबहु न होत असत्त॥ ३८०॥
स्वामि धर्म रज रष्ष हम मंडनि षग्गन षेल।
को तक आप न रष्षियै सेल्हन अरिन उठेल॥ ३८१॥
जालिम सालिमसिंघ को तत्त मत्त सु निसत्त।
कसराज सैंगर तहाँ बुल्लिव भूप सह बत्त॥ ३८२॥

॥ छप्पय ॥

कसराज उच्चरय सुनहु महाराज महामति।
आप समुद परजत डड लीनिय सब भूपत॥
आप छेत्र छिन माह धर्म सत कर्म करे सब।
मथुरा मंडल मध्य यही रष्षिय विचार अब॥
दछिन के लच्छ रजपूत कह हम रजपुत्तन लिष्षियै।
सब सुभट पीठ पर ठट्ट ह्वै आप कुतुहल दिष्षियै॥ ३८३॥
पुन सु कुप्प बलवान मानधाता इम जंपय।
पुन छितिस छत्रीन छाह दिष्ष दिष्षत जम कंपय॥
कहा माल ऐ सुभट आन ईमानन आनिय।
गगोदक दै बीच करी जिन वेई मानिय॥
बदलहि बात इम पात इमि जो न दलहु ब्रात कह।
अर कह न जाइ मारह जुरत तौ ध्रक ध्रक मम मात कह ३८४

।। कुंडलिया ।।

जैहौं क्यो ब्रज भूम तजि उमरै है रजपूत।
पैहै जस मजबूल जुरै जसहू जस सोषै।।
पर्‌यौ सिंधियौ सोष और सिरदार न द्योषै।।
उन सिरदारन साथ राज को मारन ह्वै है।
अब छत्रीन सौ वीध वात मन समुझल जै है।। ३८५।।

।। दोहा ।।

ऐ रजपुत्तहि बचन सुनि, तन मन चित्त चढि चैन।
साहस धर्म विवेक मैं, बुल्लिव भूपत बैन।। ३८६।।

।। कवित्त ।।

धर्म रहै लोक परलोक मै सदाई सुष।
साहस सम्हार सूधे हो व जस मारे हौ।।
वाकी बेईमानी वाह मार है निदान।
हम राषैइ ए मान ते हमारे रषवारे हौ।।
सूधे हथ पार चलने की बरकाइ।
पेसवे के पास आइ है प्रद्दै पसिद्ध कर पारे है।।
जानै ते नवाब के जहान लीन्हो और।
ब्रंदावन चंद सब जानै जानवारे है।। ३८७।।

।। छप्पै ।।

न्रप अनूपगिर कहय समर मो सिर वित्तव।
मैं तोप न झर झेलि निजिमकुल्लीषा जित्तव।।
कहि अरि मै जट्ट देसहि पट्ट मचायव।
अर मुंडन की माल मडि चडी सन चाइव।।
मैं साहि संग जंग्गन जुट्टिव मोह सुनत अर थरथरित।
तुम सुनहु सूर सावंथ सब कहन मोह दिष्ष वरत।। ३८८।।

।। दोहा ।।

अब सब सूधे होह भट न्रप उदभट इम बुल्ल।
गगाजल सब को दयौ लयौ लरन मति पुल्ल।। ३८९।।
तब तरवार निकार सब उठे वीर बलबड।
तब पटैल के भट सिमिटि चले पछिल भुव छड ३९०

।। छन्द हरगीतका ।।

तहँ श्री नवाब अली बहादुर कहीय छत्र अनगात है।
साव सैन समेत सब हम भूप तेरे साथ है।।
भट जाइगे तुव अग्र तब फिर ईस के अषत्यार है।। ३९१ ।।

।। छप्पय ।।

सिधु सलिल घटि जाय तजहि गौरी गिर सकर।
अगिन झार सियराइ वेद वचहि न अष्ठ कर।।
परहि भूमि गिर भार धर्म सुत सुड जु बुल्लिय।
कदल फलै बिय बार सेष धरनीयत जिउ लिष्षय।।
सुमेर डगहि लोकनि सहित दिसन छैडि दिग्गज टरहि।
पावुर पटैल सह भूप सुनि तौ सधि न करहि।। ३९२ ।।

।। दोहा ।।

न्रप सह पैज नवाब कर फौज तयार कराइ।
तब पटैल के कटक हठ डेरन गऐ डराइ।। ३९३ ।।
उर नवाब पर कोप कर दष्षिन चल्यौ पटेल।
उत ह्वै जोर जनाइ हौ यह भट विकटह टैल।। ३९४ ।।

।। कवित्त ।।

हौकि हौकि तौकि मरहट्टा भुजा ठोकि ठोकि।
आऐ जग जौ क पै न जूठे जुद्ध फाटके।।
भूपत अनूपगिर पैज पग रोप रन।
रैल सौ पटेल कौ नचायै नाच नाटके।।
कुभ के कुमार लौं कराल काल दिसा।
गऐ फिर है न फेर मारे अ दसा उचाट के।।
राज के न पाट के न ठाठ के न बाट के।
न घर के न घाट के भऐ है हाट हाट के।। ३९५ ।।

इति श्रीमत्सकल भूमंलाषंडल श्री महाराजाधिराज हिमित बहाबुर प्रतापोल्लासे मान कविंद्र वागविलासे श्री अनूपगिर प्रकासे सप्तमो प्रकासः ।। ७ ।।

।।अर्जुनसिंह समागम वर्ननं।।

।। दोहा ।।

तब नवाब बुझी न्रपहि कहि ऐक सलाह।
बडी षरच की मादगी दलपै झलपै चाह।। ३९६।।
कछु भया इन का किया दिया जदिय हिदवान।
यह ढहरत दषिन गऐ मन मै होत गलान।। ३९७।।
इत जागा जादा तनहि कीजे कहा विचार।
तब राजा बुल्लिव बयन उदित बुद्ध उदार।। ३९८।।

।। छन्द पद्धटी ।।

बुदैलषड कह चलहु आप।
उत सब सुधार अर दल उथाप।।
तब बहुर बयन बुल्लिव नवाब।
बुदैल समर सज्जहि सिताब।। ३९९।।
भेजी पटैल फौजै सुधार।
उत दोइ बेर आइ सु हार।।
लुटवाइ है मह पहीर चीर।
तोपै गवाइ भज्जे अधीर।। ४००।।
बुदैल वीर बाके लराक।
बन बिषम भूमि गिर दुर्ग बाक।।
बे राज साज सग रस नद्ध।
मादगी इत्त झूम फौ मद्ध।। ४०१।।
सुनि कहत भूप अमनैक टैक।
करिये न आप कछु सक नैक।।
बुदैलषंड मह जस जगाइ।
महि बेग जप्त दैहै कराइ।। ४०२।।
पामार बीर कह मार जंग।
पेसवौ नाम करिहै उतग।।
कीन्हौ पटैल विग्र अचूक।
तहँ किये आप हम सौ सलूक ४०३

।। दोहा ।।

अपने वह पेसान तै होइ अदा हय वेग।
जागा जप्त कराइ है मार अरिन मह तेग।।४०४।।

।। छन्द हरगीतका ।।

इह भात षातर करि नरिंद नवाब कूच कराइय।
सब सैन सालिम चलिय चामिल सहित डेरा आइय।।
भद्दव सु बद्दल हद्द धारन सौ बढी।
लहरहि सु फहरहि फेन धरि धुनिहि गजल धर लौ मढी।।४०५।।
तहँ श्री नवाब तरंगीनी तट बैठ किय मन मद को।
इक रात मै गय उतर मग दिय सिंधु ज्यो रघुनद को।।
तहँ लगे सेवा मद्ध आवन सकल सावथराज के।
कछुवाह कुल आधारसिघ मिले सु न्रप सुभ साज के।।४०६।।
चेला बुदैला भूप त्यौ उमराउसिघ समेंटि कै।
लै बडिय भैट मिले गुरु न्रप को डरै डर भैट कै।।
रन एह माह उमाह सौ उत साह साह सनूप की।
बर बरनियै बिरुदावली हिमित बहादुर भूप की।।४०७।।

।। छन्द ।।

हिमित बहादुर भूप है।
जनु धरिव चानिक रूप है।।
नरनाह दतिया वा रयै।
तरवार धार जुझारयै।।४०८।।
दरसाइ दल बल आप कौ।
राजाधिराज नवाब कौ।।
मामलत दीह दिवाइय।
जस नीत प्रीत जगाइय।।४०८।।
न्रप कौ झिलाइ नवाब सौ।
दतिया सु रष्षी आप सौ।।
उनकी सु भुम्म बचा दई।
ग्रह कौ कराइ बिदा दई ४१०

।। दोहा ।।

सिमरथ के गुज्जरन सौ पुन मामलो दिवाइ।
अब छित त्रपत प्रताप की चली छटा छहराइ।।४११।।
फौज देस की भूप ढिग सिमिट कही न जाइ।
ताको ताकि नवाब भे मुदित बचो मन काइ।।४१२।।
वेत्रवती को उतर कै कूच कियौ महिपाल।
छत्रसाल के पै आऐ गऐ ततकाल।।४१३।।

।। कवित्त ।।

हिमित बहादुर नरेस बलवान के पयान सुनि।
सूबन के सान जात गारे से।।
मान कवि कासौ कहि जात दविजा।
भगि जात पुर जात भुव भारे से।।
तपबल तेजबल हयबल हाथीबल।
पूषन से पावक से पौन से पहार से।।
तारे से तमाम त्रप पारे से पढान अरि।
चार सै पयोधि फूट छूटत फुहारे से।।४१४।।
डडै धूर धार पूर पै पारावार होत।
हय षुर थारन पहार छारकन है।।
गज हल काकी हलकार अलकालौ।
पलकालौ मही मचत लचत षलगन है।।
भूपत अनूप दल बद्दल चलत चौकि।
विचलत कमठ कठोर पीठ पन है।।
भै भै परै भूरि मार दिग्गज दतारे नै नै।
परत फुसक फनि पति के फरन है।।४१५।।
फनी फनी फुसकारन फटे से जात।
ऊँचेउ चढे से जात औचका अमर है।।
षल षल भलत गनीमन दलन जब।
चलत अनूप गिर भूप के सुभट है।।
सिध झुरि जात मघवान मुरि जात।
दनु जात दुरजात पुरिजात दिनकर है

कच्छप कहल जात दिग्गज दहल जात।
मही हल जात मलिजा महीधर है।। ४१६

।। दोहा ।।

न्रप दल प्रबल पयान को, को कर सकल बषान।
षलत सान घमसान के, अरि छडत अवसान।। ४

।। छन्द हरगीतका ।।

हय गय रथ पषरत सूर सावथ सब सज्जहि।
होत निसान धमक धक सुनि वारिद लज्जहि।।
रिपु दल बल गढ दहि अषिल षल भजत थान तजि।
सभु डमरु बाजत सूकर शाह सुनत सजि।। ५
वीराधि वीर रनधीर बर जासु कृत्त सब जग कहय।
रन रूपय कौन संभु षह न्रप अनूप जब अस गहय।।
छत्रसाल देसहि पैठ डेरा करे कुज कछार मै।
षा ली कारी दिन ऐक मै सातो गढी रच रार मैं।। ५
रन रीत नीत प्रतीत प्रीत विनीत नीत सनूप की।
बर बरनियै बिरुदावली हिमित बहादुर भूप की।। ५
महाराज, विक्रमाजीत कौ पाती लिषाइ पढाइय।
उत राज बिगरो सिरस्था आप अब इत आइय।।
लै लईम्म पमार नै वह सत्रु मारौ जाइगौ।
मिलहै जिमी सुनि भूप विक्रम मनस मंगल छाइगौ।। ५
कुइ तरुै चाहत सिधुराज जिहाज जनु जिम पाइगौ।
हर्षन प्रहर्षम मानि पत्री लिषी लै चर आइगो।।
महाराज को अरु आपको हद लौ सु पग बदलौ रहै।
अब हुकुम हमरै आप कौ सब भाति ह्वै सिरमौर है।। ४
हम आपके हुकमीतनै हर भात हुकुम बजाई है।
लिषि न्रपति बिक्रम भऐ सामिल मिले न्रप सष पाइ है।।
सुमेरपुर मौधा गहोरा राठ दल बल मडिय।
सेहुडा वगैरह ग्राम ग्राम सनाम आमिल छडिय।। ५
दुर्गेस गिरजु सरूपगिर इन आदि कुँअर उमडिय
थानै भगाइ जप्त उदंड रिपु दल खडिय

सुनि सुभट अर्जुनसिंघ सैनापति बहादुर कुप्पिय।
जिहि बषतसिंघ गुमानसिंघ नरेस आदि बरुप्पिय।।४२४।।
जपती जिमी की जानि के न्रप धिग धौकलसिंघ सौ।
तिह वचन परनामै कहे धरि धर्म रज रन रिंघ सौ।।
महाराज मेरे जियत मह बुदेलषंड अषड की।
जपती करै अरि बात यह किमी सुनी जाइ घमंड की।।४२५।।
यह राज अपनौ आइ हम भट आपके हित कु जिये।
प्रातै हमारी पीठ पे न्रप नेक ठाढे हूजिये।।
तन तजहि हम हहकार रन कै अरिन मार भगाइ है।
महाराज कोतक लषहि हम दुहु भात जग जस पाइ है।।४२६।।
यह धर्म छत्रिय को कह्यौ जिह भुमि भोग उमडियै।
तहँ सत्रु को लषि अमल भय मान छिति वह छैडियै।।
तौ नक्र होत कराल जो अरि भंग जग न मंडियै।
ध्रग ताहि राहि रजपूत वह जमदूत डडि न दंडियै।।४२७।।

।। दोहा ।।

जो छत्री निज भुम्म कौ घूमति रष्षय कोय।
जीवत दुष दिष्षय दुसह मरै नक्र गति होय।।४२८।।

।। छप्पय ।।

तन छन भंग पलंग सग अगन पर छुट्टये।
महि मडल नहि क्रत्त मित्र जस पित्तन लुट्टये।।
छिन उमग मत रंग जग स्वामी हित टुट्टय।
षग्ग मग्ग लग वग्ग पग्ग फल जग्गन जुट्टय।।
कवि मान कहय घमसान मह उभय भाग जस जुग्ग पय।
जित्तहि तु भोग भुव भुग्गषइ जूझ अमरपुर उगवय।।४२९।।

।। दोहा ।।

यह सुनि भगुर को इकय करत पोच जस सोच।
भज्जे जगत लरै मरै जस लोच ४३०

॥ कवित्त ॥

कूप पुरजात हथियार मुरजात मनि।
आप करि जात गढ चढीयो ढहि जात है॥
पचे छुटि जात सर सधे फुटि जात।
गढ कोट टुट जात है हाथी गहि जात है॥
पाग कटि जात घन घाम छुटि जात।
पट फटि रस रग बहि जात है॥
अंन सरमात तन ग्वाल जरजात जग।
कौन मरजात जस येक रहि जात है॥ ४३१॥

॥ छप्पय ॥

यह छन भगुर काइ ककुर काहर किसि रष्षय।
लोह धाम धधय पिठुठि बंधय जम भष्षय॥
आपु अनंदातार आपु रष्षत सु मर्म तहु।
जलगि आप आधार त लगि मारहु न मीच कहु॥
जद्दि नहिं आयु आषर त दिन अवस्सि छुट्टिट भूतल परत।
ईम जानि जाति जीवन मरण सुभट चित्त चित्तन करत॥ ४३२॥

॥ दोहा ॥

अर्जुन सिह दिवान पनि छत्र धर्म धज धार।
धौकल सिह महीप सौं कहत बत्त तिरधार॥ ४३३॥

॥ छप्पय ॥

छत्र धर्म धर भूप भुम भामिन सम जानहि।
ताहि सत्रु भुग्गवइ वीर किमि लज्जन आनहि॥
रज रष्षहि रजपुत्त भुम्म रष्षहि त भुम्मपति।
कुल रष्षहि त कुलीन पुन्य रष्षहि न पुन्य रू तित॥
कवि मान दान सनमान धीर करि क्रपान जित्तय समर।
मरदान सुजस जुग जुग जियत कहु दिष्ष कायर अमर ४३४

॥ दोहा ॥

जसधर नौ या भुम्म हित लरनौ मरनौ मोह।
अब नृप बरनौ आपकौं जो कुछ करनौ होहि॥४३५॥

॥ छप्पय ॥

सुन नृप धोकलसिह छरय साह सनमान कय।
हम आबत तुम चलहु ज्याय दिकव सयान कय॥
त लगि षबर आई नवाब नृप मिल्लि कैंन तट।
होत देस मैं अमल दिये तामिल उठाइ भट॥
पामार बीर सुनि चर बचन जुद्ध क्रुद्ध रस छाइयव।
रनधीर रष्ष रज कूंच करि सज्जि अजैगढ़ आइयव॥४३६॥

॥ दोहा ॥

पठये पच पमार नै पहुमी पति के पास।
पूषन सो पुरहूत सौ पेष्यो प्रगट प्रकास॥४३७॥

इति श्रीमत्सकल भूमंडल षंडला षंडल श्री महाराजाधिराज हिम्मतबहादुर वीर प्रतापोल्लासे अनूपप्रकासे अर्जुनसिंह समागमो नाम अष्टमो प्रकास॥८॥

।। नवम प्रकास ।।

।। सामान्य संग्राम वर्ननं ।।

।। दोहा ।।

वीरा भूपति मिल्लियौ कर्नवती के तीर।
कुछ प्रपच हित पंज निज पठ्ये अर्जुन वीर।। ४३८।।

।। छन्द हरगीतका ।।

तब कही नृप सिरमौर और सुगौर हम कर लैहिगे।
तुमको प्रमान गुमानसिंह भुवाल की भुव देहिगे।। ४३९।।
तजि कोप आवहु सौंप देहुं समस्त भुव सिरकार मै।
जनपद सु दून लिषाइ लेहु हरौल ह्वै दलि भार मै।। ४४०।।
नृप सीष ले इत आइ मत्रीय कहत मंत्र बिचार मै।
सुनि पत्र षुल्लिय मानि भय भुव छंड देहु पमार मै।। ४४१।।

।। दोहा ।।

नृप तस वाई कौ सुभट मिलहि नवाबहि लाल।
स्वाम् द्रोह ततकाल पर रौरव नर्क कराल।। ४४२।।

।। छप्पय ।।

अर्जुनसिंह पमार कुप्पि बुल्लिय पंचन सह।
स्वामि धर्म सीस समर भिडहु नवाब कह।।
लरिहु जाइ समुहाइ श्रौन की सरित बहाऊ।
झार सार असरार मार सावंथ गिराऊ।।
कटि मरहु करहु जस वात जग जिमि घमंड घमसान कीय।
रज रष्ष रष्ष रावत्तपन हद रष्षु हिंदवान कीय।। ४४३।।

।। छन्द नराज ।।

बुंदेलषंड मडली मही की मैंड पाइ कै
उमग जग जुट्टि कै अघाइ घाइ घाइ कैं

प्रचड सत्रु षडि भेद मारतड मंडलै।
उमडि देहु छंड मंडि मेटि हौ अषड लै।।४४४।।

।। छन्द ।।

इहि भात जब छत्र धर्म धार पमार भुवनक बुल्लिय।
तब श्री नवाब नरेस सौ इम कहिय हिय भृम भुल्लिय।।४४५।।
मिल्यौ अजैगढ़ के तरै करि विकट जागा पीठ पै।
दछिन कि लौ गिरवान संगर डांग षा .. डीठ पै।।४४६।।
इम विकट जागा सुदिन पेरा साधि डेरा डारियं।
बरसात के दिन रहे थोरे देषि दुचिती धारिय।।४४७।।
तब ही सलाह मिली त षडी मंत्र अब कह किज्जियै।
अरि बिकट जागा मद्ध मे लौ किम लराई लिज्जियै।।४४८।।
सुनि बचन भूप नवाब केर नवाब के उर क्रोध कै।
नृप कहत छत्रीय नीत रीत प्रतीत प्रीत प्रबोध कै।।४४९।।
मरदान दानि क्रपानि पानि प्रमान बान अनूप की।
बर बरनिये बिरदावली हिंमत बहादुर भूप की।।४५०।।
हिंमत बहादुर भूप बुल्लिय बचन वीर नवाब सौं।
छत्र धर्म साहस सौ सतै अति आवसौर नवाब सौं।।४५१।।
हम पातसाह उजीर पास रहे हरौल हमेस है।
तह राव रानै पुति हजारौ किये जप्त नरेस है।।४५२।।
बलवंड नृप हम डंड डड उमड दीनै छंड है।
लरि षंड षंडि प्रचंड दल तिई समर मंडल मड है।।४५३।।
पर भुम्म मिलत न जलगि मिलत न अत्र बिलतन जंग मै।
रन रुप्पि रद्धिर कै भूप भिरौ लेत सिर के सग मै।।४५४।।
अब सेल्ह ठेल निषग्ग षेलति पैज सच करि लैहिगे।
बुदेल षड अषड कौं हम सौंप मडल दैहिगे।।४५५।।
प्रभु प्रनत पाल क्रपाल केसवदेव मम प्रनपाल है।
दैवि जै संगर रग मै बजरग अरि कौं घालि है।।४५६।।
निज डीठ पै मम पीठ पै अब षडे कौतुक देखिये।
लरि लैहिगे हम आप अर्जुनसिह कौ त्रन लेषिये।।४५७।।
इम भाषि भूप सिताब ज्वाब नवाब तेज पठाइयं।
धौसनि छुकारन दै नगारा सैन त्यार कराइय ४५८

बलवान दान क्रपान सात न सावधान सरूप की।
बर बरनिये बिरदावली हिमतबहादुर भूप की।। ४५९

सम्बत अठारह सै परै उनचास साइत द्वादसी।
चढि जुद्ध कौ नृप सुद्ध माधव बुद्ध दिनजुत द्वादसी।। ४६०

उमड्यै अभंग उमंग दल चतुरग जग उमाह सौ।
सैन त्यार सवार है वे सिरदार सज्ज सनाह सौ।। ४६

करि करि प्रनाम नरेस कौ पुनि मिलत गौल गरद्द मै।
नहि मुरेय तरेन जुरे छत्तिस कुरी तिह दल ठट्ट मै।। ४६

लै वंस नाउन तहँ सिरावन चोबदार बषानहीं।
हुजरान की षन कौलि पै मुजरा सषै गुजरानहीं।। ४६

मद अंध बंधु रबिंध से चलहि किल सिंधुर सज्जिकै।
जिनकी गरज्ज तरज्ज सुनि घन गजत लज्जि कै।। ४६

तिमि घुमडि घोरन की घनी छबि छनी काहि भनी परै।
नृप की अनी बन कै बनी रन की मनी न गनी परै।। ४६

धौसा धुकारन दल हुकारन बरि पुकारन धर्नि मै।
उडि धूर धुदनि मुद रवि बल को सकै किमि बर्नि मै।। ४६

उमडी बडी भट भीर तह सुमडी भराभर सोर की।
घुमडी घनाघन की घटा जनु छटा सिंधु हिलोर की।। ४६

फहरै निसान दिसान छबि छहरै हरै रव सूत की।
लहरै उठै जनु जलधि में बडवाग्न ज्वाल अभूत की।। ४६

धुज पट भगौ है लषि भगौ है होत षल दल जंग मै।
बन षंड षंडव की अषंड दवारसी दुति दग मै।। ४६

इम रूप सैन चमूप सज्जि अनूप भूप प्रभाव ज्यौ।
सम कन्ह कन्हर ध्याइ कन्हर बगस बाजिय पै चढ्यौ।। ४७

रुद्राधि दैवत कवच भुज रुद्राक्ष माल उमडि कै।
भागौत गीता जटित गुटिका पुरट की उर मडि कै।। ४७

सजि कै कन्हैया बगस पै चढ चल्लिव भूप अनूप है।
सु बाज पै जनु साज सुर दल चढ्यै सुरपति भूप है ४७

॥ छप्पय ॥

फरफराइ सफरी कि फिरहि कि पारद थार पर।
चमचमाइ चपला कि चमकि चचल प्रचार पर॥
कै चल दल दल चलहि चपल चित चित कि चलाचल।
चलि चम रुपौ कि बकि चौक चालत मलामल॥
फहरात छिनक छहरात छित छबि छक्कित छत्तिस कुरीय।
कवि मान सात सो बर्नि सजि नृप अनूप चढि ढब तुरीय॥४७४॥

॥ दोहा ॥

चल्यौ कन्हया बगस चढि नृप अनूप गिर सज्जि।
सिमिटि सुभट सावथ दल चले संग गल गज्जि॥४७५॥

॥ छन्द हरगीतका ॥

साज्यौ नवाब अलीबहादुर जग कौ सिर मौल है।
भट भीर लै बढि भयौ भूप अनूप परि हरौल है॥४७६॥
लह रुद्र रूप अनूप भूपत संग वीर सवार है।
बुदेल विक्रम जीत नृप कासी सकल सिरदार है॥४७७॥
नृप नवलसिह नरिंदसिह गिरदसिह पमार है।
चदेल धौकासिह राउत राइ यौ पढिहार है॥४७८॥
तिम जगतसिह सुधर्मसिह पमार कुल रनधीर है।
सैंगर जवाहरसिंह सालिमसिघ जादौ वीर है॥४७९।
सिरनेतसिह सुबुद्धसिंह सपूत सगर सज्जिय।
बुदेल बीर दिवान दूलह जूत हागल गज्जियं॥४८०।
राजा दिलावर जंग गगागिर बहादुर वीर है।
लह कुॅवर सज्जिव राजगिर उत्तिमगिर सु रनधीर है॥४८१॥
सैंगर सु लछिमनसिंह निर्भयसिह दीपकसिह है।
बलवान ज्वान षुमानसिह सु गौर दुर्जनसिंह है॥४८२।
तह सज्यौ गौतम हुकुमसिह निवाजसिह जु गौर है।
पामार ठाकुरदास कुर्म गुलाबसिह स तौर है॥४८३।
तिम बषतसिह चदेल लाला अजबसिह उमडिय।
तहँ जगन वसी दुज सवाईसिह सावथ मंडियं॥४८४

पुन जलदगिर वर कुँवर भूप अधार बली सज्यौ।
बलरामगिर सु महत्त वीर गनेसगिर कुबर गज्यौ।।४८५
पठिहार वीर कुँवरसिंह सहाय वासु षुसाल खा।
आसीन षां रनमस्तषा लंगरियषा रहिमानषा।।४८६
पठहार धौकलसिह हिंदूपत पमार उ देषिये।
सब सूर वीरन अग्र उदभट मानधाता देषिये।।४८७
रन धीर वीर सवार बहुतिन अग्र पैदर भीर है।
तिन अग्र तोपै जुतिय लषिनहि धरत धरनी धीर है।।४८८
लाला सु हीरालाल हालति हालगिर तह सज्जिये।
पल्टन तोपै तुपक पैधर भीर लै गल गज्जिये।।४८९

॥ दोहा ॥

छुट्टिय तोपै तहमची तरा भरी भुव माह।
सुनत सज्जि सिंधुर चढ्यै बषतसिंह नरनाह।।४९०।।
ऊभै दल सुनि षेत मह अर्जुनसिह दिवान।
चल्यौ सज्जि गल गज्ज भट करन घोर घमसान।।४९१।।
मत मतग गज पै चढ्यै पठ्यै वीर अगवान।
असुर अनी भेदन चल्यौ राम कौ बान।।४९२।।

॥ छन्द हरगीतका ॥

सुनि चढ्यै भूप नवाब कौ सजि पठ्यै अर्जुनसिह है।
जग लगी जासह सत्र भेजन छत्रपन की रिष है।।४९३।
कलियानसिंह बुदेल नृप जगतेस को सुन सज्जिय।
दरियाउसिह बुदेल बिबतावाल यौं गल गज्जियं।।४९४।
सज्जे ब घौर पार दुर्जनसिंह के सिरदार है।
षुमानसिह बघेल आदिक जोमदार जुझार है।।४९५।
तिन करन जू कठ जंग जालिम तनय जालिमसिह कौ।
रन चंड चौदह नृपतसिह सु पद्मसिह सु रिष कौ।।४९६।
रन राउ राउ बहादुर भगवंतसिह उदार है।
रघुनाथ चितक चौदहा रघुनाथसिंह जु मार है।।४९७।
सिरदारसिंह उमेदसिह घघेर प थरी वार है।
जुग भ्रांत जालिमसिह प्रथीसिंह दुरु पुरुवार है। ४९८

चौदह धौकलसिह तिम जुगराजसिंह गनंत कौ।
सैंगर सु रावत राइ धौकलसिह सुवन बसत कौ।।४९९।
गजसिंह कौ सुत प्रानसिह धधेर तेई सिंह है।
तहँ सुभट सैंगर पिल्यौ साहेबसिह दुर्जनसिह है।।५००।
पठिहार तह भोपालसिह दिवान पूरनमल्ल है।
पचम असाठी बाल तेई सिह कीन्ही गल्ल है।।५०१।।
इत आदि सूर समाज लै रन सज्यौ वीर पमार है।
रावत्त रातै राय संग अभग सब सिरदार है।।५०२।

।। दोहा ।।

दुहु दल भई लषा लषी दुहु दल उमडे सज्ज।
दुहु दल गल गज्जे सुभट दुहु दल पज्जनि बज्ज।।५०३।

।। छन्द त्रभंगी ।।

दुहु दल भट कोपे रन रस बोये चित्त चढि चोपे उमग जगी।
जन प्रलैहि रौपे जम जग लौपे दैत सु तौपे छलग लगी।।५०
गोलन की बरसै झरसी सरसै तडपे दरसै धूम छटा।
माची तरतर की धुनि घरघर की जनु जलधर की घोर घटा।।५०
सुनि तोप तडाभड तुपक धडाधड वीर भडाभड गिरन लगे।
रन रंगनि घुमडे झल सौ झुमडे तह भट उमडे भिरने लगे।।५०
बाजिन कौं झमकै बल लौं बमकै घन सौ घमकै भट रन मैं।
तन त्रान अभंगति पहिरि सु अगति उमडि उमगति भरि मन मैं।।५०
बानन की सकसक आवत तक तक उर मैं धक धक धरत नही।
रन रोसनि छक छक छा उत थकि थकि अगन फकि फकि परत मही।।५०
तोपन की झूकै उठनी हूकै ज्वाल भभूकै इम चमकै।
घन मडल गामिनि लहर ललामिनि दुति भर दामिनि जिमि दमकै।।५०
माच्यौ अरराहट नभ सरराहट घन घहराहट जनु घहरै।
घालै घन लालै जन जजालै तिम उट नालै छबि छहरै।।५१
भव धमाके धमाकिन घुमड धमाकिन झुमड झमाकिन जोति जगै।
छन छलती तुबकै प्यौ भट दुबकै गोलन चुबकै रहत लगै।।५१
तन लगत तमचन डरै न रचनि छोडि प्रपचन पहुमि परै।
बीरन के तीरन लगत सरीरन धरत न पीरन सुभट लरै ५१

रन भुमि प्रकासी दुहु दिस षासी घोर घटा सी रौन सची।
नाचै लषि सकर सुभट जयकर भिरत भयकर मार मची।।५१३।।

।। दोहा ।।

माची मार पमार सह दुहु दिस तोप छलन।
बेला तजि भेला करन जनु जुग जलधि चलत।।५१४।।

।। छन्द हरगीतका ।।

इत श्री नवाब अली बहादुर तेज तर जनि गर्जही।
उत बषतसिह नरेस कौ सजि वीर अर्जुन गर्जही।।५१५।।
आतक षंक त्रसंक रक निसक संकर रूप की।
बर बरनिये बिरदावली हिमत बहादुर भूप की।।५१६।।

।। दोहा ।।

सैन पेसवाई लियो नृप अनूप रनधीर।
मरन .गनि मन आहुसै धनि धनि अर्जुन वीर।।५१७।।
पच सहस पैदर सकल चार हजार सवार।
अग्र बीस तोपै किये उमडिय प्रबल पमार।।५१८।।

इति श्री मन महाराजाधिराज हिमतबहादुर
वीर प्रतापोल्लासे अनूपप्रकासे सामान्य
संग्राम वर्ननं नवमो प्रकास।।६।।

।। दशम प्रकास ।।

।। श्री मानधाता जुद्ध वर्ननं ।।

।। दोहा ।।

जगी छलाई तोप की लगी लराई जोर।
ललकारी निज सैन सब तब नवाब कर सोर।। ५१९ ।।

।। छन्द पद्धरी ।।

श्रीमत पीठ कीन्हैं पछाह।
तिन अगृ सकल सैनाह।।
तिह दक्षिवाह नाइक उमाह।
नरनाह बीर बायै दुबाह।। ५२० ।।
नाइक नरेस सिर मौर तौर।
तिन साथ सकल सिरदार और।।
पाछै नवाब ललकार सैन।
बे कसर पसर करि पिल्यौ ऐंन।। ५२१ ।।
दल अगृ आव भूपत अनूप।
बलवत विजै हित विजै रूप।।
तब कहुँ पमार कौ दलसिबध।
भगि सिमिटि आइ बापै निबध।। ५२२ ।।
निज सैन मद्ध गडबड अपार।
लषि कुप्पि बचन बुल्लिय पमार।।
यह छत्र धर्म रन सुभट षक।
मानत काल हू की न सक।। ५२३ ।।
लरिहैं जे वीर भरि है उमग।
मरिहै जुझार झरि है सुअग।।
धरिहै ति पाइ सुर पुर प्रसंग।
करिहै बिहार परिहै बरग ५२४

जे जुद्ध जित्त जीवत लोग।
जस जुक्र करह ते भुम्म भोग।।
यह अर्थ जुद्ध साधन सप्त।
दुह हथ्थ सिद्ध जग सुजस कथ्थ।।५२५।।

।। छप्प (य) ।।

जे छत्रिय कुल मच्छन्दहु धरि रज्जन सज्जन।
धरहि न लज्जत रज्ज तज्जि लज्जत रन भज्जत।।
ते निज पातक रूप जार जातक प्रगटाव ही।
प्रभु लवन षाइ काइर क्कुर जे रन प्रान चुरावही।।
निज मान कवि कुवर अधम अपकर्म लषावही।
तिन हेत नर्क चौरासी यौ वेद पुरान गनावही।।५२६।।

।। दोहा ।।

मित्र द्रोह कौ घटहि क जात सताप।
स्वाम धर्म तैं विमुख कौ कबहु कटै नहि पाप।।५२७।।

।। छप्पै ।।

हिंदु स्थल दल सहित समिट दष्षिन दल आये।
मम निमत्त चढि इत्र जुगल मालिक्क सिधाये।।
तातै अवइ न अगृ समर अगन उमग धरि।
नट कलान रच रार झार तरवार वार करि।।
यह तन नरेस वषतेस के हेत षेत डारहु सही।
द्रग डाटि पाट दैंहौ सकल काटि रूड मुडन मही।।५२८।।
रख्यौ भरत चित लाइ पाइ जिनकी सु पादुकनि।
त्रनवत मुनि सब तजहिं फंद जिनके अनन्द सनि।।
जिन रज परस पवित्त तुरत गौतमिव तारन।
जिन चरनोदक गंग भुवन त्रैताप उबारन।।
कवि मान मोद मंगल करन जनम सुफल करि लिष्षिहौ
तिह राम चरन असरन सरन आजु द्रगन भरि दिष्षिहौ ५२९

।। दोहा ।।

स्वामी धर्म छत्री धर्म महि भक्त धर्म अवगाह।
यह विधि बचन पमार कहि पसर करन चित्त चाह।।५३०।।
तह साथी हाथीन पै जे सवार ते बोल।
दव निसान आये अधिक उमड अरिन के गोल।।५३१।।

।। छप्प (य) ।।

सुनि पुनि कहै पमार सुभट अर्जुन रिसाइ तब।
भै झलकावहि मोह सैंन दीरघ दिषाइ अब।।
धुज निसनिसान फहराहत बल निसान बजाइब।
कवि मान मान हम जन्म भरि कबहु प्रष्टि दीन्हिवन ही।।
रन भिडहि मुड सह मुंड तज तव सु भट्ट मानत मही।
.... ।।५३२।।

।। दोहा ।।

दष्षिन के अरु हिंदु के सिमटे सुभट समगृ।
मेरे अर्जुनसिंह के कैसे रै है अगृ।।५३३।।
ये बातै कहि रोस करि सो सर हित रनधीर।
पिल्यौ तार की पार तैं हाथी हूलत धीर।।५३४।।

।। छन्द पद्धरी ।।

रन पिल्यौ सिह अर्जुन अमान।
जनु सकुल ब्रंद झपटै सचान।।
लषि मचीथै लइ तवे सुवार।
आला पमार आला पमार।।५३५।।
डगमगत देषि मरहट्ठ गोल।
बढि कढिव भूप सगर अडोल।।
उत पिलि पमार चावंड रूप।
इत पिलिव वीर भूपत अनूप ५३६

॥ छप्पै ॥

नृप निसान के साथ वीर रस मान उमडिय।
पैंच सुभग सिर बाध षौसि कलगी हय मडिय॥
कहिव बत्त करि पैज मत्तमातंग डहाउव।
रचहु गर असरार श्रोन किय सरित बहाउव॥
उद्धरि अनूप भूपति निमिष सब सुख जस निर्मल करहुं।
भिरि समर मार पामार कहि भेद मान अक्षर करहु॥५३७॥

॥ दोहा ॥

उर उमग सब जगहित सब सुषनन्द सवार।
भूप सग सोभित भयौ मनौ महेस कुमार॥५३८॥

॥ छन्द गीतिका ॥

रन षग्ग मग्ग उमग्ग जग्ग अदग्य जग्य सरूप की।
बर बरनियै बिरदावली हिम्मत बहादुर भूप की॥
इत भयो भूप अनूपगिर के अगृ सग निसान के।
बढि मानधाता वीर रस रन धीर हित घमसान के॥५३९॥
सिर पैंच मडि उमंडि कलगी षौंस चड तुरीय ठयौ।
सिरमौर सरन ह्वै हरौल सु कौल सु भटन सौं रढ्यै॥
इत महाराजाधिराज सौं भुव भयो जुद्ध जहाँ जहाँ।
मम तात सबसुषराइ आगै लखि पैठि तहाँ तहाँ॥५४०॥
दल सकल पाछैं लरन पायौ नकस छायौ लोक मै।
तिह भाँत हमहू लरहिगे जस करहिगे इह वोक मैं॥
पामार वीर बडौ सिपाही सान ठहरत आन मैं।
चलि अदूजि आगै पाइ उतही मारनै घमसान मैं॥५४१॥
पामार आयौ पसर करि यह होइ कहिवे कौनही।
हम पै नबायौ पिलन अब तकि दौर अरि कौ कहीं॥
बड मनै वीर बडे पमार जु बैठे हम पर आइहै।
तौ तात सबसुषराइ कौ हमको न मुष दिषराइ है॥५४२॥
यह कौन भट विदित मम नृप रोव रोह प्रभाइ है।
हम बडे राने राव सवाद ये कुल्ल षपाइ है।

अबह डसहन नैया हियौ कहि सेल्ह लैयह पेलिकै।
सामत भाइ भतीज सग रिसाल के निज ठेलि कै।।५४३।।
धसि मानधाता अजब दोऊ भ्रात डोल अडोल मै।
करिव सर अठैत भुज उमठेत भये पैठत गोल मैं।।
रनधीर दूनौ वीरता सौ भरे सोभित साज ही।
जिमि बीच रघुवसिन के जुगराम लछिमन राज ही।।५४४।।

।। दोहा ।।

पैठे जाइ बजाइ जब अर दल मै असबार।
जोग काल को जगमग्यौ लग्यौ छलन हथियार।।५४५।।

।। छेद श्रांवल सुषद ।।

पैठ्यै दुज सवाई सिह। राषी जनवंसी रिंछ।
झार्‍यै सार पै तिहि सार। माची रार यौ असरार।।५४६।।
मुह मुह मार तेग बजाइ। मुह मुह षाइ घाइ अघाइ।
तिल तिल कटिव स्वामि हेत। सुरपुर गयौ करि सिरनेत।।५४७।।

।। दोहा ।।

ब्याह बनी क्वारी अनी गनी घनी की रिंछ।
भेद भान मडल गयौ सुभट सवाई सिंघ।।५४८।।

।। कवित्त ।।

षग्गनि सो षेल सेल्ह ठेलनि उठेल अनी।
कारी बग मेलि ब्याह जायौ जस तोक कौं।।
रोपिकै अभंग पग बोषिकै जगन बंस।
कोपिकै सु लोपिकै पमार कुल योक कौं।।
भनै कवि मान मान संगर प्रयाग तजी।
देह सानुराग मनाग निरमोक कौं।।
सुभट अषंडल अषड षड मंडल।
सौ फौर गौ सवाई सिवलोक कौं।।५४९।।

॥ दोहा ॥

मिलि सार असरार सिर लैन सान मरदान।
पेल पील अर्जुन पिलव जिम बलार बलवान॥५५०
इहा मानधाता पिलिव उत अर्जुन बलवान।
मनहु राम रावन रचिय मचिय घोर घमसान॥५५१

॥ छन्द श्रोन सुषद ॥

उद्धत मचिय जुद्ध तत्र सुद्ध। आयौ उमड अर्जुन सुद्ध॥
इत पठ मानधाता वीर। हरवल भूप को रनधीर॥५
फहरत सुच्छ मच्छ निसान। लीन्हे उमग भौ अगवान॥
सबसुषराइ कौ इत नन्द। उत पामार वीर पिलन्द॥५
दोऊ सुभट रन मजबूत। दोऊ येकसे रजपूत॥
दोऊ जुरे जंग अभंग। जनु जुग सिंध कौ रन रग॥५
दोऊ बर्द से बलवान। नर्दहि मर्द मर्दहि सान॥
दोऊ मत्त से मातग। लिपटे बांकुरे बजरंग॥५
झपट्यै मान अरि को झेलि। दीन्हौ सेल उर मैं पेलि॥
ज्यौं पुनि काठि कुप्पि किरवान। लाग्यौ करन दल कतलान॥५

॥ दोहा ॥

राव कुमार पमार सिर मार तेग झकि झार।
अत्र निषोडि षगोडि दल मंडि घमडिनि रार॥५५७

॥ छन्द॥ त्रभंगी ॥

ह सबसुषनन्द सुभट बिलन्द उमडि अमद समर सच्यौ।
नमुष पग पग्गनि फल सम जग्गनि नट सम षग्गनि षेल षच्यौ॥
ाजिन कौ झकमै बलि सौ बमकै सेल्हन धमकै रूपि रन मै।
ालै तन झमकै तेगन तमकै दामिनि दमकै जन घन मै॥
ोले भट हर हर बाहै भर भर अत्रनि करि करि गर्जि अरै।
.कै भट लरि लरि सेलन झरि झरि कटि सिर ठरि ठरि धरनि परै॥
दै कर ढाले सांग उछालै बल भर घालै कोप सनै।
ग पिछलन चालै छत्रपत पालै उरनि उसालैं अरिन हनै॥
ु पावक लपिटै इक इम झपटै सुभट न चपटै दाबि तरैं
कनि इक झपटै पट से पट्कै नभ मै फटकै अटल मरै

इक हथ्थनि हथ्थनि मथ्थनि मथ्थह बथ्थनि बथ्थह बीर लरै।
इक सेल्ह उठेलनि षेटक पेलनि पंजर पेलनि पेलि परै।।५६०
कटह करक्क्त षग्ग षरक्कत गात गरक्कत वार करै।
छुटि छत्र छलक्कत ज्वाल जलक्कत रोस भरै।।
टपकन टरक्कत ठेलि ठरक्कत भुम्मि ठरक्कत मुंड झरै।
तन त्रान तरक्कत थरह देह दरक्कत दिल न डरै।।५६१
मरदान मरक्कत भय न भरक्कत बचि न परक्कत उभिरि परै।
कटि रुंड फरक्कत जीन सरक्कत कछु न हरक्कत सुर्ग बरै।।
तनु दिव्य उमगनि भरि रस रगनि पिबत वरगनि बीर बरै।
जे जे सफजंगनि कटि अग अंगनि तेग तरंगनि भटन वरै।।५६२
तह सेल्ह धमक्कनि तीर तमक्कनि चपल चमक्कन तेगन की।
रन झार झमक्कन घाउ घमक्कन हुमकि हुमक्कन बेगन की।।
कटि कटि भट टुट्टहि महि पर लुट्टहि प्रान सु छुट्टहि सुर्ग चलै।
लष इमि घमसानै देव विमानै चित्र समानै रहिन हलै।।५६३
दुहु दल हठधारी रचि रन भारी षगन सहारी भीर भरी।
काली किलकारी दै कर तारी संकर तारी उमच परी।।
तिहि कौतुक देषन केलि विसेषनि मोद अलेषनि भाव भले।
नन्दी चढि नन्दी अन्नदी गत भुज चंदी चाह चले।।५६४
भरी करतलनि भूत वितालनि तह पट तालनि जेब जगी।
मिलि प्रेत पिसाचनि लषि रन माचनि जुग्गिन नाचनि नचन लगी।।
धरि मालन सीसन गुहि सीसन संभु असीन देत फिरैं।
रुधिरा ती प्रिय मीसनि षप्पर षीसनि षाग षबीसन षग विभरै।।५६५

।। दोहा ।।

देतय सीस गिरी सतह पहिर सीसमय माल।
डडकारत चंडी फिरत बबकारत बे माल।।५६६।।

।। कवित्त ।।

दैषै वो जऊ मूकै दूर दूकै बीर।
पैठत मरू षैन उबिलत लूकै है।।
डूकै तेज तूलै सुनि सत्रुहि बहूकै मूकै।
चारहू मूह कै उठै चौंकि चित चूकै है।

फूलै टल पूकै अत्र बाहन अचूकै टकै।
टूकै तन होत जगी क्रोध की कमूकै है।।
कूकै रन मान कीकि हूकै हनुमान कीकि।
झूकै कालभान की क्रसान की भभूकै है।।५६७।।

।। दोहा ।।

यह विधि मार पमार मुष घने घाउ तन लीन।
मान मर्द मर्दान कै मान मरद सिर दीन।।५६८।।

।। कवित्त ।।

राई राष राव की सवाई की सवाई राष।
धाई राष धाउन धलाई जस कीन्हो है।।
छत्रपन राष तन राष तरवारन मे।
धर्म मन राष सदा स्वाम हित चीन्हो है।।
प्रीत राष सभु की प्रतीत राष वेदन की।
वीर नीत रीत राष जीत रन लीन्हो है।।
पानिप की बात राष अपनी जुबानि राष।
सान राष मान राख मानसिर दीन्हो है।।५६९।।
राव कल दीपक की सीपत नगाई जाइ।
स्वाम धर्म ताई ऐसी कौने अभिलाषी है।।
चालीस हजार हती सैना अली साहिब कै।
पसर विलोकि युद्ध काहू कीन माषी है।।
है है राज बंडवसो प्रबल पमार ताहि।
मार कर्‌यो षड मारतंड साषी है।।
पेसवा की पंज राषी हिमत बहादुर ने।
हिमत बहादुर की पैज मान राषी है।।५७०।।

इति श्रीमन्महाराजाधिराज हिमत बहादुर वीर प्रतापोल्लासे मान कविन्द्र वाग्वलासे अनूपप्रकासे श्रीमानधाताजुद्ध बर्ननं नाम दसमो प्रकासह।।१०।।

।। एकादश प्रकास ।।

।। अर्जुनसिंह सुरलोक गमन वर्ननं ।।

।। दोहा ।।

समर मानधाता सुभट सुभट दयौ स्वामी हित सीस।
दे असीस गन इस किय मुडन पहिरि गिरीस।।५७१।।

।। छन्द श्रोन सुषद ।।

यहि विधि मच्यौ जुद्ध कराल।
प्रमुदित भूत प्रेत बिताल।।
दीन्हिव मान रन रचि सीस।
गहि गुहि पहिर नाचत ईस।।५७२।।
तह रनधीर भट पुरहूत।
उमड्यै अजबसिंह सपूत।।
सेल्हनि मार तेगन मार।
रन असरार सारनि झार।।५७३।।
पढहार धौकलसिंह।
झपट्यै सत्तु पै जिमि सिंह।।
विरच्यो अत्रनि सिरताज।
तिल तिल कटिव स्वामित काज।।५७४।।
ठाकुरदास वीर पमार।
तेगनि करिव तीषन मार।।
वठि लछिमीन राइ न वीर।
अरि दल चीर यौं रन बीर।।५७५।।
करि हथियार धाइन धाइ।
जग जस जामिनीस जगाइ।।
ठाकुरदास गौर अमान।
रन झुकि झार यौ किरवान।।५७६।।
कर तन टूक टूक प्रमान।
सुरपुर गइव बैठि बिमान

उमडिव बषतसिंह चंदेल।
रन मैं कियन षग्गन षेल।। ५७७ ।।
झपटिव धर्मसिंह सपूत।
रन मैं रचिव अत्र अकूत।।
त्यौं चढिव कासीनाथ जुझार।
झपटिव समाधान कुमार।। ५७८ ।।
सेल्हनि ठेल अरि कौ गोल।
रन मैं लखि वीर अडोल।।
मिरजा यार बेग उमंडि।
अर दल षडि सगर मंडि।। ५७९ ।।
तिन उमराउसिंह झपट्टि।
सैंगर कुँवर लोह लपट्टि।।
उत्रनि बाह अरि दल ठोक।
पहुँच्यौ जूझ संकर लोक।। ५८० ।।
जुलफक्कार षांन नवाब।
दीन्है दुवन दपटसि ताप।।
करि किरवान सुभटन मीस।
दीन्हौ स्वामी के हित सीस।। ५८१ ।।
झपटिव नृप दिलावर जंग।
चुटिकिव तरल तेज तुरंग।।
सेल्हनि पेलिकर अरि भंग।
विरचि रंग की सफजंग।। ५८२ ।।
चल्लत तेग यौं बलवंत।
अरि सिर हनत ज्यौं हनुमंत।।
दपटिव राजगिर हयहेलि।
मेल्हनि दुवन दीन्हैं ठेलि।। ५८३ ।।
अर दल षंडि षग्गनि षेल।
नट सम वाह मटकत मेल।।
झटकत येक को गहि बांह।
पटकत पकर भूतल माह।। ५८४ ।।

मटकत काल यौं धरि प्रान।
फटकत फार तन तन त्रान।।
चटकट राजगिर जह जोर।
सटकत ससकि भट तिह वोर।।५८५।।
अर्जुन आडि लिय लिपटंत।
जिम दसकंध सौं हनुमंत।।
तन घन धाइ धाइ अघाइ।
अरि की उमंग दीन घटाइ।।५८६।।
उत्तिम गिर सु उत्तिम तेज।
दलदल कियव अर दल रेज।।
छन लगि छत्तज छूटत छौन।
उरजन बीर रस सर श्रौनि।।५८७।।
जालिम जलदगिर बरजोर।
हुव घमसान को घनघोर।।
बरस्यौ अभ्रजल मुकि झोर।
स्रोनित सरित चलि चहुं वोर।।५८८।।
हुमसा हुमस हिन्दू पत्त।
सनमुष पिल्यौ रनमुष रत्त।।
बरछी तीर तेगन मार।
भिर भिर पखै भुमि सुमार।।५८९।।
विरच्यौ बेठि बहादुरसिंह।
विरची रुचिर रन की रिंघ।।
नृप अधारसिंह कछवाह।
सेल्हनि ठेलि षेल उछाह।।५९०।।
सैंगर त्यौं जवाहिरसिंह।
अरि मुष भंजि रंजिब रिंघ।।
बठि दिल्लीपसिंह जु गौर।
आयौ उमड भट सिरमौर।।५९१।।
गज सौं गजहिं दीन भिडाइ।
झारी तेग अरि सिर धाइ।।

झारचै सार यौ असरार।
लीन्ही प्रबल पूर पमार।।५९२।।
लषि पामार वीर रिसाइ।
षग्गन दियव गौर गिराइ।।
तब गौर गिरवर घाइल।
गज पै रहौ रूपि कै बलं।।५९३।।

।। दोहा ।।

घन सावथ कटि भूम पट घटित घोर घमसान।
अब पमार दल पर सुभट ते वरनन कवि मान।।५९४।।

।। छन्द पद्धरी ।।

जूझिव सु दिष्य घाइन अघाइ।
कनवज्ज वीर पाजुबराइ।।
कट्टिव पठान छोटेव षान।
कटि तेजसिंह बुदेंल सान।।५९५।।
उमेदसिह दिक्षित सु झूझि।
धरि स्वामि धर्म सुरपुर अरुझि।।
कटि षेतसिह रिछार वंस।
वरियौ ब रग सुरपति प्रसस।।५९६।।
विरसिहदेवजू को भनैज।
बषतेस कट्टि रन पालि पैज।।
देवीयसिघ घेर जूझ।
दुर्जनसिह भानैज बूझ।।५९७।।
कटि कुँवर मानधाता दिषात।
भूपत गुमान कब मात भ्रात।।
कटि महासिंह दो बा जुझार।
जिह रार सार असरार झार।।५९८।।
दैव न ह बार सगर अरूझ।
दरियाउसिह बुदेल जूझ।।
जूझिव दिवान ————
बुदेलवस किय राषि रिष ५९९

जुझिव दिवान जैसिह नन्द।
पामार करन जू कटिव छन्द।।
कटि प्रानसिंह जाल्लिमसिंह।
कट्टि धधेर सिरदारसिंह।।६००।।
उमेदसिह कटि राव वीर।
परवरी बारध धरे धीर।।
जोतषीय जुद्ध जयकर्ति छिप्र।
जुझिव भवान परसाद विप्र।।६०१।।
कटि नृपतिसिंह चौदह जुझार।
कट बर्षतसिंह लहदरावार।।
बरजोरसिह जुझिव षवास।
कटि रामचन्द निसान पास।।६०२।।
नृप बषतसिह रनभिर उमग्गि।
लषि पांउ घाउ भाला सु लग्गि।।
भट प्रथिवसिह दुर षुरिय वार।
तन सेल्ह वो डरन झार सार।।६०३।।
रन राव मानधाता कुमार।
पर चन्द्र हस भैया जुझार।।
जगसिह सून परि प्रानसिह।
चौदह सु वीर रघुनाथसिह।।६०४।।
धौकल्लसिंह चौदह सघाइ।
भोपालसिंह पठिहार राइ।।
साहिब्बसिह दुर्जनहि सिह।
सेगर मुरझि रन रच्चि रिंघ।।६०५।।
विरूनादि बात पूरन्य मल्ल।
रन भिर सु भुम्म परियौ ससल्ल।।
रन भिरव राव भगवतसिह।
बलवतराव बुदेल रिंघ।।६०६।।
धौकलसिह रावत्त राइ।
सूनु रन भिर अघाइ

जुगराजसिंह चौदह जुझार।
पुमानसिंह लादर हवार।। ६०७।।
पाहारसिंह मारे वे वार।
पाहारसिह नौनैं पमार।।
नरिंदसिंह पुनि सरसवार।
प्रथिसिंह कुँवर ऊजूह पार।। ६०८।।
स्वास पुरेस भट इन्द्रजीत।
धौकल्लसिंह मुकुनू अजीत।।
रन भिर अघाइ गरेह संवार।
कर थकत भये भट सार झार।। ६०९।।
अर्जुन भनैज कटि चेतसिंह।
सुरलोक गयव रन रष्षि रिंघ।।
हरिसिंह देव नौनै सु जूझ।
हठसिंह सूनु सुरपुर अरूझ।। ६१०।।
दुर्जनसिंह के सवार।
जूझे सु तीस ठाकुर जुझार।।
इह आदि डेठ सन सूर जूझ।
कटि सुभट भूम पटि विकट सूझ।। ६११।।
परि फौजदार घाइल गनेस।
परियौ सरूप करि समर बेस।।
षुमान वैसे दुज चन्द्रभांन।
मोकमसिंह रावत्त पुमांन।। ६१२।।
परि उरद मऊबरे बिलेद।
झिरि भिम्म सरस भार तिय चन्द।।
धनसिंह कुँवर बाह कर जोर।
परियव बाल पचम किसोर।। ६१३।।
इह परे पंचम चालिस कुमार।
परवे पमार घाइल सुमार।।
लिम परे लाल षुमान वार।
ठाकुर बघेल सत्तर सवार। ६१४।

महि परे वीर घाइल अनेक।
कर सकहि कौन गिन गिन विवेक॥
संग्राम भुमि भीषन दिषाइ।
रचि मुडमाल संकर बनाइ॥६१५।

॥ छन्द हरगीतका ॥

इह भात मार मची भयकर रची संकर माल है।
असखर सारन सार झारि धंधरा झार कराल है॥
बजरंग रंग उमंग मन सफजंग संगर धीर की।
बर बरनियै बिरदावली हिमत बहादुर वीर की॥६१

॥ दोहा ॥

घन घाइल घन सुभट कटि पटि मह बिकट दिषाइ।
तह निसंक गज सिर विलक किलकि किलायैं आइ॥६१

॥ छन्द भीम सुपद ॥

गरजत गज किला पै आइ।
अर्जुनसिंह वीर रिसाइ॥
लपटत झपट सुभटन जाइ।
उदभट दपटि देत गिराइ॥६१८।
भ्रम बिन भिरत अर्जुनसिंह।
बाहत अस्त्र सजर अरिंध॥
चल्लत तेग तीर तमंच।
दहसत जासु दिल नहिं रंच॥६१९
बाहत तेग बेग दबांह।
अनु षिय पंथ हुव भुव मांह॥
अर्जुन सरस अर्जुन वीर।
बरसत बान झार रनधीर॥६२०
तमकत तिमि तमंचन मार।
सेल्हनि ठेलये लिये रार॥
पंजर पेस कब्ज उमट्टि।
भट कट्टार सौं बहु दपट्टि॥६२१

दुहु दिस करत वार दुवाह।
जिम अनुरुद्ध जुद्धनि मांह।।
झपटत फिरत पेलत पील।
जनु प्रजुलत पावक डील।। ६२२।।
क्रुद्धत महिष मत्त सवार।
जम जनु करत जन सहार।।
हूंकत हस्ति हूल पमार।
घाइन जदपि हद्द सु मार।। ६२३।।
घाइल अत्र सत्रुनि सीस।
जोधन सुसत्र डारत पीस।।
संगी सुभट कटि महि पट्ट।
तदिप न सकत कोई डट्ट।। ६२४।।
दलमल दलत दल उवगाह।
इकलत फिरत अत्रनि बाह।।
जिम इक व्रत्त रन रज धार।
सुरपति सैन भलषल डार।। ६२५।।
विक्रम निरषि अर्जुन केर।
चहु दिस अत्र मेलत ठेर।।
तब रिस करिव भूप अनूप।
जाहिर जुद्ध जस कौ जूप।। ६२६।।
झपट्यौ वीर भद्र सरूप।
जुनु रन रुद्र रस कौ रूप।।
कन्हर पग सहव हुमसाइ।
दीन्हेव सेल्ह अरि उर जाइ।। ६२७।।
आवत बिलत पहिरत साग।
जिम चल क्रुद्ध उद्धत नाग।।
गौर दलीपसिंह सु आइ।
गंजिब गरुव सत्रु गिराइ ६२८

घल्यौ षग्ग तब गज इट्टि।
लीन्हिव लपकि अरि सिर कट्टि।।
जूझे सगा भट सत डेठ।
भज्जे अवर काइर रेठ।।६२९।।
लीन्हौ पकरि त्रप रन माह।
नृप बषतेस कौ गहि बाह।।
दावहि सिंह छावहि जाइ।
ज्यौ सुभ सार दूल सु भाइ।।६३०।।
काट्यै समर अर्जुन सीस।
लीन्हौ संग में धरिनीस।।
मानहु मुडि मुडि गिरीस।
षटमुष सहित सोहत ईस।।६३१।।

।। दोहा ।।

षास कलम तह बुद्ध निधि अवध प्रसाद उदार।
अमू अगृ राषी नजर भाषी बिजै अपार।।६३२।।

।। छन्द ।।

बज्जन बिजै बज्जन लाग।
उमग्यौ भूप मन अनुराग।।
पूजिय समर भूमि नरेस।
जिह लष मुदित होत महेस।।६३३।।
दीन्हौ विविध विप्रन दान।
इम नृप जीत कै घमसान।।
आये पुनि नबाब समीप।
लीन्है बषतसिह महीप।।६३४।।
अर्जुन सीस आगे राष।
फत्तै मुबारक सु भाष।।
बुल्लिव बचन भूप अनूप।
औठर ठरन सभु सरूप।।६३५।।

सुनि श्री पेसवा नरनाह।
मथुरा मंडली महिमाह।।
हम सब कियब आप सलूक।
तह हम करिव पैज अचूक।।६३६।।
करि बुंदेलषडहि जप्त।
देहौ सौपि कै सब सप्त।।
अर्जुनसिंह वीर पमार।
ता सिर झारहै रन सार।।६३७।।
सो सब सत्त केसवदेव।
कीन्ही जगत जस की जेव।।
तिह रनधीर कौ कटि सीस।
सोहत रुद्ररस द्रग रीस।।६३८।।
यह बुन्देल भूप ललाम।
हाजिर बषतसिंह सनाम।।
हमकौ अदा कीन्ह गिरीस।
जग जस करवै अपनौ ईस।।६३९।।

।। दोहा ।।

इमि अनूपगिर भूप के सुनि वर बचन बिलंद।
जगरंग अरि भंग लषि उर उमंग आनंद।।६४०।।
अर्जुन कौ सिर कटिवौ दल पुष कटिव सिताब।
प्रीत प्रतीत सु नीतमय बुल्लिव वचन नवाब।।६४१।।

।। छन्द पद्धटी ।।

यह महराज अर्जुन पमार।
रनधीर वीर जालिम जुझार।।
पठई पटैल फौजै दुवेर।
तिन लई जुट्टि रन वे दरेर।।६४२।।
जिह जुरत जुद्ध जीते अनेक।
बिदित जासु रन अभग टेक।।

सो आप मार लिय जुट्टि जग।
पेसवा नाम राष्यौ अभंग।। ६४३।।
सिरदार पादसाही सु आप।
मनसिब्बदार जग जुद्ध थाप।।
राजा सु राव राने अपार।
ते कोप जुद्ध जीते जुझार।। ६४४।।
यह किल कसूर तुव जुद्ध जोग।
जिमि बाज बाजपति बल प्रयोग।।
पेसवहि काज भुव रन सु जुट्ट।
रन लियव आजु अर्जुन सुकुट्ट।। ६४५।।

।। दोहा ।।

कुँवर दुग्ध ही के दसन लरेनु गुध अरि भंज।
आइ सुधाइ अघाइ तन बल दल बल गल गंज।। ६४६।।

।। छप्प (य) ।।

अर्जुनसिंह पमार सुभट संगर पग रुप्पिय।
झपट दिलावर जंग बीर गंगागिर कुप्पिय।।
भिरव भिंम समजाइ रार असरार मचायं।
षाइ घाइ अघाइ षिभिर वल सैनव पाइयं।।
कवि मान कहै घमसान मह सार झार झझट सनिव।
हय पेलि हेलि षग षेल करि अरिउ ठेल सेल्हन हनिव।। ६४७।।

।। दोहा ।।

षाइ बधाइ अघाइ दुवन दप्ट झपट दिलावरजंग।
अर्जुन प्रवल प्रमार सौं करी जोर सफजंग।। ६४८।।

।। छप्प (य) ।।

लरे राम रावन लरे सुरपति व्रत रन।
लरे कर्न अर्जुन लरे भट भिम सुजोधन।।
लरे क्रस्न कासीस लरे अनुमत अक्षह।
लरे त्रलोचन त्रपुर लरे सूकर हिरनक्षह।

कवि मान कहे इम रार रचि सार झार झारन झरिव।
पमार प्रबल अर्जुनसिंह सुभट राजगिर इम लरिव।। ६४९।।

।। कवित्त ।।

राजी राषी रैयत गराजी राषी सैन इत।
राजी राषी षलपैत राजी लीक राषी है।।
पति राषी प्रीत राषी प्रगत प्रतीत राषी।
राजनीत राषी रीत राषी जीत राषी है।।
मान कवि सान राषी रस मैं जुबान राषी।
जरत जहान राषी भूपत की राषी है।।
आन राषी देस की नरेसन की जान राषी।
मान भारी दल कौ हरौली मान राखी है।। ६५०।।

।। दोहा ।।

भुअ पालिक श्रीमंत घर है अब मालिक आप।
जगत अतालिक अरिन कै घालिक जुद्धन थाप।। ६५१।।
नृप नवाब दल दाब इम करत बचन रच्च मान।
नौबत बजत अनन्द जुत पहुँचे डेरन आन।। ६५२।।
भोर भयै भोपल उठि पाल क्रपाल सुभाइ।
विधवत अर्जुनसिह की दाह क्रया सरवाइ।। ६५३।।

।। छप्पय ।।

जिहि जुर नृपति षुमानसिह दल बद्दल मडिव।
जिह मढ्ढौ दल राष फेर पत नाम उमडिव।।
जिह भंगुल दल झपट बैनी गल गंजिव।
छुट्टिट लछिमराव कुट्टिट दक्षिन दल भजिब।।
कवि मान भनय भुव सहस भुज अर्जुन सम अर्जुन सुपिव।
पति अनूप रन ताहि हन परसराम सम जस जपिव।। ६५४।।
भिरव कंन्ह चौहानि भिरव गोइदराज सर।
भिरव सलष्ष पमार भिरव लष्षन बघेलवर।।
भिरव सुभट कैमास भिरव चामडराइ रन।
भिरि निठ्ठुर राठौर भिरव ऊदल उदड मन

जिमि चप चूम चहुवान की मल्लषान भटि कटि गिरव।
इमि अली बहादुर सो बिरचि अर्जुन सम अर्जुन भिरव।। ६५५।।

इति श्री मन्महाराजाधिराज हिमत बहादुर धीर प्रतापोल्लासे श्री मान कविंद वाग्विलासे अनूपप्रकासे अर्जुनसिंह सुरलोक गमनं नाम येकादसो प्रकास संपूर्न।

सिघन भनि घसमसि द्वादसी असित मार्ग गुरवार।
प्रति प्रमान लेखन कियौ लीजौ सुजन सम्हार।।

श्री सीताराम लछिमन जी।
बकलम सकरलाल वकील रियासत वरौड।।
मुकाम छावनी नपामा।

।। इति श्री अनूप प्रकासे प्रथम भाग समाप्तं।।